वेनिस का सौदागर

शेक्सपियर का नाटक

हिंदी: डॉ. रांगेय राघव

मूल्य : दो रुपये
[illegible]
प्रथम संस्करण : जुलाई १९५७
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग, प्रेस, दिल्ली

शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नही था। महारानी ऐलिज़ाबेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्राय. समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओ को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य मे अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्राय. हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे है, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक है—जूलियस सीजर, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु:खान्त); ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड़ (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय: उसके सभी नाटक प्रसिद्ध है।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नही है वह भाषाओ मे कभी नही गिनी जा सकती।

भूमिका

'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' (वेनिस का सौदागर) का विषय शेक्सपियर के पूर्व ही व्यवहृत हो चुका था—इसका पता समसामयिक सूत्रो से भली प्रकार चलता है। इसके कथानक की रूप-रेखा सर जियोवानी फिओरेन्टिनो की इटैलियन पुस्तक 'इल पेकोरोन' से बहुत कुछ साम्य रखती है। उपलब्ध सामग्री से यह ज्ञात होता है कि शेक्सपियर ने अपने इस नाटक की रचना सन् १५९८ से पूर्व की थी। इसकी कथावस्तु भी शेक्सपियर को एक ऐसे देश से प्राप्त हुई जिसका प्रभाव एलिजाबेथ कालीन इगलैण्ड की संस्कृति पर प्रभूत मात्रा मे पड़ा था।

'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' की कथावस्तु नितात रोचक है। वेनिस शहर का एक सुदर और सजीला नौजवान बैसैनियो तीन 'caskets' (जवाहरात और शव की राख रखने वाले बक्सो) को प्राप्त करने के लिये अपना भाग्य अजमाने बेलमोन्ट तक की यात्रा को जाने के लिये उत्सुक है क्योकि इन तीन caskets पर अपना भाग्य आजमा लेने पर ही वह सुन्दरी पोशिया के हृदय को जीत सकने मे समर्थ हो सकता है। बैसैनियो स्वभावतः बड़ा खर्चीला है और अपने धन को पानी की तरह बहाता है अतः जब बेलमोन्ट की यात्रा पर जाने के लिये उसे धन की आवश्यकता पड़ती है तो वह अपने ऐन्टोनियो नाम के एक व्यापारी मित्र से धन उधार मॉंगता है। किन्तु एन्टोनियो का सारा धन व्यापार मे लगा होने के कारण समुद्र पर जहाज मे था, जिससे वह अपने पास से उसे न देकर शाइलॉक नामक

एक यहूदी से तीन हजार स्वर्ण मुद्राएँ कर्ज दिला देता है। कर्ज लेते समय कितना आश्चर्यजनक 'तमस्सुक' (बॉण्ड) भरा जाता है, बेसैनियो को अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे कहाँ तक सफलता प्राप्त होती है और वह कैसे निश्चित समय पर शाइलॉक का कर्ज चुकाने मे असमर्थ रहता है तथा उसका मित्र ऐन्टोनियो किस प्रकार दुर्भाग्य की क्रूर लपेट मे आता है एव इस भयानक परिस्थिति से किस प्रकार पोर्शिया इनकी रक्षा करती है—यही सब 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' मे वर्णित है।

'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' शेक्सपियर के नाटको मे अन्यतम है और अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है।

—रांगेय राघव

पात्र-परिचय

वेनिस का ड्यूक		
मोरक्को का राजकुमार	}	पोर्शिया के प्रेमी
अरागोन का राजकुमार	}	
ऐन्टोनियो		एक व्यापारी
बैसैनियो	:	ऐन्टोनियो का मित्र और
	:	पोर्शिया का प्रेमी
सैलेनियो	}	
सैलैरिनो	}	एन्टोनियो और बैसैनियो का मित्र
ग्रेशियानो	}	
सैलैरियो	}	
लौरेन्ज़ो	:	जैसिका का प्रेमी
शाइलॉक	:	एक धनवान यहूदी
ट्यूबॉल	:	एक यहूदी : शाइलॉक का दोस्त
लॉन्सलौट गोब्बो	:	शाइलॉक का सेवक
वृद्ध गोब्बो	:	लॉन्सलौट का पिता
लियानॉर्डो	:	बैसैनियो का सेवक
स्टाफनो	}	पोर्शिया की सेविकाएँ
बालथाजर	}	

पोर्शिया	:	राजकन्या
नॅरिसा	:	पोर्शिया की अंतरंग सेविका
जैसिका	:	शाइलॉक की पुत्री

[न्यायालय का क्लर्क,वेनिस के रईस, न्यायालय के अफ़सर, बंदीगृह का अध्यक्ष, पोर्शिया के सेवक एवं अन्य दर्शक इत्यादि]

पहला अंक

दृश्य १

[वेनिस-पथ]

[ऐन्टोनियो, सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रवेश]

ऐन्टोनियो : सच कहता हूँ, मै नही जानता, मैं इतना उदास क्यों हूँ। यह उदासी मुझे खाये जा रही है, यहाँ तक कि इससे तुम्हारा मन भी बोझिल होने लगा है। किंतु मै स्वयं नहीं जानता कि आखिर यह है क्या। क्यों घेर लिया है इसने मुझे, क्यों छा गई है यह वेदना मुझ पर ! मै तो जानता भी नही कि अचानक ही इसका उदय कैसे हो गया ! आह ! इस विषाद ने मुझे ऐसी व्यापकता से ग्रस लिया है, मेरी चेतना को ऐसा पराभूत कर दिया है कि मैं तो अपने आपको भी सरलता से पहचान तक नही पाता ?

सैलैरिनो : तुम्हारा मन समुद्र की लहरों के थपेड़े खा रहा है। जहाँ दीर्घ पालों वाले तुम्हारे विशाल जहाज वैभव और गौरव से उन्मत्त तरगों पर चलते हैं मानों वे समुद्र की भव्य यशःकाया हैं जो छोटे जहाजों की सलामियाँ लेते हुए बढ़ते है। उनका उन्नत शीश अपने से छोटो को अकिंचन समझ कर और ऊपर उठ जाता है और वे छोटे पोत अपनी क्षुद्रता मे दीन मन से अपने विनीत पाल फैलाये अभिवादन करते हुए इधर-उधर घूमा करते हैं।

: विश्वास करो, यदि मै तुम्हारे स्थान पर होता, तो ऐसे उत्तुग लहरों वाले प्रचण्ड समुद्र पर अपने ऐसे जहाजों को भेज

सैलेरिनो : मैं तो तब तक रुकता जब तक तुम्हें हँसा न देता, किंतु अब तुम्हारे योग्यतम मित्र आ गये हैं।

ऐन्टोनियो : तुम दोनों का मूल्य मेरे लिये किसी भी रूप में कम नहीं है। मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम्हें इस समय कहीं कोई काम है और तुमने निकल जाने का यह अवसर ढूंढ़ लिया है।

[बैसैनियो, लौरेन्ज़ो और ग्रेशियानो का प्रवेश]

सैलेरिनो : नमस्कार ! श्रीमन्तो ! नमस्कार !

बैसैनियो : आह मेरे अच्छे दोस्तो ! कब आयेगा वह समय जब हम कभी मिलकर आनद मनायेंगे ? इतनी जल्दी हमें छोड़ कर क्यो जा रहे हो ? ऐसा लगता है जैसे तुम तो हमारे लिये बिल्कुल अजनबी होते जा रहे हो ! क्या ऐसा करना उचित है?

सैलेरिनो : फिर कभी तनिक अवकाश मे हम अवश्य उपस्थित होंगे। इस समय क्षमा करना।

[सैलेरिनो और सैलेनियो का प्रस्थान]

लौरेन्ज़ो : प्रिय श्रीमन्त बैसैनियो ! अब तो ऐन्टोनियो आपको मिल ही गये है, तो हम भी जाते है। लेकिन रात को खाते समय··· महरबानी करके भूल न जाना, याद है न आपको कहाँ पहुँचना है ?

बैसैनियो : मै जरूर पहुँच जाऊँगा तुम्हारे यहाँ।

ग्रेशियानो : श्रीमन्त ऐन्टोनियो ! क्या बात है ? तबियत ठीक नहीं है ? लगता है कि दुनियादारी के जंजालों ने बहुत अधिक जकड़ लिया है आपको ! यह याद रखना कि जो सारी चिंता की कीमत देकर इसे खरीदते हैं, वे बाकी सब कुछ खो देते है। विश्वास करना ! बहुत-बहुत बदले हुए दिखाई देते हो।

ऐन्टोनियो : ग्रेशियानो ! मै तो दुनिया को जैसी देखता हूँ न, वैसी

ही स्वीकार कर लेता हूँ। यह संसार एक रगमंच है, जहाँ हर कोई अपने भाग का अभिनय करता है, और यह मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे दुख का भाग प्राप्त हुआ है।

ग्रेशियानो : मैं तो विदूषक बनूंगा। हँसते-खेलते ही बूढा हो जाना चाहता हूँ। आनंद और हास्य ही मेरे चेहरे पर झुर्रियों का ताना-बाना बुनें, न कि चिन्ताएं। मेरे जिगर को शराब की भभक गर्म रखे यही अच्छा है बनिस्बत इसके कि सर्द आहें मेरे दिल को ठंडा कर दे, कराहे मेरी रगों को भिगो दे। ये चीजे तो ज़िंदगी को तबाह कर देती है। एक स्वस्थ युवक जिसकी नसों में स्फूर्ति और शक्ति धड़कती है, उसे ऐसा पीला पड़ जाने का कारण ? जैसे अपने परदादा की संगमर्मर की मूर्त्ति हो; ठडा, निर्जीव ! क्यों न उनमे जीवन गमका करे ? चिड़चिड़ाहट की रफ़्तारों मे आखिर क्यो वह एक दिन पीलिया का शिकार बन कर ही रहे ? सच मानो ऐन्टोनियो ! मै तुमसे प्रेम के नाते ही कहता हूँ कि इस दुनिया मे आदमियों की एक ऐसी किस्म भी है कि उनके चेहरों पर ऐसा स्थिर, जड़ और अपरिवर्त्तनशील भाव बना रहता है जैसे किसी शांत, गतिहीन तालाब के पानी की सतह पर गंदी काई जम जाती हो। वे जान-बूझ कर गंभीर बनते है और चुप बने रहते हैं ताकि उन्हे यह सस्ता यश मिल जाये कि वे बड़े बुद्धिमान है, बड़े गंभीर हं, और उनमें विचारों की बड़ी गहराई है। कभी-कभी बोलकर वे ऐसा खयाल पैदा करने की कोशिश करते हैं जैसे जब वे बोलते है तो कोई पैगम्बर बोलता है, जिसको कोई काटने की हिम्मत न करे और उनकी बात को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाये। लेकिन मेरे ऐन्टोनियो ! ऐसों का यश तो सिर्फ इसी बात पर निर्भर करता

स्वयं अच्छे हो, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं, मेरा धन, मेरी हर तरकीब, तुम्हारी आवश्यकता पूर्ण करने के लिये तत्पर है।

बैसैनियो : अपने स्कूल के दिनों में जब निशाना लगाते वक्त एक तीर चूक जाता था तब मै वैसा ही दूसरा तीर चलाता था, उसी दिशा में, उसी जोर से, और फिर उसे लक्ष्य की ओर जाते देखता था चुपचाप, और अक्सर कर मुझे दोनों ही तीर मिल जाया करते थे। मैने तुम्हें बचपन के अनुभव की बात इसलिये बताई है कि मेरी योजना इस वक्त भी ऐसी ही बचपन की-सी है, बिल्कुल मासूम। वैसे ही मै तुम्हारा काफी कर्जदार हूँ। और एक खर्चीले नौजवान की तरह सब कुछ खर्च कर चुका हूँ। लेकिन अगर तुम चाहो कि उसी दिशा मे दूसरा तीर मारो जिधर पहला मारा था, मुझे इसमे सदेह नही, क्योकि लक्ष्य की ओर मैं देख रहा हूँ, तुम्हारे दोनों तीर तुम्हें मिल जायेंगे। अगर यह नही हुआ तो इस बार की दी हुई रकम तो तुम्हें मिल ही जायगी और रही पहले कर्जे की बात, सो मै उसके लिये कृतज्ञ ही हूँ और सदैव स्मरण रखूँगा।

ऐन्टोनियो : घुमा-फिरा कर बात करके अपना समय नष्ट करने मे तुम्हें क्या मिलेगा? और वह भी तब जब तुम जानते हो कि तुम्हारे प्रति मेरे हृदय में क्या भावनाएँ है। मुझे तो इसका ही दुख है कि तुम इसमे भी सदेह करते हो कि जितना मुझसे बन सकेगा उतना मै तुम्हारे लिये करूँगा। तुम मेरी सारी दौलत लो तो भी मुझे गम न हो। साफ-साफ़ बता दो कि तुम मेरी क्या मदद चाहते हो? मैं तैयार हूँ, जो कर सकता हूँ अवश्य करूँगा। बोलो!

बैसैनियो : बेलमोन्ट में एक स्त्री है जो अपने पिता की मृत्यु के उपरात

एक धनी उत्तराधिकारिणी बनी है। बड़ी अनुपमेय सुंदरी है और वैसे ही उसमें अतुलनीय गुण भी है। कभी-कभी पहले जब मैं उससे मिलता था, उसकी आँखे मुझसे कहती थी मानो उसके हृदय में मेरे लिये कुछ स्थान था। उसका नाम है पोर्शिया और किसी भी तरह केटो की पुत्री पोर्शिया से कम नही, जिसका कि ब्रूटस से विवाह हुआ था। यह भी नही कि संसार में उसके गुणो से लोग अपरिचित ही हों, क्योकि चारों दिशाओं से उसके विवाहेच्छुक प्रेमी आ रहे हैं। उसकी सुनहली लटें उसके कानो के पास झूला करती है। बेलमोन्ट मे उसका निवास-स्थान दूसरा कोलचोस[1] समुद्र-तीर हो गया है जहाँ आधुनिक जेसन[2] इकट्ठे हुआ करते हैं उसके लिये। प्रिय ऐन्टोनियो! काश मैं भी उनमे से किसी से स्पर्धा करने के योग्य हो जाता! न जाने क्यो मुझे विश्वास-सा होता है कि मै अवश्य सफल होऊँगा, निस्सदेह मुझे सफलता मिलेगी।

ऐन्टोनियो: तुम तो जानते ही हो कि इस समय मेरा सारा धन जहाज़ों मे गया हुआ है। अब इस वक्त न मेरे पास धन है, न कोई माला ही कि इतना धन इकट्ठा कर सकूँ। लिहाज़ा, चलो, वेनिस मे मेरे नाम की साख जो उठा सके उसीको काम में लाया जाये। जितना भी वह कर सके, मुझे स्वीकृत है, ताकि तुम सुदरी पोर्शिया के पास बेलमोन्ट पहुँच सको। शीघ्र जाकर तलाश करो और मै भी जाता हूँ कि धन है किसके पास! और उसे चुका देने का निश्चय रखो; मैं धन एकत्र कर लूँगा चाहे लोगों से अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों के बल पर या उधार पर ही सही।

[प्रस्थान]

१. क्लासिक नाम। २ जेसन—प्रेमी।

दृश्य २

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के भवन में एक कमरा]

पोर्शिया : मैं तो इस संसार से तंग आ गई हूँ, नैरिसा !

नैरिसा : क्यों श्रीमती ! यदि आप दरिद्र होतीं, अभागिनी होती, या जैसा भाग्य और संपत्ति आपके पास है वैसे की अधिकारिणी न होती तब तो आपका तंग आना किसी सीमा तक उचित भी लगता। लेकिन जहाँ तक मेरा अनुभव है, मैं यही कह सकती हूँ कि अपार धनराशि में डूबे लोग भी उतने ही जीवन के प्रति ऊबे होते हैं जितने वे, जिनके पास कुछ भी नहीं होता, न भुखमरी, न अटूट धन। मुझे तो लगता है, इन दोनों के बीच की स्थिति ही ठीक रहती है। जिनके पास बहुत धन होता है वे बहुत-से व्यसनों में पड़ जाते हैं और समय से पूर्व ही बूढ़े हो जाते हैं, लेकिन जिनके पास इतना भर होता है कि बस रोज की जरूरतें पूरी होती रहें, वे न सिर्फ ज्यादा दिन जीते हैं, मगर सुखी भी रहते हैं।

पोर्शिया : कितनी अच्छी बात कहती है तू। और कितने प्यारे ढंग से।

नैरिसा : और जो इन्हें व्यवहार में ले आया जाये तो कितनी सुंदर बन जायेगी यही !

पोर्शिया : अगर करना भी उतना ही आसान होता जितना किसी अच्छी बात को जान लेना, तो गरीबों की कुटियों में महल होते और हर उपासना-स्थान गिरजा बन जाता। अपने ही उपदेशों को व्यवहार में लाने वाला वास्तविक रूप से धार्मिक होता है। मैं बीसियों को बता सकती हूँ कि अच्छा क्या है, लेकिन उस पर अमल करते समय उन बीस में से एक स्वयं नहीं हो सकती। विवेक नियम बना सकता है कि यौवन के आवेश और वासनाएँ

नियंत्रण में रह सके किंतु यौवन की उत्तेजनाएं संयम में रखने के लिये दबा देने के लिये बहुत उग्र होती है। पगली जवानी उस पागल खरगोश की तरह होती है जो कि सदुपदेश के निर्बल जाल से शीघ्र भाग निकलता है। लेकिन इस तर्क से मुझे अपना पति चुनने मे क्या लाभ मिलता है ? चुनना ! हाय कैसा शब्द है ! न मै पसंद का व्यक्ति चुन सकती हूं, न नापसंद व्यक्ति से इंकार ही कर सकती हूँ। ऐसी ही तो है एक मृत पिता की वसीयत जो एक जीवित लडकी को सब तरफ से जकड़े हुए है! क्या यह मेरे लिये कठोर बात नही है नैरिसा! कि जिसे चाहती हूँ उसे पा नही सकती और जिसे नही चाहती, उससे इंकार नही कर सकती ?

नैरिसा : तुम्हारे पिता पवित्रात्मा थे और पवित्र व्यक्ति मरते समय सदैव ऐसे ही प्रेरणादायक कार्य्य करते है। इसलिये जो इन तीन— सोने, चाँदी और राँग के डिब्बो की लॉटरी उन्होने रखी है, कि जो भी ठीक डिब्बा चुन लेगा, तुम्हे पायेगा, निस्सदेह, वही ठीक चुनाव कर सकेगा जो तुम्हे सच्चा प्यार करता है। सच बताओ, तुम्हारे मन में इन विवाहेच्छुक कुलीन राजकुमारो के प्रति क्या है, जो आ गये है !

पोर्शिया : एक-एक नाम दुहराती चल और मैं कहती चलूंगी, बस उसी से मेरे मन की बात का अनुमान लगा लेना।

नैरिसा : सबसे पहले तो नेपल्स के राजकुमार है।

पोर्शिया : वह तो घोड़ा है, जो अपने घोड़े के सिवाय और किसी विषय पर बात ही नही करता। और इसमे तो अपनी खास क़ाबलियत समझता है कि वह खुद ही घोड़े की नाल भी ठीक लेता है।

नैरिसा : और वह है, वह पैलैटाइन का काउन्ट !

पोर्शिया : वह बस गुर्राया करता है, जैसे पूछ रहा हो—मुझे नही चुनेगी तो जा मर ! वह तो इतना मनहूस और उदास रहता है कि उसके चेहरे पर बड़े से बड़े मजाक की बात मजाल है एक हल्की मुस्कान भी झलका दे ! और जब जवानी मे वह इतना उदास और गंभीर है तो भगवान जाने बुढापे में तो वह हेराक्लिटस—वह था न, 'रोने वाला दार्शनिक', वैसा ही निराशावादी हो जायेगा। मैं तो बेहतर हैं खुशी से एक ऐसे हड्डी के ढांचे से शादी कर लूंगी, जिसके मुंह पर होंठ ही न हो, बनिस्बत इसके कि इन दोनों में से किसी से शादी करूँ। भगवान बचाये मुझे इन दोनों भलेमानुसों से।

नैरिसा : और फ्रेन्च लॉर्ड मुसिये ले बॉन के विषय में तुम्हारी क्या राय है ?

पोर्शिया : उसे भी ईश्वर ने बनाया है, तो उसे भी मनुष्य ही समझना चाहिये। सचमुच ईश्वर की सृष्टि का उपहास करना तो एक पाप है, किंतु यह फ्रेंच लॉर्ड तो अपने घोड़े के बारे में नेपल्स के राजकुमार से कही अधिक बाते करता है और त्यौरी चढ़ाये रखने में तो पैलैटाइन का काउन्ट उसके सामने कुछ है ही नही। वह तो सर्वगुणसपन्न होने का ऐसा दावा करता है, जब कि उसे तो आदमी कहने में भी संकोच होता है। एक चिड़िया जरा चहकी कि वह तो नाचने लगता है। उससे अगर मैंने शादी कर ली तो समझो मैंने बीस मर्दों से ब्याह किया, क्योंकि वह तो अपने को बीस मर्दों के बराबर समझता है। मै तो ज्यादा खुश इस बात से होऊँ कि वह मुझसे घृणा करे, क्योंकि जो कहीं वह पूरे आवेश से प्रेम करने लगा, तो उसके प्रेम का प्रत्युत्तर में दूंगी कैसे, क्योकि आखिर क्या मै बीस आदमियों से

एक साथ प्रेम कर सकूंगी ?

नैरिसा : और तुम्हारा उस तरुण अगरेज बैरन फॉल्कन ब्रिज के बारे मे क्या विचार है ?

पोर्शिया : मैं तो उसके बारे मे कुछ भी नही कह सकती, क्योंकि हम एक दूसरे की भाषा ही नही समझते। न वह लैटिन जानता है, न फ्रेञ्च, न इटैलियन और इस बात को तुम हजारों के सामने दावे के साथ कह सकती हो कि मै अगरेजी नही के बराबर जानती हूं। है वह बड़ा सुदर, लेकिन मै कैसे स्वीकार कर लू उसे ? हम एक दूसरे को अपने भाव ही नही बता सकेगें। कितनी भी सुंदर तस्वीर क्यो न हो, लेंकिन उससे कोई बोलता तो नही ? और उसकी पोशाक कितनी विचित्र है। उसका कोट तो इटैलियन फ़ैशन का, ब्रीचेस फ्रेञ्च कट है और उसका टोप है जर्मन ढग का और रहे उसके आचार-व्यवहार तो सारी दुनिया का घोल उतर आया है उसमें।

नैरिसा : और वह जो स्कॉट लॉर्ड हैन, जो अंगरेज बैरन का पड़ोसी है, उसके बारें में क्या राय है तुम्हारी ?

पोर्शिया : उसमे एक पड़ोसी की दयानतदारी है, क्योंकि उसने अपनी कनपटी पर अगरेज के हाथ का घूंसा उधार लिया और उसने कसम खाई कि जब कभी वह समर्थ होगा अवश्य उसका कर्जा चुका देगा। मेरा ख़याल ऐसा है कि वह फ्रेंच उसकी ज़मानत मे खड़ा रहा जिसने कहा कि अगर वह कर्जा चुकायेगा तो उसकी मदद अवश्य की जायेगी।

नैरिसा : सैक्सनी के ड्यूक के भतीजे उस तरुण जर्मन के विषय में तुम क्या सोचती हो ?

पोर्शिया : सुबह तो वह बुरा लगता है जब नशे मे नही होता, और

दुपहर बाद जब पिये रहता है तब तो बहुत ही बुरा लगता है। जब वह अच्छी से अच्छी हालत मे रहता है तब वह किसी भी इंसान से नीचा और जब वह बुरी से बुरी हालत मे रहता है तब किसी भी पशु से तनिक ऊँचा होता है। यदि बुरे से बुरा भी हो जाये, मैं तो उसे कभी नही चुनूँगी। उसके बिना ही मै अच्छी हूँ।

नैरिसा : अच्छा मान लो, वह तुम्हारा विवाहेच्छुक है और किस्मत का ज़ोर कि उसने ठीक डिब्बा चुन लिया तब अगर तुमने उससे शादी करने से इकार कर दिया तो क्या तुम अपने पिता की वसीयत मानने से इंकार नहीं करती हो ?

पोर्शिया : इसीलिये तो डर से मरी जाती हूँ। एक काम करो न ! गलत डिब्बे पर तेज फ्रेञ्च शराब रख दो ताकि मै इस विपत्ति से बच जाऊँ। मुझे यक़ीन है कि वह शराब के लालच में ग़लत डिब्बा ही चुन लेगा चाहे उसमे भीतर शैतान ही क्यों न हो। मै कुछ भी कर सकती हूँ नैरिसा, पर उस जबर्दस्त पियक्कड़ से शादी नही करूँगी।

नैरिसा : श्रीमती ! तुम्हे डरने का कोई कारण नही है कि इनमें से एक को चुनना पड़ेगा। उन्होंने मुझसे साफ़ कह दिया है कि वे अपने-अपने घरो को लौट रहे हैं और अब वे आपको इस चुनाव के पचड़े से परेशान नहीं करेंगे, तब तक जब तक कि वे आपके पिता की वसीयत में लिखे इस डिब्बे चुनने के तरीके के अलावा और कोई रास्ता नहीं खोज लेते जिससे वे आपको हासिल कर सकें।

पोर्शिया : पिता की वसीयत के अलावा मैं और कौन-सी तरकीब से शादी कर सकती हूँ। मै तो डायना की भाँति क्वारी बनी रहने

को विवश हूँ, चाहे सिबिला की भाँति मै दीर्घायु ही क्यों न होऊँ। मैं यह देखकर बहुत खुश हूँ कि प्रेमियों का यह दल अक्लमद है और कायदे से लौटा जा रहा है। उनमे से कोई भी नही है जिसका जाना मुझे नापसद हो। मै ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी यात्राएँ सफल हों।

नैरिसा : श्रीमती ! क्या तुम्हे उस सुंदर वेनिसवासी की याद है जो तुम्हारे पिता के समय मे मॉत्फ़ेरात के मार्क्विस के साथ आता था, योद्धा था और साथ ही विद्वान भी !

पोर्शिया : हाँ, हाँ। वह तो मेरे खयाल से बैसैनियो था। यही था न उसका नाम ?

नैरिसा : हाँ श्रीमती ! मैं मूरख जितना समझती-देखती हूँ, सारे आदमियो में जो आपने देखे है, वही आपके योग्य था।

पोर्शिया : मुझे उसकी खूब याद है और वह था भी ऐसा ही जैसी कि तू तारीफ़ करती है।

[सेवक का प्रवेश]

क्यो ? क्या बात है ?

सेवक : चार अजनबी आपसे मिलना चाहते है श्रीमती। वे विदा ले रहे है और जाने से पहले आपसे मिल जाना चाहते है। एक और व्यक्ति आया है, जिसने खबर दी है कि उसके स्वामी मोरक्को के राजकुमार आज रात यहाँ आयेगे।

पोर्शिया : मुझे तो उसके आने की तब प्रसन्नता होगी जो मै उसका वैसा ही स्वागत कर पाती जैसे उत्साह से मैं इन चार को बिदा दे रही हूँ। अगर उसका रंग शैतान का है और आत्मा एक सत की-सी है, तो वह मेरा पति न होकर पुरोहित हो जाये वही अच्छा होगा। चलो, नैरिसा ! (सेवक से) तू आगे चल।

एक प्रेमी के लिये द्वार बंद करते है हम, दूसरा तभी दरवाजे पर दस्तक देने लगता है।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वेनिस : एक सार्वजनिक स्थान]

[बैसैनियो और शाइलॉक का प्रवेश]

शाइलॉक : तीन हज़ार ड्यूकैट ! तीन हज़ार सिक्के ? अच्छा।

बैसैनियो : हाँ श्रीमान् ! केवल तीन मास के लिये।

शाइलॉक : हूँ ? तीन महीने के लिये ? अच्छा।

बैसैनियो : और मै आपसे कह चुका हूँ, ऐन्टोनियो मेरी ज़मानत देगा।

शाइलॉक : ऐन्टोनियो ज़मानत देगा ? अच्छा !

बैसैनियो : बताइये आप मेरी मदद करेगे ? क्या आप मुझ पर यह उपकार करेंगे ? बताइये न ?

शाइलॉक : तीन हज़ार सिक्के ! तीन महीनों के लिये और ऐन्टोनियो की ज़मानत पर !

बैसैनियो : आपका क्या उत्तर है ?

शाइलॉक : ऐन्टोनियो आदमी तो अच्छा है।

बैसैनियो : क्या आपने उसके यश के विरुद्ध भी सुना है जो उसे कलंकित कर सके ?

शाइलॉक : अरे नही-नही, ऐसा नही है। मैं जब उसे अच्छा आदमी कहता हूँ तो तुम्हें सिर्फ़ यही समझना चाहिये मै उसे पूरी तरह से इस काबिल मानता हूँ। लेकिन फिर भी उसकी संपत्ति स्थिर नहीं है। उसका धनी होना अभी तो एक अनुमान की बात है।

उसका एक जहाज त्रिपोली जा रहा है, दूसरा इन्डीज़ की ओर चल रहा है, और मुझे सट्टे की दूकान से पता चला है कि उसका तीसरा जहाज़ मैक्सिको जायेगा, चौथा इंगलेंड को। इसी तरह उसके सारे जहाज़ दुनिया मे अलग-अलग समुद्रों मे जा रहे हैं। लेकिन जहाज़ तो काठ के वने होते है, और उन पर समुद्र मे हर तरह का खतरा आ सकता है। और जहाज़ी सिर्फ इंसान ही तो होते हैं जो समुद्र के भीषण तूफानों मे मर सकते हैं। और फिर समुद्र में तो डाकुओं से भी बड़ा डर रहता है, कि जैसे धरती पर वे लूटते हैं। अलावा इसके जहाजों को तो समुद्र पर अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ता है, तूफान है, लहरे है, चट्टाने है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, बावजूद इन सबके ऐन्टोनियो ज़ामिन वनने के पूरी तरह से योग्य है। तीन हजार ड्यूकेट चाहते हो तुम ! ठीक है। मैं मान लूंगा अगर वह ज़िम्मेदारी उठा लेगा।

बैसैनियो : उस तरफ़ से आप बेफ़िक्र रहिये।

शाइलॉक : तुम कहते हो तो मै निश्चित हो जाऊँगा। लेकिन मेरी दिलजमई होनी चाहिये और यही उचित होगा कि मै ऐन्टोनियो से इस बारे मे बातचीत कर लूं सीधी।

बैसैनियो : बिल्कुल ठीक है। आप आज हमारे साथ ही भोजन करिये न ?

शाइलॉक : जरूर ! ताकि मैं सूहर के मांस * को सूंघ सकूं, जिसमें तुम्हारे पैगम्बर ईसामसीह ने शैतान की रूह को घुसाया है। मैं तुम्हारे साथ खरीद सकता हूँ, बेच सकता हूँ, चल सकता हूँ, बात कर सकता हूँ, और सब कुछ कर सकता हूँ, लेकिन तुम्हारे

*यहूदी भी मुसलमानो की भाँति 'सूहर के माँस को वर्जित समझते हैं। असल में सेमेटिक जातियों में सूहर टैबू ही मिलता है।

साथ खा नही सकता, पी नहीं सकता, न तुम्हारे साथ प्रार्थना कर सकता हूँ। सट्टे की दूकान से क्या कोई ख़बर मिली है कभी ? वह कौन आ रहा है ?

[एन्टोनियो का प्रवेश]

बैसैनियो : ये तो श्रीमन्त एन्टोनियो है।

शाइलॉक : (स्वगत) कितना भोला-भाला सीधा-सादा लगता है ? लेकिन मै इससे घृणा करता हूँ, क्योंकि यह ईसाई है। लेकिन मुझे इससे भी ज्यादा इससे घृणा इसलिये है कि यह अपनी नम्रतारूपी मूर्खता के कारण बिना ब्याज के ही रुपया उधार देता है, और वेनिस मे हमारे ब्याज की दर को यों ही गिरा देता है। एक बार अगर यह मेरी पकड़ मे आ गये तो मै इससे अपने पुराने बैर का सारा बदला निकाल लूं, जो न जाने कब से मेरे दिल मे पल रहा है ! यह हमारे पवित्र धर्म (यहूदी धर्म) से घृणा करता है, हमारी पवित्र जाति से घृणा करता है। * और मुझे तो जब भी कही सारे व्यापारी इकट्ठे होते हैं, सबके सामने ही डांट देता है। यह मेरे व्यापार की निंदा करता है और ईमानदारी से अर्पित मेरी कमाई, मेरे मुनाफों को ब्याज की और पाप की कमाई कहा करता है। अगर मै इसे क्षमा कर दूं तो ईश्वर का प्रकोप मेरी जाति पर उतरे !

बैसैनियो : आप इतने चुप क्यों है शाइलॉक ?

शाइलॉक : मैं अपने पास इस वक्त मौजूद धन का मन ही मन हिसाब लगा रहा था। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस वक्त मै ऐसी हालत में नही हूँ कि तुम्हे एकदम तीन हज़ार सिक्के दे सकूं। लेकिन

* यहूदी अपनी जाति को ईश्वर की चुनी हुई जाति मानते है, और अपने को ससार में सर्वश्रेष्ठ मानते है।

इससे क्या फर्क पड़ता है ! मेरा धनी यहूदी मित्र ट्यूवॉल मौजूद है। उससे मैं सारी कमी को पूरा कर सकता हूँ, लेकिन ज़रा ठहरो! तुम्हे कितने महीनों के लिये रुपये चाहियें ? (ऐन्टोनियो से) कहिये श्रीमान् ! अच्छे तो है ! अभी-अभी हम लोग आप ही के बारे मे बातें कर रहे हैं।

ऐन्टोनियो : शाइलॉक ! हालांकि मेरा यह सिद्धांत रहा है कि मैं न रुपया उधार लेता हूँ, न ब्याज पर देता हूँ, लेकिन अपने दोस्त की गहरी जरूरत को पूरा करने के लिये, मैं एक अपना नियम तोड़ता हूँ। (बैसैनियो से) क्या तुमने इनसे कह दिया है ? कितने की ज़रूरत है तुम्हे ?

शाइलॉक : हाँ-हाँ, तीन हज़ार ड्यूकैट !

ऐन्टोनियो : और सिर्फ तीन महीनों के लिये।

शाइलॉक : हाँ तीन महीने ! मैं भूल गया। तुमने कहा तो था। ठीक है। तुम ज़मानत दो। मैं कोशिश करता हूँ, लेकिन सुनो। लेकिन तुमने कहा कि तुम न ब्याज पर उधार लेते हो, न देते हो!

ऐन्टोनियो : हाँ, मै ऐसा ही करता हूँ।

शाइलॉक : हमारे आदि पुरुष अब्राहम का वशज जेकब अपने चाचा लेबान की भेड़े चराया करता था और यद्यपि अब्राहम के उत्तराधिकार का स्वत्व क्रम से पहले उसके पुत्र इसाक और तब इसाक के ज्येष्ठ पुत्र इसाऊ को मिलना चाहिये था, वह उसके छोटे पुत्र जेकब को मिला क्योकि उसकी माता ने ऐसी चतुराई की कि इसाऊ का स्थान जेकब ने ले लिया……

ऐन्टोनियो : जेकब की बात क्यों करते हो ? क्या वे भी सूद लिया करते थे ?

शाइलॉक : नही, वे सूद नहीं लेते थे, ऐसा सूद नही लेते थे जिसे

आजकल सूद कहा जाता है। लेकिन देखो न, जेकब ने क्या किया! उसने अपने चाचा लेवान से यह तय किया कि वह जो लेवान की भेड़ों को चराता है, उनकी देखभाल करता है, उसकी मेहनत के बदले में वह लेबान की भेड़ों के उन सब बच्चो को ले लेगा जिन पर धब्बे होंगे, धारियाँ होंगी। जेकब की चतुरता से अधिकतर बच्चे धारियों और धब्बो वाले पैदा हुए। इस तरीके से उसे अपने हिस्से से कही ज्यादा भेड़े मिल गई और आगे चलकर वह बहुत समृद्ध हुआ और उसे परमात्मा ने आशीर्वाद भी दिया। इसे तो परमात्मा का आशीर्वाद ही समझना चाहिये यदि दूसरों का माल चुराये बिना ही आदमी ईमानदारी से मुनाफा कमा सके।

ऐन्टोनियो : जेकब के मामले मे तो कुछ किस्मत का ज़ोर ही समझना चाहिये। वैसे जेकब का धारीदार, धब्बेदार बच्चे होने मे न कोई ज़ोर था, न उसका इसमें कुछ हाथ ही हो सकता था। कुछ भगवान की ऐसी मर्ज़ी थी और ऐसा हो गया। लेकिन धर्मग्रथ का हवाला इसलिये दिया है, ब्याज लेने को अच्छा साबित कर सको? या तुम्हारा सोना-चांदी भी भेड़-बकरियों की तरह है?

शाइलॉक : क्या बताऊँ। मै तो कोशिश यही करता हूँ कि यह भी दिन दूना रात चौगुना बढता जाये। लेकिन मेरी बात सुनो।

ऐन्टोनियो : देखो बैसैनियो! देखते हो न कि अपने लाभ के लिये शैतान भी धर्मग्रथो में से उद्धरण देता है? एक कुटिल व्यक्ति यदि पवित्र बाइबिल मे से साक्ष्य उपस्थित करे तो वह उस नीच की भाँति है जो हँसता रहता है और भीतर ही भीतर भयानक होता है। ऊपर से साफ़, चिकना, सुन्दर सेब और

भीतर से सड़ा-गला। हाय-हाय! बुराई भी ऊपर से कितनी खूबसूरत बनकर आती है!

शाइलॉक : तीन हज़ार ड्यूकैट! यह तो बहुत बड़ी रकम है। बारह मे से तीन महीनों के लिये? ठहरो, मुझे सूद की दर जोड़ने दो!

ऐन्टोनियो : शाइलॉक! क्या तुम यह रकम दोगे?

शाइलॉक : श्रीमन्त ऐन्टोनियो! तुमने बहुत बार सट्टे की दुकान में मेरा अपमान किया है कि मै सूद लेता हूँ, बेईमानी करता हूँ। लेकिन मैने धैर्य्य से सारे अपमानों को सहन किया है क्योंकि सहनशक्ति ही हमारी यहूदी जाति की एक विशेषता है। तुम मुझे ईसाई धर्म नही मानने के कारण यहूदी जानकर विधर्मी कह चुके हो, तुमने मुझे कटखना कुत्ता कहा है, तुमने मेरे यहूदी धर्म की परम्परा को प्रदर्शित करनेवाले चोगे पर थूका है। और क्यो? सिर्फ इसलिये कि मैने अपना धन कमाया है। और अब तुम्हे मेरी मदद की जरूरत आ पड़ी है। तो लो! देखो! आज तुम आये हो। आकर कहते हो—शाइलॉक! हमें धन चाहिये। तुमने तो मेरे मुँह पर थूका था! तुम्हारी नजर मे तो मैं सड़क के दोगले कुत्ते से भी गया-बीता था न, जिसमें लात लगाने को तुम्हारा पांव मचला करता था? आज तुम धन की प्रार्थना कर रहे हो? क्या जवाब दूँ मै तुम्हें? बोलो कह दूँ—कि क्या कुत्ते के पास धन होता है? क्या कभी यह हो सकता है कि एक कुत्ता ३००० ड्यूकैट उधार दे सके? या कहो, नीचे झुक जाऊँ और गुलाम की तरह घिघियाता, कांपता, दीन मन, हांफता हुआ कहूँ—श्रीमान्! आपने पहले बुधवार को मुझ पर थूका था, आपने उस रोज़ मुझे दोगला कुत्ता जानकर मुझमे लात दी थी, और एक और दिन आपने

मुझे कुत्ता कहा था। आपकी इन्ही तीन मेहरबानियों के बदले में मै आपको ३००० सिक्के उधार देना चाहता हूँ !

ऐन्टोनियो : मै तो ऐसे ही फिर भी कहूँगा, फिर भी तुम पर थूकूंगा, और लात भी लगाऊँगा। अगर तुम उधार देते हो तो, अपना दोस्त समझकर क्यों देते हो ? क्योंकि दोस्ताने में बेजान सिक्के कब ब्याज के रास्ते से सिक्कों को पैदा करते है ? यों समझो कि अपने दुश्मन को उधार दे रहे हो ! बिना किसी शर्म के तुम मुझे सज़ा दिला लेना अगर तुम्हारा धन ठीक समय पर नही लौटा !

शाइलॉक : लेकिन तुम बेवजह इतना ताव क्यों दिखा रहे हो ? मै तो तुम्हारा दोस्त बनना चाहता हूँ और जो मेरा अपमान तुमने किया है, उस सबको भूल जाना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे माँगे हुए धन को दूंगा, और कोई ब्याज भी नही लूंगा। लेकिन तुम मेरी बात ही नही सुनते ! मेरी यह बात बिल्कुल दया-भरी है। है न ?

बैसैनियो : अगर तुम सत्य कहते हो तो इसे निश्चय ही दया कहा जा सकता है !

शाइलॉक : मेरी यह दया तो निश्चित समझो। तुम एक वकील के पास चलो और एक कागज लिख कर उस पर दस्तखत कर दो। लेकिन महज मजाक की ख़ातिर उसमे एक बात जोड़ देना कि अगर तुम निश्चित दिन पर रुपया न दे सके, निश्चित स्थान पर तुमने धन न चुकाया, तो मुझे यह अधिकार हो जायेगा कि तुम्हारे शरीर मे से कही से भी मुझे आधा सेर गोश्त काट कर निकाल लेने का अधिकार होगा !

ऐन्टोनियो : मैं तैयार हूँ इस शर्त्तनामे पर दस्तखत करने को और

मै खुले आम कह सकता हूँ कि आखिर तुमने कमाल की रहमदिली दिखाई है।

बैसैनियो : ऐसे खतरनाक शर्त्तनामे पर मैं तुम्हे कभी दस्तखत नहीं करने दूंगा। इससे तो अच्छा है कि मेरे काम ही बिगड़ जाये। मेरी ज़रूरत ही पूरी न हो।

ऐन्टोनियो : अरे डरते क्यों हो ? मै दण्ड नही भरूंगा। जो कर्ज मै ले रहा हूँ उससे कई गुना धन मेरे जहाज़ दो महीनों मे ही ले आयेगे। म्याद से एक महीने पहले ही देख लेना।

शाइलॉक : हे पवित्र आदि पूर्वज अब्राहम ! यह ईसाई भी विचित्र होते है ! यह दूसरों के प्रति इतने कठोर और निर्दय होते हैं कि दूसरों को भी अपना जैसा ही समझते है। अच्छा ज़रा बताओ तो सही ! अगर इसने ठीक समय पर धन नही लौटाया तो मै उस गोश्त को लेकर करूंगा क्या ? इंसान के जिस्म से आधा सेर गोश्त न तो कोई कीमत ही रखता है, न फायदेमन्द ही है। वह कोई भेड़,गाय या बकरी के गोश्त की तरह अपनी क़ीमत तो रखता नहीं। मैं तो इनकी स्नेहभरी मित्रता को जीतने के लिये ऐसा करता हूँ। मेरा हाथ बढ़ा हुआ है। थामना है थाम लो, नही तो जाने दो। कृपया, मेरा अनिष्ट नहो करो कि मुझ पर, मेरी हितचिंता पर संदेह करो।

ऐन्टोनियो : हाँ शाइलॉक ! मै इस शर्त्तनामे पर ज़रूर दस्तखत कर दूंगा।

शाइलॉक : तो फिर मुझसे वकील के घर मिलो। इस मजाकिया शर्त्तनामे को उसे बता देना और मै धन-वन लेकर सीधा वहीं पहुँचता हूँ। देख तो लूँ कि मेरा घर सही-सलामत भी है या नही, क्योंकि वहाँ एक बेकार का बदमाश है, जिसका ज़रा

भी यकीन नहीं किया जा सकता। बस ! मै तुरत पहुँचता हूँ।

ऐन्टोनियो : ओ दयालु यहूदी ! जल्दी करना।

[शाइलॉक का प्रस्थान]

यह यहूदी तो ईसाई हो जायगा, देखो न ? इसमे कितनी दया आ गई है ?

बैसैनियो : जब मैं किसी कुटिल व्यक्ति से मीठे वचन सुनता हूँ तो मुझे बहुत सदेह होने लगता है।

ऐन्टोनियो : चलो, वकील के यहाँ चलें। इस मामले में डरने की कोई गुंजायश नही है। म्याद से एक महीने पहले ही मेरे जहाज़ लौट आयेंगे।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के मकान का कमरा]

[तुरही-निनाद। मोरक्को के राजकुमार का प्रवेश । उसके पीछे सेवक हैं। पोर्शिया तथा नैरिसा और उसके अन्य सेवकों का प्रवेश]

मोरक्को का राजकुमार : (पोर्शिया से) मुझे मेरे रग के कारण नापसंद न करो। यह तो प्रचण्ड सूर्य्य का प्रसाद है, क्योकि मैं ऐसे प्रदेश मे रहता हूँ जहाँ सूर्य्य की प्रखर किरणें पड़ती हैं। तुम मेरे सामने एक गोरे रंग के आदमी को लाओ जो ऐसे उत्तर मे जन्मा है, जहाँ सूर्य्य मे इतना भी ताप नही कि वह हिमकणो को पिघला सके और फिर अपने प्रेम की परीक्षा के लिये हमारा युद्ध कराओ, कि देखे किसका लोहू अधिक लाल है, तो श्रीमती ! देखना कि मेरे नाम से बड़-बड़े शूर-वीर थर्रा जाते हैं। तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम की शपथ ! मेरे देश की अत्यत प्रशसित सुंदरियों ने भी मुझे सदैव प्रेम किया है। यदि तुम्हारे प्रेम को जीतने का प्रश्न न हो तो मैं तो कभी अपने इस रग को बदलने की इच्छा भी नही करूँगा। मेरी रानी !

पोर्शिया : पति चुनने के विषय में मैं अन्य सुंदरियो की भाँति केवल बाहरी रूप की ओर आकर्षित नही होती और फिर मेरे स्वयं पति चुनने की आज़ादी को तो इन डिब्बो की लॉटरी ने और छीन रखा है। यदि मेरे पिता ने मुझे अपनी बुद्धि से न बाँध रखा होता, मेरे चारों ओर ऐसा घेरा न डाल दिया होता; कि जो बात मैंने आपको बताई, मुझे उसी की पत्नी बनना पड़ेगा

जो मुझे उसी तरीके से हासिल करेगा; तो हे विख्यात राजकुमार! मैं सच कहती हूँ आप विश्वास करें, मुझे प्राप्त करने में आप किसी से भी पीछे नही रहते। मेरा प्रेम कोई भेद नही मानता।

मोरक्को० : इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। इसीलिये मै प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे उन डिब्बों के पास ले चलें। देखे मेरा भाग्य क्या कहता है। मै इस तलवार की कसम खाता हूँ, जिसने फ़ारस के बादशाह को मार डाला था, जिसने एक ऐसे फारस के शाहज़ादे को मारा था जो तीन बार सुल्तान सुलेमान को हरा चुका था। मै इस तलवार की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मै इस वीरकर्म को तुम्हारा प्रेम जीतने के लिये कर सकता हूँ। संसार में सबसे क्रूर दृष्टि रखने वाले को अपनी आँखों से झुका सकता हूँ और अत्यत दुस्साहसी को भी अपने साहस से हरा सकता हूँ। मैं रीछनी के दूधपीते बच्चों को उससे छीन सकता हूँ और शिकार के भूखे दहाड़ते शेर को भी चुनौती दे सकता हूँ। क्यों? केवल तुम्हारे लिये। किंतु दुर्भाग्य है कि ऐसा यहाँ कोई अवसर नहीं। यदि पुरानी यूनानी कहानियों मे वर्णित संसार के सबसे सशक्त और सबल पुरुष हरक्यूलिस और उसके सेवक लिचास में एक दिन चौपड़ का खेल होता और पाँसों के खेल से ही यह भी निर्णय होने को होता कि जो जीतेगा वही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति माना जायेगा, तो क्या मालूम कि पाँसों का पलटा किस्मत का पलटा बनकर लिचास को ही सर्वश्रेष्ठ बना देता। जिस प्रकार महान हरक्यूलिस अपने सेवक से हार जाता, उसी प्रकार मैं भी अंधे भाग्य के हाथों हार सकता हूँ। कौन जाने कोई अयोग्य व्यक्ति ही अपनी योग्यता से अधिक वस्तु पाने मे यहाँ समर्थ हो जाये कि मै आर्त्त वेदना से व्याकुल हो उठूं?

पोर्शिया : आप अपनी किस्मत आजमाइये । या फिर इस चक्कर मे पड़िये ही मत या फिर चुनाव के पहले कसम खाइये कि यदि आप गलत चुनाव करेंगे तो फिर आप कभी किसी स्त्री से प्रेम नही करेंगे कि आप उससे शादी कर सकें । सोच लीजिये !

मोरक्को० : हाँ, मैं किसी स्त्री से भी शादी नही करूँगा । आओ ! मुझे एक अवसर लेने दो ।

पोर्शिया : पहले गिरजे चले जहाँ शपथ ली जायेगी और खाना खाने के बाद आप अपनी किस्मत आज़मायेंगे ।

मोरक्को० : हे सौभाग्य ! तेरे ही हाथ मे है कि तू मुझे संसार का सबसे सुखी व्यक्ति बनाये या इस पृथ्वी का सबसे दुखी और गया-बीता व्यक्ति बना दे ।

[तुरही-निनाद और प्रस्थान]

दृश्य २

[वेनिस-पथ]

[लॉन्सलौट गोब्बो का प्रवेश]

लॉन्सलौट : मुझे पक्का यकीन है कि आखिरकार मेरी अतरात्मा मुझे अपने स्वामी यहूदी शाइलॉक की नौकरी से दूर भगाकर ही मानेगी । दायें हाथ पर खड़ा हुआ शैतान मुझे ललचा कर कहता है : 'गोब्बो, लॉन्सलौट गोब्बो, अच्छे गोब्बो, अच्छे लॉन्सलौट गोब्बो, अपने पाँवो का इस्तेमाल करो, जरा चलो, दौड़ो और भाग जाओ, तराट जाओ ।' लेकिन मेरी अन्तरात्मा कहती है : 'नही, ध्यान करो । ईमानदार लॉन्सलौट ! ईमानदार गोब्बो, भागो मत । इस भाग जाने से घृणा करो ।' यह शैतान, इतना

वीर शैतान फिर कहता है : 'भाग ! भाग जा ! हिम्मत बाँध गोब्बो !' शैतान पुकारकर कहता है : 'ईश्वर के लिये भाग जा !' और मेरे हृदय को बाँधनेवाली मेरी अंतरात्मा कहती है, बड़ी अक्लमंदी से कहती है : 'मेरे ईमानदार लॉन्सलौट, मेरे दोस्त ! तू एक ईमानदार आदमी का बेटा है, न सही, तू एक ईमानदार औरत का बेटा है,' वह कहती है : 'लॉन्सलौट, टस से मस मत हो ।' भाग ! कहता है शैतान, ठहर ! कहती है अंतरात्मा । मै कहता हूँ : 'अतरात्मा तू ठीक कहती है ।' मैं कहता हूँ : 'शैतान तू ठीक कहता है ।' अन्तरात्मा का शासन मानू तो मुझे स्वामी के साथ रहना होगा, उस स्वामी के साथ, भगवान कसम ! निश्चय जानो, वह भी एक तरह का शैतान ही है और इस यहूदी के पास से भाग जाऊँ, तब तो मुझ पर शैतान का ही शासन हो गया समझो, जो, माफ करना, खुद ही शैतान है । निश्चय ही यह यहूदी, शैतान का ही अवतार है और मेरी अंतरात्मा कहती है कि मेरी अंतरात्मा तो बड़ी कठोर अंतरात्मा है जो मुझे इस यहूदी के पास रहने को कहती है । शैतान की सलाह ज्यादा दोस्ताना है । ओ शैतान ! मै तो भागता हूँ । मै तो तुम्हारी शरण हूँ । आज्ञा दो । मै भागता हूँ ।

[वृद्ध गोब्बो का एक टोकरी के साथ प्रवेश]

गोब्बो : नौजवान ! मालिक शाइलॉक यहूदी का घर किधर है, मुझे महरबानी करके बता सकोगे ? मुझे जाना है वहाँ ।

लॉन्सलौट : (स्वगत) हे भगवान ! यह तो खास मेरा ही बाप है जो आधे से ज्यादा अधा हो चुका है कि मुझे भी नही पहचान पाया ! मै इसे गड़बड़ाने की चाल चलता हूँ ।

गोब्बो : हे नौजवान ! क्या आप मुझे शाइलॉक के मकान का पता बता सकेंगे ?

लॉन्सलौट : राह के अगले मोड़ पर अपने दाये हाथ की ओर मुड़ जाना और अगले वाले पर अपने बाये मुड जाना। तीसरे मोड़ पर मुड़ना नही किधर भी, बस सीधे घर मे घुसे चले जाना, वही यहूदी का घर है।

गोब्बो : परमात्मा के संतों की कसम ! तुम्हारी सलाह को मानकर चलने मे तो उसका घर ढूंढना मेरे लिये एक बहुत कठिन काम है। तुम महरबानी करके मुझे एक लॉन्सलौट के बारे मे कुछ बता सकोगे जो कि शाइलॉक की नौकरी में है? क्या वह यहूदी के साथ रहता है या उसने उसकी नौकरी छोड़ दी है ?

लॉन्सलौट : क्या तुम तरुण कुंवर लॉन्सलौट के बारे में बाते कर रहे हो ? (स्वगत) और देखो, मै कैसे इसकी आँखों मे आँसू लाता हूँ। (प्रगट) क्या तुम तरुण कुँवर लॉन्सलौट के बारे मे बाते कर रहे हो ?

गोब्बो . वह कुँवर नही कहला सकता श्रीमान् ! वह तो एक गरीब आदमी का बेटा है। वह बहुत गरीब है पर बड़ा ईमानदार है, और भगवान की कृपा से अब अच्छी तरह अपनी जि़दगी बिता रहा है।

लॉन्सलौट : उसके बाप को चाहे जैसे रहने दो। हम तो तरुण कुँवर लॉन्सलौट की बातें कर रहे थे।

गोब्बो : वह श्रीमन्त का मित्र होगा, किंतु खाली लॉन्सलौट है।

लॉन्सलौट : लेकिन मेरी सुनो ! बुजुर्गवार ! इसीलिये मै कहता हूँ तरुण कुँवर लॉन्सलौट !

गोब्बो : जी हाँ, अगर आप नाराज़ न हो तो लॉन्सलौट !

लॉन्सलौट : इसीलियें, कुँवर लॉन्सलौट ! लेकिन कुँवर लॉन्सलौट के बारे में बात करने से क्या फ़ायदा पिता ? क्योंकि वह नौजवान तो, यदि मैं पांडित्यपूर्ण भाषा का प्रयोग करूँ तो, भाग्य की क्लोथो, लैचीशिया और एट्रोपोस नामक देवियों के कारण स्वर्ग चला गया अर्थात् मर गया।

गोब्बो : हे भगवान ! यह सच नही हो सकता। क्योकि वही मेरी बुढ़ापे की लाठी थी, वही मेरा सहारा था।

लॉन्सलौट : (स्वगत) क्या मैं लाठी जैसा लगता हूँ ? क्या मैं कोई डण्डा जैसा मालूम होता हूँ ? (प्रगट) पिता ! क्या तुम मुझे नही पहँचानते ?

गोब्बो : हाय रे दुर्दिन ! मै आपको नही जानता। लेकिन मैं विनती करता हूँ कि आप मेरे पुत्र का पता बतायें ! भगवान उसकी आत्मा को शांति दे ! क्या वह जीवित नही है ?

लॉन्सलौट : पिता ! क्या आप मुझे नही पहँचानते ?

गोब्बो : हाय रे भगवान ! मेरी आँखे कितनी अंधी हो गई हैं। मैं तो तुम्हें नही पहँचान पाता !

लॉन्सलौट : अगर आँखें भी होती तो भी शायद आप मुझे नहीं पहँचानते। बुद्धिमान पिता ही अपने बच्चे को पहँचानता है। तो सुनिये बुजुर्गवार ! मैं आपको आपके बेटे की खबर देता हूँ। मुझे दुआ दीजिये (झुकता है) सचाई आखिर सामने आयेगी। कुछ दिन के लिये भले ही इंसान का बेटा छिपाया जा सके, लेकिन खून बहुत दिन तक छिपाया नही जा सकता। सचाई आखिर उजागर होगी ही।

गोब्बो : कृपया खड़े होइये ! मुझे विश्वास है आप मेरे पुत्र लॉन्सलौट नही हो सकते।

लॉन्सलौट : वेकार की बाते छोड़िये । मुझे दुआ दीजिये । मैं ही लॉन्सलौट हूँ, आपका पुत्र। आपही का वेटा हूँ, था और रहूँगा।

गोब्बो : मैं नही मान सकता कि तुम मेरे वेटे हो ।

लॉन्सलौट : हाय अब मैं करूँ तो क्या करूँ ? लेकिन मैं हूँ तो लॉन्सलौट ही । मै ही यहूदी का नौकर हूँ और यकीनन तुम्हारी स्त्री मार्जरी मेरो माँ है ।

गोब्बो : ठीक कहते हो । उसका नाम मार्जरी ही है। और अगर तुम लॉन्सलौट ही हो तो मै कसम से कह सकता हूँ कि तुम मेरे ही रक्त-मांस हो ! हे भगवान! ऐसा ही हो ! क्या दाढ़ी है तुम्हारी ! (सिर के लंबे वालो पर हाथ रखता है) तुम्हारी ठोडी पर तो इतने बाल हैं जितने मेरी गाड़ी खीचने वाले घोड़े डॉबिन की पूंछ मे भी नही ।

लॉन्सलौट : (उठकर) अगर यह वात है तो इसका मतलव यह है कि डॉबिन घोडें की पूंछ घटती जा रही है । जब मैंने उसे देखा था तो निश्चय ही उसकी पूँछ में मेरी ठोडी की तुलना में कही ज्यादा बाल थे !

गोब्बो : हे भगवान ! तुम तो सचमुच वहुत वदल गये। कहो, तुम्हारी अपने मालिक से कैसी पट रही है ? मै उसके लिये एक भेट लाया हूँ। मै समझता हूँ तुम दोनों में अच्छी कट रही है ?

लॉन्सलौट : जहां तक मेरा सवाल है,, मैंने तो तय कर लिया है कि मैं उसे छोड़ कर भाग जाऊँगा और वहुत दूर पहुँच कर ही चैन लूंगा। वह तो खालखेचा एक असली यहूदी है। उसे भेट देने की वजाय उसको फाँसी लगा लेने को एक रस्सी देनी चाहिये । मै तो उसकी नौकरी मे भूखा मर गया । जरा हाथ फेर के देखो, मेरी एक-एक पसली गिन सकते हो ! तुम आ गये पिता ! सच

मैं वहुत खुश हूँ । यहाँ एक श्रीमन्त बैसैनियो हैं। अपनी भेट उन्हे देने के लिये दे दो ! वे तो अपने नौकरों को बड़ी सुदर पोशाक देते है । अगर मुझे उनके यहाँ नौकरी नही मिली तो मैं दूर कही भाग जाऊँगा, धरती के किसी अनजान कोने में । आह रे सौभाग्य ! ये लो वे ही आ रहे हैं । आओ उनसे मिले । अगर मै अब यहूदी की और नौकरी करूँ तो मैं भी यहूदी ही बन जाऊँ ।

[बैसैनियो का लियोनार्डो तथा अन्य सेवको के साथ प्रवेश]

बैसैनियो : यही करो । लेकिन जल्दी करो कि पाँच बजे तक खाना बिल्कुल तैयार हो जाये । यह खत वक्त पर पहुँच जायें । और सेवकों के लिये नये कपड़े बनने चाहिये । और ग्रेशियानो से कहो कि वे तुरत मेरे यहाँ आ जाये ।

[एक सेवक का प्रस्थान]

लॉन्स० : चलो पिता ! उनसे मिल लो !

गोब्बो : भगवान श्रीमान् का भला करे ।

बैसैनियो : धन्यवाद ! क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो ?

गोब्बो : यह मेरा बेटा है हुजूर…एक गरीब लड़का…

लॉन्स० : नहीं श्रीमान् ! गरीब लड़का नही, बल्कि अमीर यहूदी का सेवक है और मेरे पिता बतायेगे……

गोब्बो : श्रीमान् ! इसकी बड़ी इच्छा है कि यह, क्या बताऊँ… सेवा करे…

लॉन्स० : किस्सा कोताह हुजूर यह है कि मै यहूदी का सेवक हूँ और मेरी इच्छा है, जैसा कि मेरे पिता बतायेगे……

गोब्बो : यह और इसके मालिक, हुजूर बुरा न मानें, अच्छे ताल्लुकात नही रखते……

लॉन्स० : मतलब यह हुजूर ! कि थोड़े में कहूँ तो सचाई यो है कि यहूदी ने मेरे साथ अन्याय किया है और जैसे कि मेरे पिता ईमानदार आदमी है, आपको सचाई बतायेंगे……

गोब्बो : यह मेरे पास कुछ फाख्ता है हुजूर ! मै इन्हें आपकी नजर करना चाहता हूँ……

लॉन्स० : बहुत ही संक्षेप मे कहूँ तो सारी प्रार्थना मेरे बारे मे है, जैसा कि श्रीमान् स्वयं ही मेरे ईमानदार पिता की बात से समझ जायेंगे, और हालॉकि मै यह कहता हूँ, जो मुझे कहना नहीं चाहिये, फिर भी मेरे पिता बूढ़े है ··और वे गरीब है……

बैसैनियो एक वक्त मे एक ही बात करो। तुम मुझसे चाहते क्या हो ?

लॉन्स० : आपकी नौकरी करना चाहता हूँ श्रीमान् !

गोब्बो : बस हुजूर ! इतनी-सी बात है बस।

बैसैनियो : मैं तुम्हें जानता हूँ और तुम्हारी दरख्वास्त को मजर करता हूँ। आप ही सुवह तुम्हारे मालिक शाइलॉक ने तुम्हारे वारे मे बाते की थी और तुम्हारी सिफारिश भी मुझसे की थी। लेकिन क्या यह ठीक होगा कि तुम उस धनी यहूदी की नौकरी छोड़कर मुझ जैसे गरीब नागरिक की सेवा करो ?

लॉन्स० : श्रीमान् ! 'ईश्वर की दया सबसे अच्छी' की कहावत आप पर ही चरितार्थ होती है। आप पर ईश्वर की दया है, शाइलॉक के पास तो केवल धन है।

बैसैनियो : खूब कहा। अब तुम अपने बाप के साथ जाओ और अपने पुराने स्वामी से छुट्टी लो और मेरे निवासस्थान पर आ जाओ। (अपने सेवको से) इसे भी पोशाक देना, औरों से अच्छी। ध्यान रखना !

लॉन्स० : देखा पिता ! तुम कहते थे मुझे नौकरी नही मिलेगी ! तुम्हारा विचार था कि मुझे बोलना भी नही आता ! (अपनी हथेली देखकर) यदि कोई ज्योतिषी देखे तो मेरे हाथ में जो भाग्य है, वह इटली के किसी भी व्यक्ति का नही । यह देखो, जीवन की रेखा! है जोर की? यह बीवियों की रेखा है, अरे इससे क्या? पन्द्रह बीवियाँ होती ही कितनी है? मर्द के ग्यारह बेवाएँ और नौ क्वारियाँ अगर बीवियाँ हो तो क्या बड़ी बात है? यह एक और रेखा है जो बताती है कि मै तीन वार डूबने से बचूंगा और एक वार शादी के ख़तरे से बचूंगा। लेकिन इन सबका मैं क्या घमड करूँ? अगर, जैसा कि लोग कहते है, यह सच है कि किस्मत एक औरत है, तव वह बहुत ही अच्छी औरत है, क्योंकि उसने मुझसे बड़े अच्छे वायदे कर रखे है । चलो पिता । पलक मारते मै यहूदी से छुट्टी लेता हूँ ।

[लॉन्सलौट और वृद्ध गोब्बो का प्रस्थान]

बैसैनियो : सुनो लियोनार्डो ! इस मामले पर जरा गौर से सोचो । यह सब चीजे कायदे से ख़रीद कर बेल्मोन्ट जाने वाले जहाज़ पर चढ़ा दी जाये, और फिर तुम तुरत मेरे पास लौट आओ। क्योकि रात को दावत है और मेरे वे दोस्त आ रहे है जिन पर मै वहुत विश्वास करता हूँ । शीघ्र जाओ ।

लियोनार्डो : जितनी जल्दी हो सकेगा मै ऐसी ही कोशिश करूँगा ।

[ग्रेशियानो का प्रवेश]

ग्रेशियानो · तुम्हारे स्वामी कहाँ है ?

लियोनार्डो : वे रहे श्रीमान् ! टहल रहे हैं ।

[प्रस्थान]

ग्रेशियानो : श्रीमान् वैसैनियो !

बैसैनियो : ग्रेशियानो !

ग्रेशियानो : मुझे तुमसे एक प्रार्थना करनी है।

बैसैनियो . स्वीकार कर ली गई। कहो।

ग्रेशियानो : मैं भी तुम्हारे साथ बेल्मोन्ट चलूंगा। मना मत करना।

बैसैनियो : अगर तुम इसी पर अडते हो तो चलो। लेकिन सुनो ग्रेशियानो ! तुम बड़े मुँहफट हो और सलीके से भी पेश नहीं आते। तुम्हारे यह गुण तुम्हे इसलिये फब जाते है क्योकि हम तुम्हे जानते हैं और तुम्हारे साफ दिल से वाकिफ है, तभी तुम्हारे इन अवगुणो पर ध्यान नही देते। लेकिन जो तुम्हे अच्छी तरह नही जानते, उनको तो यही अवगुण भी लग सकते है। इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम अपने पर काबू रखो और ठीक तरह से नम्र व्यवहार करो, वर्ना कही ऐसा न हो कि जहाँ मै जा रहा हूँ वहाँ तुम्हारे व्यवहार से मुझे भी ग़लत समझा जाये और मैं भी अपनी आशाओं से हाथ धो बैठूं।

ग्रेशियानो : श्रीमन्त बैसैनियो ! सुनो। अगर मै गंभीर न बना रहूँ, इज्जत से बातें न करूँ, और शायद ही कभी कसम खाली तो खाली, जेब मे प्रार्थना-पुस्तक न रखे रहूँ और संजीदा दिखाई न दूं, और खाने के पहले जब प्रार्थना की जाये तब आँखों तक टोप नीचे झुकाकर बहुत ही कायदे से 'आमीन्' न कहूँ, सारे नम्रता और शिष्ट व्यवहार के नियमों का पालन न करूँ, ऐसे जैसा कोई भी अत्यत सभ्य व्यक्ति करता है, ऐसे जैसा कोई भी अत्यत शिक्षित व्यक्ति करता है, अपनी दादी का दिल खुश करने को चेहरा उदास बना लेता है, तो कुछ कहना, बल्कि फिर तुम मुझ पर कभी विश्वास ही मत करना !

बैसैनियो : अच्छी बात है। देखेगे तुम कैसा व्यवहार करते हो !

ग्रेशियानो : लेकिन आज रात नहीं। आज रात मै जो कुछ करूँ उससे मेरे व्यवहार की कल्पना मत करना, उसी से मुझ पर निर्णय मत दे देना।

बैसैनियो : अजी नही। आज रात इसकी क्या जरूरत है? बल्कि मैं तो कहता हूँ कि आज तो अपनी सारी मौज-बहार उँडेल देना क्योंकि आज तो कुछ खास दोस्त आ रहे है और वे सब हँसी-दिल्लगी के शौकीन है। लेकिन इस वक्त मुझे जाने दो, मुझे बहुत ज़रूरी काम है।

ग्रेशियानो : मुझे भी लौरेन्ज़ो से मिलना है और भी लोग है। खाने के वक्त रात को आऊँगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वेनिस : शाइलॉक के घर का कमरा]

[जैसिका और लॉन्सलौट का प्रवेश]

जैसिका : मुझे सचमुच इसका बड़ा शोक है कि तुम मेरे पिता की नौकरी छोड़ कर जा रहे हो। हमारा घर तो नरक की तरह बेजान और बंजर है। काफी हद तक तुम्हारी मजाकिया तबियत दिल लगाया करती थी, लेकिन तुम तो जाने की बात पक्की कर चुके हो, तो फिर बिदा! यह लो एक ड्यूकैट ले जाओ। बैसैनियो की मेज पर तुम खाना खाते हुए लौरेन्जो को पाओगे। चुपचाप बिना किसी के भी जाने हुए गुप्त रूप से यह पत्र उसे दे देना। अब बिदा। मैं नही चाहती कि तुमसे बातें करते हुए मेरे पिता मुझे देख ले।

लॉन्स० : बिदा! आँसू मुझे बोलने नहीं देते। ओ अत्यंत सुंदर

विधर्मी ! ओह प्रिय यहूदिन ! किसी दुराचारी ईसाई ने ही तेरी माता से स्नेह प्रगट करके तुझे जन्म दिया होगा। किंतु बिदा ! यह निर्बलता के प्रतीक मेरे अश्रु मेरे साहस को कुछ कम कर रहे हैं। बिदा !

जैसिका : विदा, अच्छे लॉन्सलौट !

[लॉन्सलौट का प्रस्थान]

उफ ! कितना घृणित पाप है मेरा कि मै अपने ही पिता की पुत्री होने से अस्वीकार करती हूँ। मै उनकी पुत्री होकर भी उनसे कितनी दूर हूँ ! ओ लौरेन्जो ! यदि तुम अपनी प्रतिज्ञा का पालन करोगे तो मै तुम्हारी प्रिय पत्नी बनकर, ईसाई हो जाऊँगी और इस झगड़े का ही अंत कर दूँगी।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[वही : पथ]

[ग्रेशियानो, लौरेन्जो, सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रवेश]

लौरेन्जो नही, हम चुपचाप खाने के वक्त खिसक चलेगे। मेरे घर चलकर चेहरे पर नकाब चढा लो[1] और घटे भर मे लौट आओ।

ग्रेशियानो : हमने तो अच्छी तैयारी भी नही की है।

सैलेरिनो : हमने तो अभी मशालचियों का भी इंतजाम नही किया है।

सैलैनियो : यह सब बेकार ही है अगर हमने इसका ठीक से इंतजाम नही किया। बेहतर है हम इस खेल को करे ही नही।

लौरेन्जो : अभी तो चार बजे है। हमारे दो घंटे पड़े है, हम तैयारी

---

१. चेहरे पर नकाब डालने का तब फैशन था।

कर सकते है ।

[लॉन्सलौट का एक पत्र के साथ प्रवेश]

अरे तुम हो लॉन्सलौट ! कहो क्या खबर है ?

लॉन्सलौट : आप अगर मोहर तोड़कर यह पत्र पढ़ने का कष्ट करे तो मैं आपको सब बात समझा दूँगा ।

लौरेन्ज़ो : इस लिखावट को तो मैं खूब पहचानता हूँ। कितनी सुंदर है और फिर जिस हाथ ने इसे लिखा है वह तो इस सफ़ेद कागज़ से भी ज़्यादा गोरा और खूबसूरत है ।

ग्रेशियानो : तब तो यह अवश्य ही तुम्हारी प्रिया का पत्र है।

लॉन्सलौट : मुझे जाने की आज्ञा दी जाय ।

लौरेन्ज़ो : अब तुम किधर जा रहे हो ?

लॉन्सलौट : भगवान की सौगध! मैं तो अपने पुराने स्वामी शाइलॉक को निमत्रण देने जा रहा हूँ। आज रात उसे भी मेरे नये स्वामी बैसैनियो के साथ भोजन पर आमंत्रित किया गया है।

लौरेन्ज़ो : (उसे धन देकर) यह देखो, यह लो। सुदरी जैसिका से कहना कि मै उसे निराश नही करूँगा । लेकिन देखो, एकांत मे कहना।

बस ! अब तुम जा सकते हो ।

[लॉन्सलौट का प्रस्थान]

मित्रो ! आज रात नाटक[1] करना है ? मैने मशालची का प्रबध कर लिया है।

सैलैरिनो : बहुत अच्छा । माता मेरी की सौगन्ध है, मै ज़रा भी वक्त बरबाद किये बिना सब इतज़ाम कर लूँगा।

---

१. चेहरो पर नकाब डालकर एक प्रकार का खेल उस समय किया जाता था । यह नाटक का एक पुराना रूप था।

सैलेनियो : यही मेरा भी हाल समझो।

लौरेन्जो : तो फिर अब से एक घंटे बाद, हम लोग ग्रेशियानो के निवासस्थान पर मिलेंगे।

सैलेरिनो : वाह ! क्या कहा है। बिल्कुल ठीक है।

[सैलेरिनो और सैलेनियो का प्रस्थान]

ग्रेशियानो . क्या वह पत्र तुम्हारी प्रिया सुंदरी जैसिका का तो नहीं है ?

लौरेन्जो मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊँगा, सब बता दूँगा। उसने लिखा है कि मैं उसे उसके पिता के घर से कैसे निकालूँ, वह अपने साथ घर से कितने हीरे-जवाहिरात और सोना निकाल लायेगी और किस प्रकार वह एक सेवक का रूप धारण करके घर से निकलेगी। अगर कभी भी शाइलॉक स्वर्ग जा सकता है तो केवल अपनी इसी दयालु पुत्री के कारण। और यदि इस सुंदरी पर कोई आपत्ति आ सकती है तो वह निश्चय ही इस विधर्मी यहूदी पिता के कारण। चलो अब चलें। चलते-चलते तुम जैसिका का पत्र पढ लेना। नाटक में वस्त्र बदलने पर जैसिका ही मेरा मशालची बनेगी।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[वही : शाइलॉक के घर के सामने]

[शाइलॉक और लॉन्सलौट का प्रवेश]

शाइलॉक : तुम स्वयं अपने पुराने स्वामी शाइलॉक और नये स्वामी वैसैनियो का अतर देख लोगे। देख लेना तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा। अरी जैसिका !! हाँ तो ! वहाँ तो तुम्हे ऐसी चराई भी नही मिलेगी जैसे यहाँ ठूँस-ठूँसकर खाया करते थे। जैसिका ! सुना नही !! और वहाँ क्या तुम काहिली कर पाओगे ? यहाँ जैसे नई-नई वर्दियाँ घिस-घिस फाड़ते थे वहाँ क्या यह सब कर सकोगे ? जैसिका ! सुन नही रही है क्या ?

लॉन्सलौट : जैसिका !!

शाइलॉक : तुम्हें पुकारने को किसने कहा था ? मैंने तो तुमसे नहीं कहा था न ?

लॉन्सलौट : हुजूर कहा करते थे कि आपकी प्रगट आज्ञा के बिना मैं कुछ नही कर सकता था।

[जैसिका का प्रवेश]

जैसिका : पिता ! क्या आपने मुझे बुलाया था ? क्यों क्या बात है ?

शाइलॉक : मुझे शाम को भोजन पर निमंत्रित किया गया है जैसिका ! और क्योंकि मैं बाहर जाऊँगा, तुम यह चाबियाँ रखो घर की। लेकिन मैं वहाँ क्यों जाऊँ ? कोई मुझे प्यार के कारण थोड़े ही बुलाया गया है ? वे तो मेरी खुशामद कर रहे है ! चलो कोई बात नही। मै अपनी नफरत के सहारे ही वहाँ जाऊँगा और उस कंजूस ईसाई वैसैनियो के खूब खाऊँगा। मेरी प्यारी

बेटी जैसिका, घर की अच्छी देखभाल करना। मुझे वहाँ जाने की कोई खुशी थोड़े ही है ! रात मैंने सुपने मे रुपयों से भरे थैले देखे,थे, और तभी मुझे डर लग रहा है कि मुझ पर कोई आफत न आ जाये !

लॉन्सलौट : श्रीमान् ! अवश्य आइये । मेरे स्वामी वैसैनियो पूरी आशा कर रहे है कि आप अवश्य आवेगे ।[१]

शाइलॉक : मै भी यही कर रहा हूँ ।

लॉन्सलौट मैं समझता हूँ, उन्होने एक नाटक का भी प्रवध किया है, लेकिन मुझे पक्की तरह से नही मालूम । लेकिन यदि आपको कोई मनोरजन मिले तो इसका कारण क्या हो सकता है ? यही कि वुधवार को दुपहर मे जो ईस्टर त्यौहार वाला सोमवार पड़ा था न, उसकी सुबह, हाँ सुवह छः वजे को चार साल पहले मेरी नाक मे से खून निकला था न, वही हो सकता है ।[२]

शाइलॉक : तो आज नाटक का भी प्रबध है वहाँ रात को ? सुनो जैसिका, मेरे दरवाजो मे ताले लगा लेना होशियारी से । जब कभी तुम ढोल की आवाज सुनो, या शहनाई की तीखी आवाज कान मे पड़े तो खिड़की मे से झाँकना मत । इन मूर्ख ईसाइयों को देखने की कोई जरूरत नही, जब वे अपने मुखों को रँगकर, उन पर तरह-तरह के चेहरे लगाकर आते है । मेरा घर तो शांति के लिये प्रसिद्ध है । सब दरवाजे और खिड़कियाँ अच्छी

---

१ यहाँ Reproach शब्द का प्रयोग किया गया है । जिससे लॉन्सलौट कहता है—स्वामी आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। परन्तु Reproach का दूसरा अर्थ है—डाँटना, तिरस्कार करना । शाइलॉक रिप्रोच के दूसरे अर्थ की ओर इगित करता है। हिन्दी मे इसका अनुवाद हो ही नही सकता ।

२. एक अनर्गल वार्त्तालाप । यह शेक्सपियर का निकृष्टतम हास्य है ।

तरह बंद रखना ताकि इन बेकार के उत्सवो की आवाजें भीतर नही आये। सचमुच जेकब[1] के पवित्र दण्ड की शपथ खाकर कहता हूँ, वहाँ जाकर रात मे उन लोगों के साथ खाने की मेरी तनिक-सी भी इच्छा नही है, पर फिर भी मुझे जाना पड़ रहा है। अच्छा (लॉन्सलौट से) सुनो, तुम चलो ! कह देना मै आता हूँ।

लॉन्सलौट : मैं आपसे पहले ही पहुँचता हूँ। श्रीमती (जैसिका से) खिड़की से जरूर झाँकना। एक यहूदिन के देखने लायक एक ईसाई भी उनमे होगा।

[प्रस्थान]

शाइलॉक : वह मूर्ख क्या कहता था ?

जैसिका : वह तो 'विदा श्रीमती' कह कर गया है।

शाइलॉक : यह मूर्ख है तो अच्छे स्वभाव का, लेकिन खाता बहुत है, मुनाफे के मामले मे गोल, और इस कदर सोता है दिन में कि क्या कोई बिल्ली सोयेगी ? मेरे घर मे ऐसे काहिलों का क्या काम है ? चलो अच्छा है, बला टली। यह बहुत ठीक रहा कि यह ऐसे घर का माल वरबाद करने पहुँचा, जहाँ की बरबादी ही मुझे सबसे ज्यादा पसंद है। अच्छा जैसिका ! भीतर चलो। यह नौकर अपने मालिक को नुकसान देगा। और उधार पाया धन बैसैनियो का खर्च ही हो तो क्या ही अच्छा। सुनो बेटी, मै जल्दी ही आ जाऊँगा। जो मैने कहा है, वैसा ही करना। सब दरवाजे बंद कर लेना। सुनी है न कहावत, अच्छे मूँदे, अच्छे सोये ? बुद्धिमान लोग इसे कभी नही भूलते।

[प्रस्थान]

---

१ यहूदियो के न्यायी पूर्वज।

जैसिका : विदा ! यदि मेरा भाग्य मेरे विरुद्ध नहीं है, तो मैं एक पिता और तुम एक पुत्री को खो दोगे !

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[ग्रेशियानो और सैलैरिनो का प्रवेश। मुखों पर चेहरे चढ़े हैं।]

ग्रेशियानो : यही तो वह साया है, घर का, जहाँ लॉरेन्जो ने हमसे ठहरने को कहा था !

सैलैरिनो : लेकिन उसके आने का तो समय निकल चुका !

ग्रेशियानो : सचमुच बड़े अचरज की बात है ! प्रेमी तो समय से पहले पहुँचते हैं। और वह है कि विलंब कर रहा है !

सैलैरिनो : वीनस के कबूतर तो नये प्रेम पर अपनी मुद्रा लगाने को दस गुनी तेजी से उड़ते हैं। वे यह नहीं देखते कि एक वह प्रेम पूर्ण सफल हो जो कि अपनी पूर्ण स्थापना कर चुका हो ![1]

ग्रेशियानो : सच कहते हो ! जिस भूख की तेजी से आदमी खाने बैठता है, उठते वक्त उसमे वह तेजी कहाँ रहती है जब पेट भर चुका होता है ? कहाँ है वह घोड़ा, जो लौटते वक्त भी उसी तेजी से आता हो जिससे पहली बार उडा चला जाता है ? वस्तु के उपभोग का आनद वह तीव्रता कहाँ रखता है जो उसकी प्राप्ति के संघर्ष मे होता है ! यात्रा पर निकलने वाला जहाज कितना सुंदर होता है, झंडो से सजा, बिल्कुल उसी प्रसिद्ध कहानी के पुत्र-सा जो जब कमाई करने निकला था तो अत्यंत हर्षित था ! और जब वही जहाज लौटता है तब पाल फट जाते

---

१ पुराने प्रेम की तुलना में नया प्रेम आकर्षक होता है। वीनस प्रेम की देवी है। उसके कबूतर प्रेम पर मुहर लगाते हैं।

है ! लकड़ियाँ चर्रा जाती है । हवा के हाथों से झकझोरा हुआ उसी पुत्र का-सा जो विदेशों मे जाकर दुश्चरित्रा स्त्रियों मे फँसकर सब कुछ लुटा कर लौटता है ![1]

सैलैरिनो : यह लो लौरेन्जो आ गया ! इस विषय पर हम फिर बाते करेगें ।

[लौरेन्ज़ो का प्रवेश]

लौरेन्ज़ो : प्रिय मित्रो ! सच तुम्हे इतनी प्रतीक्षा कराने का मुझे बड़ा खेद है । लेकिन विश्वास मानो, मुझे बहुत ही आवश्यक कार्य्य ने रोक लिया था । जब तुम्हारा समय आयेगा कि तुम अपनी प्रिया को लेकर कही भागोगे, तब देख लेना कि जितनी देर तुमने मेरे लिये प्रतीक्षा की है, मैं इससे कही अधिक समय तक रुका रहूँगा । आओ चलो । यही शाइलॉक का घर है । मेरे होने वाले ससुर का ! अरे ! भीतर कौन है ?

[जैसिका खिड़की पर लड़के की वेशभूषा में दिखाई पड़ती है ।]

जैसिका : कौन है ? मैने तुम्हारी आवाज़ तो पहँचान ली है, लेकिन मुझे विश्वास दिलाने के लिये बताओ कि तुम हो कौन ?

लौरेन्ज़ो : मै लौरेन्जो हूँ, तुम्हारा सच्चा प्रेमी !

जैसिका : लौरेन्ज़ो ! निश्चय ही तुम हो ! मेरे प्रिय हो ! आह ! कितना प्रेम करती हूँ तुम्हें मै । और तुम्हारे सिवाय जान भी कौन सकता है कि मै तुम्हें प्यार करती हूँ !

लौरेन्ज़ो : ईश्वर जानता है, तुम्हारा हृदय जानता है कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ ।

---

१. पुत्र की कथा इजील में आती है कि एक लड़का कमाने जाता है और अंत में सब खोकर लौटता है । पिता उसका फिर भा स्वागत करता है । इंजील में उसे भटकी हुई आत्मा का प्रतीक माना गया है ।

जैसिका : यह एक छोटी पिटारी है, जो मैं ऊपर से फेकती हूँ । इसे लपकना । छूट न जाये । यह इतनी तकलीफ उठाने से कही ज्यादा कीमत रखती है । यही सौभाग्य है कि यह रात का समय है और तुम मुझे देख नही सकते क्योकि लड़के की वेश-भूषा मे होने के कारण मै लज्जा से मरी जा रही हूँ । किंतु प्रेम अच्छा है और प्रेमी उन मूर्खताओ को नही देख सकते जो वे स्वय करते है । यदि वे देख पाते तो कामदेवता स्वयं ही यह देखकर लाज से गड़ जाता कि मै पुरुष हो गई हूँ ।

लौरेन्ज़ो : उतरो ! तुम्हे मेरा मशालची बनना है ।

जैसिका . हाय ! क्या मैं अपनी लज्जा को प्रकाशित करूंगी ? सच ! वह बहुत झीनी है । कही पहँचान न ली जाऊँ ! प्रियतम ! मुझे तो छिपा ही रहने दो ।

लौरेन्ज़ो : तुम तो छिप ही गई हो ! तुम्हे पहँचान ही कौन सकता है ? तुरंत उतर आओ ! क्योकि अब रात तेजी से सरक रही है और फिर वे सब बैसैनियो की दावत मे हमारी प्रतीक्षा भी कर रहे होगे !

जैसिका : ठहरो ! मै दरवाजो को खूब बद कर दूँ और कुछ और धन सग ले लूँ बस फिर नीचे आती हूँ ।

[प्रस्थान—ऊपर ही ।]

ग्रेशियानो सचमुच ! इस स्त्री मे तो कोई यहूदीपन नही है, यह तो पूरी ईसाइन है ।[1]

---

१ शेक्सपियर के पात्र ईसाई हैं, यहूदी होना उनके लिये कुछ बहुत बुरी बात है। जो उनके लिये अच्छा है वह ईसाई है । जैसे हिंदू किसी की पवित्रता देखकर कहते हैं - अजी वह तो पूरा ब्राह्मण है ! यह भी ऐसी ही अभिव्यक्ति है, क्योकि जैसिका उनके लिये विधर्मी है ।

लौरेन्ज़ो : यदि मै इससे अत्यंत प्रेम न करता होऊँ तो तुम मुझे बुरा कहना । वह चतुर है, कुशल है और मुझे विश्वास है कि मेरी धारणा गलत नही है । अत्यत सुदरी है, मेरी आँखें मुझे धोखा नही दे सकती । उसके गौरव-भरे आचरण ने प्रमाणित किया है कि वह मुझसे अत्यत प्रेम करती है। और ऐसी चतुर, सुंदर और नेक स्त्री से प्रेम मै क्यो नही करूँगा भला ?

[जैसिका का प्रवेश—रंग-मंच की भूमि पर]

अच्छा ! तुम आ गई । चलो मित्रो ! चले । हमारे अन्य मित्र जो नाटक मे भाग ले रहे है, हमारी प्रतीक्षा कर रहे होगे।

[जैसिका और सैलैरिनो का प्रस्थान । ऐन्टोनियो का प्रवेश]

ऐन्टोनियो : कौन है ?

ग्रेशियानो : क्या आप श्रीमान ऐन्टोनियो है ?

ऐन्टोनियो : धिक्कार है तुम्हे ग्रेशियानो ! बाकी लोग कहाँ है जो नाटक मे भाग ले रहे है ? नौ बज गये, सारे मेहमान इंतजार कर रहे है । आज रात कोई नाटक नही हो सकेगा । हवा का रुख बदल गया है और अनुकूल वायु के बहाव के कारण बैसैनियो को अभी-अभी बैलमोन्ट को ओर जहाज में यात्रा करनी पड़ेगी । मैंने तुम्हे ढूँढने को कई लोग दौड़ा रखे है ।

ग्रेशियानो : यह तो बड़ी खुशी की बात है ! जहाज पर आज रात ही जाऊँ, इससे बढकर और क्या हो सकता है ?

[प्रस्थान]

दृश्य ७

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के घर का एक कमरा । तुरहियों की आवाज़ । पोर्शिया का मोरक्को के राजकुमार तथा अन्य सेवकों के साथ प्रवेश]

पोर्शिया : पर्दे सरकाओ और श्रीमान् राजकुमार को वे डिब्बे दिखाओ। आइये श्रीमान् ! आप डिब्बा चुनिये।

मोरक्को का राजकुमार : पहला सोने का है। क्या लिखा है इस पर ? 'जो मुझे चुनता है, वह वही पाता है जिसे बहुत-से लोग चाहते हैं।' और चांदी वाले पर लिखा है—'जो मुझे चुनता है, वह वही पाता है, जिसके कि वह योग्य होता है।' और यह निकृष्ट धातु राँगा, इस पर यह क्या भद्दी-सी बात लिखी है—'जो मुझे चुनता है, वह उस सबको दाँव पर लगाता है जो उसके पास है।' (पोर्शिया से) किन्तु मुझे यह निश्चय कैसे हो कि मैंने ठीक ही डिब्बा चुना है !

पोर्शिया : श्रीमान् राजकुमार ! जो ठीक डिब्बा है, उसमे मेरा चित्र रखा है, यदि आप उसी को चुन लेंगे, तो तुरत मेरा विवाह आपसे हो जायेगा।

मोरक्को० : देवताओ ! मेरी मदद करो ! ठहरो ! मै एक बार फिर इस लिखावट को पढ़ता हूँ ! क्या कहती है यह लिखावट राँगे के डिब्बे की ? 'जो मुझे चुनता है, वह उस सबको दाँव पर लगाता है, जो उसके पास है।' देना होगा ! लगाना होगा ! लेकिन किसलिये ! राँगे के लिये ! राँगे के लिये इतना खतरा मोल लेना होगा ! यह डिब्बा तो मुझे डराता है। जो मनुष्य कष्ट उठाते है, वह केवल कुछ सुदर वस्तु की प्राप्ति के लिये। उच्च विचारो के व्यक्ति झूँठी चकमक पर मोहित नही होते ! तो फिर मैं ही इस निकृष्ट धातु राँगे के प्रति क्यो आकर्षित

होऊँ ? और यह श्वेत भव्य चाँदी का डिब्बा क्या कहता है ? लिखा है—'जो मुझे चुनता है, वह वही पाता है जिसके कि वह योग्य होता है।' ठहर जाओ मोरक्को के राजकुमार ! अब निष्पक्ष दृष्टि से तनिक अपने ही विषय मे चिंतन करो। यदि मै अपने बारे में सोचूँ, तो यही कहूँगा कि मै तो बहुत पाने के योग्य हूँ। लेकिन कौन जाने फिर भी मै सुदरी पोर्शिया को प्राप्त करने के योग्य हूँ भी या नही ? किंतु मैं स्वय अपनी योग्यता के विषय मे इतना शकालु क्यों रहूँ ? इसका अर्थ तो यही है कि मै अपने को हेय समझता हूँ। मेरी योग्यतानुसार प्राप्ति की बात है ! तब तो मै पोर्शिया को पाने के योग्य हूँ। अपने उच्चकुल, उच्चपद, धन और गौरव से मै उसके लिये पूर्णत. समर्थ हूँ। और सबसे बड़ी योग्यता का कारण तो यह है कि मैं उससे प्रेम करता हूँ। तो क्या इसी डिब्बे को चुन लूँ ? या आगे बढ़ूँ ? लेकिन सोने वाले डिब्बे को एक बार फिर पढ़ कर तो देखूँ ! कहता है—'जो मुझे चुनता है वह वही पाता है, जिसे बहुत-से लोग चाहते है।' सच तो यह है कि सारा ससार पोर्शिया को चाहता है। संसार के हर कोने से लोग उसके लिये आ रहे है। आ रहे हैं कि वे इस पवित्र देवी का चुंबन कर सकें ! यह मानो एक जीवित सत है ! ईरान के भीषण मरुस्थल और विशाल अरब के बीहड़ सुनसान विस्तार इसी पोर्शिया के दर्शनों की लालसा से दुर्गम नही रहे, साधारण राजमार्ग की भाँति बन गये है ! क्योंकि देश-विदेशों से राजकुमार चले आ रहे है। अथाह महासिंधुओं का विस्तार, वह जलमय साम्राज्य जिसका उठती लहरो का-सा महत्त्वाकांक्षा-भरा शीश आकाश पर थूकता है, इन विदेशियों को तनिक भी नही रोक पाता। वे

तो पोर्शिया को देखने के लिये उसे ऐसे लाँघकर आ जाते हैं जैसे वह जल की कोई क्षीरमय धारा हो ! इन्हीं तीन डिब्बों में से एक में इस सुदरी का दिव्य चित्र है। क्या कभी राँगे के डिब्बे मे भी वह हो सकता है । ऐसा सोचना भी अत्यंत कुरूप और जघन्य है । यह तो उसके शव को भी धारण कर लेगा, यह भी सोचना एक पाप ही है ! यह तो इस योग्य भी नही । तो क्या वह चित्र चाँदी के डिब्बे मे होगा ? वह चाँदी, जिससे सोने का मूल्य दस गुना अधिक है ! यह भी निकृष्ट विचार है। पोर्शिया के चित्र जैसा मूल्यवान रत्न कभी भी सोने से नीच स्तर की धातु मे नही रखा जा सकता। इस पर एक सोने का अंगरेजी सिक्का है, जिस पर एक फरिश्ते की तस्वीर बनी है, और वह भी बाहर की तरफ बनी है, और यहाँ एक जीवित देवदूत— पोर्शिया, इसके भीतर है, इसी सोने के डिब्बे में, सबकी दृष्टि से ओझल ! मुझे कृपया चाबी दे। मै यह सोने का डिब्बा चुनता हूँ, जो भी भाग्य में होगा देखा जायेगा।

पोर्शिया : श्रीमन्त राजकुमार ! चाबी यह रही । यदि आपको मेरा चित्र इस डिब्बे मे मिलेगा तो मै आपकी पत्नी बन जाऊँगी ।

[राजकुमार सोने का डिब्बा खोलता है।]

मोरक्को० : उफ़ कितना भयानक ! यह मै क्या देख रहा हूँ । इसमें तो एक हड्डी का कपाल रखा है और उसके खोंखल मे एक कागज़ रखा है । क्या लिखा है इस पर! (पढ़ता है।)

हर चीज़ चमकती है जो, होती नही सोना,
तुमने नही सुनी है क्या ये बात कही पर ?
बाहर की इस चमक को यों ही देखकर कितने,
बरबाद है नही हुए अनजान यही पर ?

बाहर सजा जो कीमती लगता है मकबरा
भीतर सिवा कीड़ों के नहीं और है उसमें,
जितने हो वीर यदि कहीं होते चतुर वैसे,
कुछ और ही होता तुम्हारे भाग्य के घर में!
अंदाज गलत हो गया साबित है तुम्हारा,
आगे बढ़ो, बाकी न रहा, काम तुम्हारा!
ओ ताप बिदा! शीत की ठिठुरन है तुम्हारी!
दुर्भाग्य है, श्रम भी गया, यह हार तुम्हारी!

बिदा! पोर्शिया! अब समस्त सम्मानों से पूर्ण बिदा लेने का धैर्य भी तो इस हृदय में नहीं रहा। मुझ जैसे पराजित प्रेमी को तो तुरंत चला जाना चाहिये।

[सेवकों के साथ प्रस्थान। तुरही-निनाद]

पोर्शिया : कितनी आसानी से छूट गई हूँ। पर्दे गिरा दो। इस रंग[1] के प्रेमी मुझे इसी भाँति चुनें।

दृश्य ८

[वेनिस-पथ]

[सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रवेश]

सैलैरिनो : क्यों भई! मैंने बैसैनियो को जहाज़ पर देखा है। उसके साथ ही ग्रेशियानो भी गया है। और मुझे विश्वास है कि उसमें लौरेन्जो नहीं था।

सैलैनियो : लेकिन उस नीच यहूदी ने तो चिल्ला-चिल्लाकर ड्यूक से शिकायत की और वे भी अब उसके साथ बैसैनियो के जहाज़ की

---

१. काले रंग के प्रति उदासीनता का भाव।

तलाशी लेने गये है।

सैलैरिनो : लेकिन वे तो देर में पहुँचे, जहाज़ तब तक जा चुका था। लेकिन ड्यूक को पता चला कि लौरेन्जो और उसकी प्रिया जैसिका अन्यत्र ही एक विहार-नौका मे देखे गये थे। और फिर ऐन्टोनियो ने ड्यूक से यह दृढ़ता से कहा कि वे बैसैनियो के साथ उसके जहाज़ मे नही थे।

सैलैनियो : मैने कभी ऐसा उलझा हुआ आवेश नही देखा, इतना विचित्र, इतना भयानक और फिर भी ऐसा डाँवाडोल तथा परिवर्त्तनशील! सड़कों पर वह कुत्ता यहूदी चिल्लाता था : 'मेरी बेटी! हाय मेरे रुपये! हाय मेरी बेटी! एक ईसाई के साथ भाग गई! हाय मेरा रुपया ईसाई के हाथ जा लगा! न्याय दो! कानून! बचाओ मुझे! मेरे रुपये और मेरी बेटी! मुहर लगा एक थैला था, और मुहर लगे दो सिक्कों से भरे थैले थे, और वह सब मेरी ही बेटी चुरा ले गई! मेरे रत्न! दो हीरे! कितने कीमती थे वे! मेरी बेटी चुरा ले गई! न्याय दो! लड़की को पकड़ो! उसी के पास मेरे हीरे है, मेरे सिक्के है!'

सैलैरिनो : क्यो देखो न! वेनिस के सारे लड़के उसके पीछे चिल्लाते फिरते है :

मेरे हीरे, मेरी बेटी, मेरे सिक्के!

सैलैनियो उस अच्छे आदमी, हाँ मै अच्छा ही कहता हूँ, ऐन्टोनियो को इस यहूदी का कर्ज़ नियत समय पर चुका देना चाहिये वर्ना वह आफत मे पड़ जायेगा।

सैलैरिनो . कुमारी मेरी की सौगंध।[1] तुमने खूब याद दिलाया।

---

१ कुमारी मेरी—ईसा मसीह, ईसाइयो के पैगम्बर, की माता, जिसने कुमारावस्था में ईश्वर के पुत्र को जन्म दिया था।

कल मेरी एक फ्रांसीसी से बातें हुई थी। उसने बताया कि वेनिस का जहाज, जो बहुत ही कीमती सामानों से लदा हुआ था, वह इंगलैंड और फ्रांस के बीच के समुद्र में नष्ट हो गया। मुझे फौरन ऐन्टोनियो का ख़याल आ गया और मैंने मन ही मन परमात्मा से प्रार्थना की कि कहीं वह जहाज ऐन्टोनियो का न हो।

सैलेनियो : यही ठीक रहेगा कि तुम जो सुनो सो ऐन्टोनियो को बता दो, लेकिन ऐसे अचानक सूचना न देना कि वह दुख का धक्का नही झेल सके।

सैलेरिनो : सच कहता हूँ। ऐन्टोनियो से बढकर दयालु हृदय मनुष्य मुझे तो नहीं मिला। मैंने उसे बैसैनियो से बिछुड़ते देखा था। बैसैनियो ने उससे कहा कि वह जल्दी ही लौटेगा। लेकिन ऐन्टोनियो ने कहा : 'नहीं, मेरे लिये अपने काम का हर्ज मत करना बैसैनियो! पूरा काम करके आना। कही ऐसा न हो कि यहूदी से मेरी लिखा-पढ़ी की याद करके तुम अपने प्रेम में व्याघात डालो। प्रसन्न रहो, और वहाँ प्रेम की सफलता प्राप्त करने योग्य बातों में ही जी लगाओ।' और यह कहते हुए ऐन्टोनियो की आँखे आँसुओं से भर गई। उसने मुँह फेर लिया और अत्यंत स्नेह से उससे हाथ मिलाया। इस तरह उनका वियोग हुआ।

सैलेनियो : ऐसा लगता है कि केवल बैसैनियो के प्रेम के लिये ही ऐन्टोनियो जीवित रहता है। मै कहता हूँ, मेरे साथ चलो। उसे ढूँढ़े और उसके गमगीन दिल को हम राहत पहुँचाने के लिये कोई तरकीब करें।

सैलेरिनो : हाँ चलो। फौरन चलो।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के घर का एक कमरा]

[नैरिसा का एक सेवक के साथ प्रवेश]

नैरिसा : जल्दी करो जल्दी। पर्दा हटा दो। अरागोन के राजकुमार शपथ ग्रहण कर चुके है और अब शीघ्र ही चुनाव करने आने वाले है।

[तुरही-निनाद। अरागोन के राजकुमार, पोर्शिया तथा अन्य सेवकों का प्रवेश]

पोर्शिया : वह देखिये, वे रहे डिब्बे, कुलीन राजकुमार! यदि आप वह डिब्बा चुन लेगे, जिसमें मेरा चित्र है, तुरंत ही हमारा विवाह हो जायेगा, किंतु यदि आप असफल रहे तो श्रीमान् को चुपचाप लौट जाना पड़ेगा तुरत।

अरागोन० : मैने जिन तीन बातो की कसम खाई है, मै उन तीनो का पालन करूंगा। पहली यह कि मैने कौन-सा डिब्बा चुना यह मै किसी को नही बताऊँगा, दूसरी यह कि यदि मै असफल रहा तो किसी भी स्त्री से विवाह नही करूंगा और अंतिम यह कि यदि मेरे भाग्य ने मेरा साथ नही दिया तो तुरंत यहाँ से चला जाऊँगा।

पोर्शिया : मुझ जैसी व्यर्थ वस्तु के लिये जो भी यहाँ आते है, वे यही प्रतिज्ञा करने को बाध्य होते हैं।

अरागोन० : और मैंने भी अपने को इसी के लिये प्रस्तुत किया है। मेरे भाग्य! मेरे हृदय की आशा पूर्ण कर! सोना, चाँदी और राँगा! 'जो मुझे चुनता है, उसे अपना सब कुछ दाँव पर लगाना पड़ता है।' तो जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, ओ राँगे! तुम्हे तो मेरे चुनाव के योग्य होने के लिये पहले सुदर बनना पड़ेगा।

और सोने का डिब्बा क्या कहता है ? अरे ! देखूँ ! 'जो मुझे चुनता है, उसे वही मिलता है, जो सब लोग चाहते है।' जो सब-लोग चाहते है ! सब लोग का मतलब तो हुआ कि मूर्ख भीड़ भी हो सकती है ! और भीड़ असली मतलब को कब समझती है, वह तो बाहरी चमक पर लट्टू हुआ करती है। उसके अलावा वह और कुछ थोड़े ही समझती है ! जैसे अबाबील बाहरी दीवार पर घोंसला बनाती है, जहाँ उसे आँधी-पानी सब सहना पड़ता है, वैसी ही उसकी भी बुद्धि होती है। जो सब लोग चाहते है, मै उसे नही चुनूँगा, क्योंकि मै साधारण आदमियों के साथ ही नही कूद पड़ूँ और बर्बर भीड़ में गिना जाऊँ ऐसा मुझे बिल्कुल पसंद नही। देखूँ ! चाँदी के डिब्बे पर क्या लिखा है? शायद इसी मे वह खजाना हो ! 'जो मुझे चुनता है, उसे वही मिलता है, जिसके कि वह योग्य होता है।' खूब कहा ! सच-मुच ऐसा कौन है जो भाग्य को धोखा देकर सम्मान प्राप्त कर सके और भीतर गुण भी न हों ? अपने ही गुण से सम्मान प्राप्त हो सकता है, यही अतिम सत्य मानना उचित है। आह ! कितना अच्छा होता यदि संपत्ति, पद और शक्ति केवल योग्यता के आधार पर प्राप्त होती, न कि घूसखोरी और ऐसे ही बुरे रास्तों से ! तब न जाने कितने ही सम्मान पाते जो आज अस-म्मानित है ! और जो आज्ञा दे रहे हैं, उनमें से जाने कितने आज्ञा का पालन करने को बाध्य होते ! न जाने कितने ऊपर उठ जाते और कितने गिर जाते ! और मेरी पसंद ! मुझे चुनाव जल्दी करना चाहिये ! लिखा है : 'जो मुझे चुनता है वह वही प्राप्त करता है, जिसके कि वह योग्य होता है।' मै वही प्राप्त करूँगा जिसके कि मै योग्य हूँ। मुझे इसकी चाबी दीजिये। और

तुरत मेरे भाग्य को खोलिये।

[चाँदी का डिब्बा खोलता है।]

पोर्शिया : बहुत देर सोचकर भी यह नतीजा निकला।

अरागोन० : यह क्या है ? एक मूर्ख चुँदे विदूषक का चित्र ! इस पर कुछ लिखा भी है। पढ़ूँ तो सही। यह चित्र ! पोर्शिया के चित्र से कितना भिन्न ! मेरी आशाओं और योग्यताओ के कितने विपरीत ! 'जो मुझे चुनता है, उसे वही मिलता है जिसके कि वह योग्य होता है।' तो क्या मैं इस मूर्ख के शीश-चित्र से अधिक कुछ भी प्राप्त करने की योग्यता नही रखता ? क्या यही मेरा इनाम है ? क्या मै इससे अधिक कुछ भी प्राप्त करने की योग्यता नही रखता ?

पोर्शिया : अपराध करना और न्याय करना यह दो भिन्न कार्य्य हैं ! और दोनो विपरीत प्रकृति के है।

अरागोन० : देखूँ क्या लिखा है।

[पढ़ता है।]

चाँदी है सात बार तपी आग मे डालकर,
तप तप मिला है रूप इसे दीप्त यह उज्ज्वल,
जिसका नही निर्णय कभी होता है गलत देख
अनुभव उसे तपा चुका है कर चुका निर्मल,
कुछ लोग है जो बस सुखो की चाह में पागल
ऊपर की चकमको मे सदा भागते व्याकुल
उनकी खुशी उस चाहना की भाँति है चंचल
कुछ भी नही है सार वहाँ खेल है पल पल।
कुछ और है जो बन बड़े फिरते है बुद्धिमान
भीतर मगर है मूर्ख ही, ऊपर से सुघर हैं—

चाँदी में धरे मूर्ख के इस चित्र के समान
दिखते हैं और कुछ मगर, भीतर वे और है।
दौलत से छिपाये हुए फिरते हैं मूर्खता
पैसे की आड़ में चतुर बन कर है घूमते,
उनकी किसी से भी भले शादी हो जहाँ में
रहते हैं मूर्ख ही सदा, कैसे भी झूमते!
मौका निकल गया है, चलें आप, देर क्यों?
यह चित्र सवा सेर है, हैं आप शेर क्यों?

अब अगर मैं यहाँ रुकता हूँ तो और भी अधिक मूर्ख प्रमाणित होऊँगा। कितना मूर्ख था मैं कि पोर्शिया को चुनने आया और कितना अधिक मूर्ख हूँ कि मुझे कुछ भी नही मिला। बिदा! सुदरी! बिदा! मै अपनी प्रतिज्ञा का पक्का बना रहूँगा और अपने दुर्भाग्य को धैर्य्य से सहन करूँगा!

[अरागोन का राजकुमार तथा सेवक प्रस्थान करते हैं।]

पोर्शिया : एक और पतंगा मोमबत्ती से झुलस गया है। आह! यह मूर्ख जो इतने चतुर बनते है, चुनाव के पहले कितना समय लेते है और सदैव ही उनकी मूर्खता गलत चुनाव करने की ओर ही उन्हे धकेल देती है।

नैरिसा : पुरानी कहावत कितनी सच्ची है कि शादी और फाँसी पूरी तरह से किस्मत के हाथ हैं।

पोर्शिया : चलो, पर्दा गिरवा दो नैरिसा!

[एक सेवक का प्रवेश]

सेवक : मालकिन कहाँ हैं?

पोर्शिया : क्यों मैं यहाँ हूँ! क्या बात है?

सेवक : मालकिन! एक जवान वेनिसवासी अभी आया है। वह कहता

है कि उसके स्वामी अभी आने वाले है। वह अपने मालिक की तरफ़ से बड़ी कीमती सौगात लाया है। उन्होने नमस्ते कहलवाया है। ऐसा सुंदर प्रेम का दूत तो मैंने नही देखा। सुखद ग्रीष्म ऋतु[1] की अगवानी करने वाले मधुर वसंत का अत्यत मधुर दिवस भी अपने स्वामी के आने की सूचना देने वाले इस सेवक की भाँति सुदर नहीं होता।

पोर्शिया : बस-बस ! इतनी प्रशंसा क्यों उँडेले दे रहा है। कही इतनी तारीफ़ करने के बाद यह मत कहना कि नया अतिथि तेरा ही रिश्तेदार भी है। चलो नैरिसा ! मै उस प्रेमदूत को देखने को आतुर हो उठी हूँ कि इतने माधुर्य्य और सौंदर्य्य का प्रतीक बन कर आया है।

नैरिसा : हे कामदेव ! ऐसा कर कि यह बेसैनियो ही हो।

[प्रस्थान]

---

१. यूरोप में ग्रीष्म ऋतु सुहानी मानी जाती है, क्योकि वहाँ जाड़ो में कुहरा, बर्फ़ आदि रहते हैं।

तीसरा अंक

दृश्य १

[वेनिस-पथ]

[सैलैनियो और सैलैरिनो का प्रवेश]

सैलैनियो : सट्टे की दूकान की क्या खबर है ?

सैलैरिनो : अभी तो यही बात पक्की मानी जा रही है कि ऐन्टोनियो का माल लदा जहाज इंगलिश चैनल की लहरों मे डूब गया। शायद उस स्थान को गुडविन सैंड्स कहते है। वह एक बहुत ही खतरनाक रेतीला तीर है जहाँ बहुत बड़े-बड़े और मजबूत जहाज भी डूब गये है। अगर अफवाह को इस बार सत्य माना जाये तब न ? अक्सर ही इन अफवाहों से कितनी गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं।

सैलैनियो : मै कितना नहीं चाहता कि यह ऐन्टोनियो के जहाज़ के नाश की खबर भी वैसी ही झूठ निकले जैसे वह बुढ़िया वाली झूठ है कि वह अदरक मिली केक खाती रही और अपने पड़ोसियों को यह खयाल देती रही कि अपने तीसरे पति की मौत पर रो रही थी। लेकिन सारी बड़ी बातो को छोड़कर, बिना इधर-उधर भटके सचाई तो यह है कि ऐन्टोनियो बहुत ही उदात्त और उदार है। काश, मै उसकी प्रशसा के लिये नये ही शब्द ढूढ पाता !

सैलैरिनो : अपनी बात तो पूरा करो। मै अंतिम वाक्य सुनने के लिये आतुर हो रहा हूँ।

सैलैनियो : क्या कहते हो ? सारांश यही है कि ऐन्टोनियो का एक जहाज़ डूब गया है।

सैलैरिनो : एक तो पहले ही वह नुकसान उठा चुका है और यह और ! हे भगवान ! ऐसा न कर !

सैलेनियो : भगवान तुम्हारी बात पर तथास्तु कहे। कही शैतान (शाइलॉक) न आ टपके यहाँ अड़ंगा डालने को। लो वह आ रहा है।

[शाइलॉक का प्रवेश]

अरे शाइलॉक ! सट्टे की दूकान की ताजा खबर क्या है ?

शाइलॉक : तुम स्वय ही जानते हो और फिर तुमसे बढ़कर इस मामले में कौन जानता है सैलैरिनो ! कि मेरी लड़की जैसिका भाग गई है।

सैलैरिनो : यह तो सच है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो उस दर्जी को भी जानता हूँ जिसके बनाये कपड़े पहनकर वह भागी है।

सैलेनियो : पर शाइलॉक ! तुम नही जानते कि तुम्हारी लडकी बिल्कुल जवान हो गई है और जवान होने पर लड़कियाँ हमेशा माँ-बाप को छोड़ जाया करती है।

शाइलॉक : अरे मुझे छोड़कर क्या गई अपना सत्यानाश कर गई।

सैलैरिनो : हाँ, अगर शैतान इंसाफ करेगा तब तो वह यही कहेगा कि उसका नाश हो गया।

शाइलॉक : मैं इस बात को कभी स्वीकार नही कर सकता कि मेरी ही बच्ची मुझसे ही बगावत करे ! मेरे ही खिलाफ !

सैलैरिनो : तुम्हारी देह मे और जैसिका की देह में अब उतना ही भेद है जितना कोयले और हाथी दाँत मे। तुम्हारे और उसके रक्त मे वही भेद है जो सफेद और लाल शराब में। पर क्या तुमने समुद्र मे ऐन्टोनियो के जहाज के डूब जाने की भी कोई

खबर सुनी है ?

शाइलॉक : यह दूसरी बुरी खबर है, क्योंकि इससे ऐन्टोनियो मुझे बड़ा नुकसान पहुँचायेगा, वह तो यारों को उधार दे-देकर ही नंगा हो गया है। वह तो इतना बरबाद हो गया है कि उसमें तो सट्टे की दूकान तक आने की हिम्मत ही नही रही है। वही वह एक वक्त कितना सजा-धजा, उम्दा-उम्दा कपड़े पहनकर आया करता था, पर उसके पास अब क्या धरा है ? लेकिन मुझे चुका दे बस यही ध्यान रखे। मुझे तो वह अभिशप्त ऋणदाता कहता था। अपने प्रतिज्ञा-पत्र का स्मरण रखे। ईसाई होने के नाते वह तो बिना ब्याज के रुपये उधार दिया करता था। उसे अपने प्रतिज्ञा-पत्र की याद रखनी चाहिये।

सैलेरिनो : अच्छा, मान लो ऐन्टोनियो समय पर तुम्हारा धन न दे सका, तो मुझे विश्वास है कि तुम उसका माँस नही काटोगे। उसके माँस का तुम करोगे भी क्या ?

शाइलॉक : मै उस गोश्त को मछलियाँ पकड़ने के लिये इस्तेमाल करूँगा। अगर और कोई फ़ायदा मुझे नही होगा तो कम से कम मेरी वह प्रतिहिंसा तो तृप्त होगी, जो उसके प्रति मेरे मन में पलती आ रही है। उसने अन्य व्यापारियों में मेरे मान को घटाया है और बिना ब्याज के रुपया उधार दे-देकर उसने मुझे बड़ी भारी हानि भी पहुँचाई है। वह तो मेरी हानि पर आनंद मनाता रहा है और मेरे लाभ को तो उसने सदा मजाक उड़ाया है। उसने मेरी सफलताओं का विरोध किया है, नीचा गिराया है और वह तो हम यहूदियों को निकृष्ट समझता है। वह मेरे हर व्यापारी मामले में टाँग अड़ाता है, और न सिर्फ़ उसने मेरे दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है, उसने मेरे शत्रुओं को मेरे

विरुद्ध भड़काया भी है। और यह सब किसलिये? सिर्फ इस-लिये कि मै एक यहूदी हूँ। लेकिन एक यहूदी में और आदमियों से फर्क ही क्या है? क्या यहूदी के औरों की तरह आँख, हाथ, इद्रिय, चेतना और इच्छाएँ नहीं होती? क्या वह भी वही खाना नही खाता? क्या वह भी उन्ही शस्त्रों से घायल नही होता? क्या वह भी उन्ही रोगों से पीड़ित नही होता? क्या वह भी उन्ही दवाओं से ठीक नही हो जाता? क्या ईसाइयों की भाँति ही यहूदियों को गर्मी में गर्मी और जाड़ों में सर्दी नहीं लगती? क्या तुम हममे शस्त्र भोंकते हो तो हमारा लहू नही बहता? क्या तुम्हारे गुलगुली मचाने पर हमें हँसी नही आती? क्या तुम्हारे विष देने पर हम भी ईसाइयों की भाँति ही नही मर जाते? तुम हमे हानि पहुँचाते हो तो क्या हममें प्रति-हिंसा भी नही जागनी चाहिये? यदि हम तुमसे इन सब बातों में मिलते है, तो हम अपनी हानि करने वालों से प्रतिशोध लेने मे भी तुम्हारे समान ही रहेगे। यदि यहूदी किसी ईसाई की हानि करता है तो क्या वह बदला नही लेता? लेता है, लेता है! अगर ईसाई एक यहूदी को नुकसान पहुँचाता है, क्या उसे भी एक ईसाई की भाँति प्रतिशोध नही लेना चाहिये? बदला लेने में मैं तो तुम ईसाइयों के उदाहरण का ही अनुसरण करूँगा। सारे शाप मुझे ग्रस ले यदि मै ईसाई से प्रतिशोध लेने में कोई कमी दिखाऊँ। मै भी उन्ही की भाँति उत्कट घृणा दिखलाऊँगा।

[एक सेवक का प्रवेश]

सेवक : श्रीमान्! स्वामी ऐन्टोनियो अब घर पर है और आप दोनों से कुछ बाते करना चाहते है।

सैलेरिनो · हम तो उन्हे हर जगह ढूँढते फिर रहे है।

[ट्यूबॉल का प्रवेश]

सैलैनियो : यह लीजिये। इसकी ही जाति का एक और व्यक्ति आ गया। इन दोनों यहूदियों से बदमाश तीसरा ढूँढ़े से भी नहीं मिलेगा, बशर्ते कि शैतान ही ख़ुद अब यहूदी नही बन जाये।

[सैलैनियो, सैलैरिनो और सेवक का प्रस्थान]

शाइलॉक : कहो ट्यूबॉल! क्या ख़बर लाये हो जिनोआ से? क्या मेरी पुत्री वहाँ मिली?

ट्यूबॉल : मैंने तो जहाँ-जहाँ उसकी ख़बर सुनी, वहीं-वही गया, पर वह मुझे तो कहीं भी नही मिली।

शाइलॉक : कितना दुर्भाग्य है, क्योंकि वह एक ऐसा कीमती हीरा भी अपने साथ ले गई है जिसे मैंने जर्मनी में फ्रैंकफोर्ट के मेले में २००० ड्यूकैट देकर खरीदा था। कभी भी यहूदी जाति पर अब का-सा अभिशाप नहीं पड़ा। कम से कम मैंने तो अनुभव नही किया। २००० सिक्के चले गये, सिर्फ़ इसलिये कि जैसिका अन्य रत्नो के साथ उस हीरे को भी ले गई! बहुत कुछ ले गई वह तो! काश, वह सारे गहने और जवाहिरात पहने हुए आकर मेरे चरणो पर गिर कर मर जाती! मेरे सारे सिक्के लिये काश वह ताबूत में बंद मेरे पास पड़ी होती। कम से कम इस तरह मेरे सिक्के और मेरे जवाहिरात तो मेरे पास लौट आयेगे! लेकिन अभी तक इन भागने वालों का कुछ भी पता नही लगा है और उन्हे ढूँढने में ही मेरी बहुत हानि हुई है। वजाय इसके कि इससे मुझे लाभ होता, नुकसान पर नुकसान हो रहा है। चोर ले गया इतना माल! और अब चोर की ढुंढाई में फिर गया इतना माल! न कोई तृप्ति, न प्रतिशोध, कोई दुर्भाग्य नहीं जो मेरे कंधों पर नहीं उतरता, कोई आह

नहीं, सिर्फ मेरी साँसे और आँसू भी कही हैं तो बस मेरी आँखों में।

ट्यूबॉल : नही, तुम्ही एक अकेले अभागे नहीं हो। मैंने जिनोआ में सुना था कि ऐन्टोनियो…

शाइलॉक : क्या ? क्या सुना था ? कहो न ? मुसीबत पड़ी है ? दुर्भाग्य छाया है ?

ट्यूबॉल : उसका त्रिपोलिस से आने वाला एक जहाज डूब गया।

शाइलॉक : हे भगवान ! हे दयालु ! क्या यह सच है ? क्या यह ठीक है ?

ट्यूबॉल : उस डूबे जहाज़ के कुछ बचे हुए खलासियो से मैंने बातें की थी।

शाइलॉक : मेरे प्यारे ट्यूबॉल, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। बड़ी प्यारी ख़बर है ? तुम्हें वे लोग जिनोआ में मिले थे ?

ट्यूबॉल : हाँ, जिनोआ मे ही मैंने तुम्हारी लड़की के बारे में सुना था कि वह वहाँ एक रात रुकी थी और उसने उसी रात में अस्सी ड्यूकैट ख़र्च कर डाले थे।

शाइलॉक : कितनी निर्ममता से चोट कर रहे हो मुझ पर ! वह धन तो मैं सदा के लिये खो चुका। हे भगवान ! एक बैठक मे ही अस्सी सिक्के लुटा दिये। अस्सी सिक्के !

ट्यूबॉल : जिनोआ से मेरे साथ कुछ ऐसे लोग भी आये है वेनिस तक, जिन्होने ऐन्टोनियो को कर्ज दे रखा है। उन सबका निश्चय है कि बहुत शीघ्र ही अब ऐन्टोनियो दिवालिया हो जायेगा।

शाइलॉक : वाह-वाह ! क्या उम्दा ख़बर है। अब मै उससे अपना बदला लूँगा। मै उसका दिल निकालूँगा। यह सुनकर तो मैं सचमुच बहुत खुश हुआ हूँ।

ट्यूबॉल : एक सौदागर ने मुझे एक अँगूठी दिखाई थी जो तुम्हारी

लड़की की थी, जिसे देकर जैसिका ने एक बंदर ख़रीदा था।

शाइलॉक : सत्यानाश जाये उसका। ट्यूबॉल ! तुम्हारे शब्द मुझे काटे दे रहे है। वह अंगूठी जिस पर वह नीला नग जड़ा था, वह मेरे विवाह के पहले मेरी पत्नी ने मुझे उपहार दिया था। मै एक बंदर क्या पूरे बंदरों के जंगल के बदले मे भी उस अंगूठी को न देता।

ट्यूबॉल : लेकिन ऐन्टोनियो का तो टाट पलट गया, इसे पक्की बात मानो !

शाइलॉक : जो तुम कहते हो वह बिल्कुल ठीक है। मेरे लिये एक अफसर ढूंढ़ो और दो हफ़्ते के लिये उसे मेरे काम के लिये तय कर लो। अगर वह रुपया नही चुकाता तो मैं तो उसका हृदय निकालूंगा। एक बार वह वेनिस से निकल जाये तो खूब पैसा पैदा कर सकता हूँ। चलो ट्यूबॉल ! मुझसे पवित्र मंदिर में मिलना, बस वही मिलेंगे भूल न जाना।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[बेलमोन्ट : पोर्शिया के घर का एक कमरा]

[बैसैनियो, पोर्शिया, ग्रेशियानो, नैरिसा और सेवकों का प्रवेश]

पोर्शिया : मै कहती हूं, आप तनिक रुकिये न। एक-दो दिन ठहरिये, बाद मे डिब्बा चुन लीजिये। क्योंकि अगर गलत चुन लिया तो फिर आप यहाँ रुक थोड़े ही पायेंगे ! इसीलिये ज़रा रुकिये। मुझे न जाने क्यों, लगता है, प्रेम की बात नहीं है, कि आप मुझसे नही बिछुड़ेंगे। और आप स्वयं जानते हैं कि ऐसी सलाह से आप यह मतलब नहीं लगायेंगे

कि मै आपको नही चाहती। लेकिन कही आप मुझे गलत न समझ जाये। और फिर स्त्री सोचती ही रह जाती है, कह भी तो नही पाती। महीने-दो महीने ठहरिये, फिर उस खतरे मे हाथ डालिये। मैं ही आपको तरकीब सिखाऊँगी कि आप ठीक डिब्बा कैसे चुने, पर क्या करूँ यह तो विश्वासघात होगा और यह मै कभी नही करूँगी। हो सकता है, आप मुझे नही पा सके। लेकिन इस खयाल के आते ही मेरी इच्छा होती है कि मै वह भी कर डालूं जिसकी कि मुझे आज्ञा नही है। अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दूं! बला आये आपकी इन आँखो पर जिन्होंने मुझ पर जादू कर दिया है और मेरे दिल के दो हिस्से कर दिये हैं—एक मे आपके प्रति प्रेम है और दूसरे मे मेरे स्वर्गीय पिता के प्रति मेरा कर्त्तव्य! पर जिसे मैं अपना कहती हूँ वह भी तो आपका ही है। मैं तो बिल्कुल आप ही की हो गई। अभिशप्त हैं यह दिन कि स्वामी और उसकी संपत्ति के बीच एक भीत खड़ी है। प्रेम के क्षेत्र मे मै आपकी हूँ। किंतु आपकी स्त्री तो नही हूँ। कही आपने गलत चुनाव करके मुझे नही प्राप्त किया तो भाग्य ही उजड़ गया समझिये! अरे, मैं कितना क्या कुछ नही बक गई? पर केवल इसी लिये कि आपको जल्दी चुनाव के इस जंजाल से रोक सकूँ!

बैसैनियो : पहले मुझे चुनाव करने दो क्योंकि अनिश्चय की परिस्थिति मे अधिक दिन तक रुका रहना मेरे लिये संभव नहीं है। इससे तो मेरी यातना बड़ी तीव्र होगी, और मै लटका ही रहूँगा।

पोर्शिया . लटके तो देशद्रोही रहते हैं। आओ उस धोखे को स्वीकार करो जो कि तुम्हारे प्रेम से मिला हुआ है।

बैसैनियो : कोई धोखा भी है, यह न सोचो। मै तो संदेह के उन भावों

का शिकार हूँ, जो मुझे यह डर दिखाते है कि कहीं तुम्हारा प्रेम प्राप्त करने मे मै असफल न रह जाऊँ। मेरे प्रेम में धोखा कहाँ? बर्फ़ और आग क्या मित्रों की भाँति साथ-साथ रह सकती हैं?

पोर्शिया : लेकिन मै विश्वास नही करती। पुरुषों का क्या ? अपनी मुसीबत टालने को वे न जाने किस मौके पर क्या कह जाते है!

बैसैनियो : यदि तुम जीवन-दान देने का आश्वासन दो; तो मैं असली बात बता सकता हूँ।

पोर्शिया : कहो और जियो !

बैसैनियो : कहूँ और प्रेम करूँ—यही मेरी असली बात का सारा सारांश है। यह कैसी आनंददायिनी यातना है कि मुझे सताने वाला ही मुझसे कहता है कि मै अपनी वेदना से मुक्त हो जाऊँ? मुझे डिब्बों के पास ले चलो। मै अपने भाग्य का निर्णय करना चाहता हूँ।

[डिब्बे के सामने से पर्दा खिचता है।]

पोर्शिया : अच्छी बात है चलो। मै इनमे से एक में बंद हूँ। यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो अवश्य मुझे ढूँढ़ निकालोगे। नैरिसा, और सब लोग एक तरफ हो जाओ! चुनाव के समय मधुर संगीत होने दो, ताकि यदि ये असफल भी हो गये तो उस हंस के समान संगीत-माधुरी में तन्मय लौट सकें जो कि मरते समय गाता है।[1] और इस तुलना को पूर्ण करने के लिये मेरे नयनों से गिरते अश्रु धारा का काम देंगे। किंतु यदि ये सफल होते है तो संगीत ही तूर्य्यनाद हो जायेगा, जैसे कि सिंहासनारोहण करते समय नये राजा के लिये होता है। और यह संगीत उतना ही मधुर होगा, जितना कि सुखनिंदिया से दूल्हे को विवाह के दिन

---

१. कवि-सत्य—यूरोप में प्रचलित।

के लिये जगानेवाला संगीत होता है। बैसैनियो महावीर हरक्यूलिस की भांति बढते है, किंतु हरक्यूलिस तो केवल योद्धा था, उसमे इनका-सा प्रेम कहाँ था। ठीक वैसे ही जैसे ट्रॉय के राजा लाओमिडॉन की पुत्री हिसिओन को उस समय हरक्यूलिस छुड़ाने गया था जब कि ट्रॉय की रोती हुई प्रजा राजकुमारी को समुद्री दैत्य की बलि चढाने जा रही थी। मै खड़ी हूँ यहाँ उसी हिसिओन की भाँति, और यह नैरिसा, यह मेरी सेविकाएँ खड़ी है उन ट्रॉय नगरवासिनी स्त्रियो की भांति जो उस महान् साहस-पूर्ण कार्य्य को अश्रुपूर्ण नयनों से देख रही थी।

बढ़ो! मेरे हरक्यूलिस! तुम्हारी सफलता पर मेरा जीवन, मेरे जीवन का आनंद निर्भर है। यदि तुम असफल होते हो तो वही मेरे लिये मृत्यु है। मै इस संघर्ष को तुमसे भी अधिक लगाव से देखूँगी, क्योंकि तुम भी इससे इतने प्रभावित नही होओगे।

[बैसैनियो जब डिब्बो का निरीक्षण करता हुआ अपने आप बोलता है, तब संगीत सुनाई देता है।]

[गीत]

क्षणभंगुर अस्थायी चंचल—
प्रेम कहाँ रहता है छिपता ?
मन में, या विचार में बोलो,
कब जन्मा वह कैसे पलता ?
बोलो, बोलो !
नयनों मै वह जन्म नया धर
रहता तब तक 'जीवित निर्भर

जब तक लक्ष्य उसे है दिखता,
सच्चा प्रेम नही यह करता !
ऐसे छलमय चपल प्रेम को
दूर हटाओ, दूर हटाओ,
मैं घंटे अब करूँ निनादित
चलो बिदा दो उसको आओ !

सब : चलो बिदा दो, उसको आओ !

बैसैनियो : इसी प्रकार वस्तु के वाह्य रूप और आंतरिक रूप एक दूसरे से सुदूर हो सकते है। संसार केवल वाह्यरूप से ही प्रतारित होता रहता है। न्यायालय में, जब तर्क नहीं रहता, तब भी वकील के शब्दाडंबर से कुरूप अन्याय छिपा रह जाता है। धर्म के क्षेत्र में कोई भी अनर्गलता क्यों न हो, शास्त्र का प्रमाण देकर सब कुछ को स्वीकार कर लिया जाता है ! कौन-सी कुरीति या बुराई नही है जो अपने को किसी अच्छाई के जाल से नहीं ढँकी रहती ? कितने ऐसे कायर, जिनके हृदय धसकती बालू से भी कच्चे होते है, देखने मे परमवीर हरक्यूलिस की-सी दाढी नही रखते, योद्धाग्रह मगल देवता की भाँति कठोर दृष्टि से नही देखते ? किंतु न उसमें साहस होता है, न शक्ति ही। सौदर्य्य को ही ले ! कितना ही तो उस शृंगार और प्रसाधन के कारण आकर्षक होता है, चाहे वह सामग्री हाट से कितने ही ऊँचे मोल पर क्यों न खरीदी गई हो। किंतु यह वाह्य शृंगार तो ठोस नही होते ! यह तो कृत्रिम सौदर्य्य होता है। मिथ्यारूपसी के सुनहले साँपो-से लहराते घुँघराले केशों के साथ क्या यह सत्य नही होता कि वे किसी मृत स्त्री के ही होते है, जिन्हें वह अपने ऊपर लगा लेती है? आभूषण तो एक भयानक समुद्र

के प्रतारण-भरे तीर होते है। वह तो उस सुदर अवगुठन की भाँति होते है जो एक कृष्णवर्ण भारतीय सुदरी के मुख को ढँके रहते है। यह चतुर जाल तो बुद्धिमानों को भी ठग लेते हैं। यह सत्य होते नही, सत्य-से लगते अवश्य है। इसलिये ओ चमकदार सोने ! अतीत के राजा माइडास के भोजन ![1] मुझे तुझसे कोई काम नही। ओ चाँदी ! मनुष्य और मनुष्य के बीच ओ माध्यम के दीन साधन ! मैं तो इस दरिद्र राँगे को चुनूँगा क्योकि यह कोई झूँठा-सा वादा नही करता। इसकी सुस्ती मुझे बुलाती है, न कि सोने और चाँदी की चमक मुझे लुभा सकेगी। मै इसी को चुनता हूँ, और मुझे लगता है कि यही मुझे सफलता दिलायेगा।

पोर्शिया : (स्वगत) कितनी शीघ्र ही वे संदेहात्मक विचार, आतुर निराशा, काँपता भय, हरी आँखों वाली ईर्ष्या जैसे भाव-विलीन हो गये। आह रे प्रेम ! अपने आनद पर संयम कर, अपने हर्ष को क्रमश. मेरे मानस पर प्रस्रवित कर। कही उसकी अति न हो जाये। विभोर सुख सीमित रह, कही मर्यादा का अतिक्रमण न हो जाये।

बैसैनियो : क्या है इसमे ?

[डिब्बा खोल कर]

सुदरी पोर्शिया का चित्र ! किस दिव्य चित्रकार ने यह अद्‌भुत सौंदर्य अकित किया है। क्या यह नयन हिल रहे है या मेरे ही हिलते नयनो को यह चल दिखाई दे रहे है। यह अधखुले अधर, ऐसा लगता है जैसे इनमें से मधुश्वास निकल रहा

---

१. माइडास के स्पर्श से हर वस्तु सोना बन जाती थी। जब उसने गर्म खाना मुँह में रखा तो वह सोना बन गया और इस प्रकार मुख जल गया।

है। यही श्वास दो अभिन्न मित्रों को इतनी दूर भी कर सका है। इसी के केश-पाश के चित्रण में मानों एक जाला[1] बुन दिया है चित्रकार ने, कि इस सुवर्ण की-सी झिलमिल में मनुष्यो के हृदय फँस जायें। इतनी शीघ्र कि पतंगे भी नही फंसते होंगे। नयनों का वह अकन भी कैसे करता। एक को बनाते-बनाते ही वह अपने दोनों को भूल चुका होगा। किंतु फिर भी तो यह छाया क्या मूल सौंदर्य्य की तुलना में रखी जा सकती है? और मेरे शब्द तो इस छाया का भी सौदर्य्य पूरी तरह से प्रगट करने मे असमर्थ हो रहे है। यह क्या लिखा है, मेरे भाग्य की व्याख्या है, या सारांश ·····पढ़ूँ इसे······

[पढ़ता है।]

तुम जो कि नही भूलते हो देखकर झिलमिल
किस्मत के हो बुलंद तुम चुनते हो ठीक ठौर,
मिलती है भाग्य से तुम्हे जो चीज यहाँ पर
इसमें ही रहो खुश, न कहीं ढूँढना कुछ और,
इससे अगर प्रसन्न हो, मन में हो समझते,
आनद प्राप्त कर लिया, बाधा नहीं सहनी,
तो देख लो मुड़कर खड़ी जो सुदरी है पास
उसका करो तुम प्रेम से चुबन समझ अपनी।

क्या बात लिखी है! प्रिये पोर्शिया! आज्ञा दो कि मैं तुम्हारा चुबन कर सकूँ। (चुंबन करके) मै तो लिखित के अनुसार तुम्हारा चुबन करने आया हूँ और बदले में एक और प्राप्त करने का भी अधिकारी हूँ। मै तो अपने को एक प्रतियोगिता

---

१. शेक्सपियर ने मकड़ी का जाला लिखा है, जो अच्छा नही लगता।

का पात्र समझ रहा था, जिसमे विजेता को पुरस्कार मिलना था। ऐसा व्यक्ति जब भीड़ को जय-जयकार करते देखता है तब वह समझता है कि वह विजयी हुआ है, किंतु आशा और आशका मे डांवाडोल वह निर्णय नही कर पाता कि वह कोलाहल उसके लिये हो रहा होता है या उसके प्रतिद्वन्द्वी के लिये। ओ सुदरी! यही हाल मेरा है, क्योंकि जब तक तुम अपनी अधरो के चुबन से हस्ताक्षर नही करोगी, मुद्रा नही लगा दोगी, तब तक अपनी विजय के बारे में मुझमे संदेह ही बना रहेगा।

पोर्शिया : मेरे स्वामी बैसैनियो! आप देखते है, मै आपके सामने खड़ी हूं। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मै जो कुछ हूँ उसी में संतुष्ट हूँ और कुछ भी अधिक नही होना चाहती। किंतु आपके लिये मै साठ गुना, हजार गुना अधिक सुदर हो जाना चाहती हूँ, दस हज़ार गुना धनी हो जाना चाहती हूँ। मै तो रूप, गुण, धन, और मित्रों, सब कुछ मे सर्वश्रेष्ठ हो जाना चाहती हूँ ताकि आपकी दृष्टि मे मेरा मूल्य कहीं अधिक बढ़ जाये। किंतु मै क्या हूं? एक अशिक्षित, अयोग्य, और अनुभवहीन बालिका से अधिक तो कुछ भी नही। किंतु भाग्य से मै अभी तरुणी हूँ और सीख सकती हूँ क्योकि स्वभाव और शिक्षा से मै सुस्त नही हूँ कि मै सीख ही नही सकूँ और आपको मैंने स्वामी रूप में प्राप्त किया है इससे बढ़कर मेरे लिये क्या है? मुझे पथ-प्रदर्शन करने को आप जैसे गुरु प्राप्त हुए हैं! अब मै और जो कुछ मेरे पास है, आप ही उस सबके स्वामी है। अभी तक मै ही इस विशाल भवन की स्वामिनी थी, इन सेवकों की रानी थी, रानी थी अपनी भी, किंतु अब यह भवन, यह सेवक और स्वयं मै भी आपके है प्रभु! यह अगूठी आपको देते हुए मै सब कुछ आपको

देती हूँ। यदि आप इसे खो देंगे या किसी अन्य को दे देंगे तो यह स्पष्ट प्रगट कर देगा कि आप मुझसे और प्रेम नही करते और तब मै आपको इसके लिये तिरस्कार करूंगी।

बैसैनियो : श्रीमती ! मै अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिये उपयुक्त शब्द नही पा रहा हूँ। आवेग ने मुझे ग्रस लिया है और शब्दों के अभाव ने मुझे और मेरी सारी शक्तियों को संकट में डाल दिया, ऐसे ही जैसे आनंद की सीमा का उपप्लवन हो जाने पर उस समय जैसी लोगों की अवस्था हो जाती है जब वे अपने प्रिय शासक का मधुर भाषण सुनने पर आनद से उद्वेलित मर्मर करते है और तब अनेक स्वरों मे उठने वाला वह गुण-गान ध्वनियों के गुँथ जाने से स्पष्ट सुनाई नही देता, केवल जय-जयकार-सा प्रगट होता है। यदि यह अँगूठी मेरे पास नही रहेगी तो मेरा जीवन भी पास नही रहेगा। अरे, स्पष्ट समझ लो कि तब बैसैनियो मर जायेगा।

नैरिसा : श्रीमती और स्वामी बैसैनियो! हम जो इतने दिनों से अपनी मनोकामना के पूर्ण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, आप दोनों को हार्दिक बधाई देते है। आप दोनों सदैव सुखी रहे।

ग्रेशियानो : श्रीमान् बैसैनियो और श्रीमती ! मै आपके मनोवाछित सुखों की कामना करता हूँ, क्योकि मुझे निश्चय है आप भी मेरे लिये वही कामना करेगे। जब आपका विवाह हो, मै प्रार्थना करता हूँ कि मुझे भी तभी विवाह करने की आज्ञा दी जाये।

बैसैनियो : अवश्य ! यदि तुम पत्नी खोज सको !

ग्रेशियानो : मै आपको धन्यवाद देता हूँ, वह तो आपकी कृपा से मुझे मिल ही गई। श्रीमान्! सौदर्य्य की परख में आपके ज्ञान जितने कुशल है उतने ही मेरे भी। आपने स्वामिनी से प्रेम किया, मैंने

सेविका से और प्रेम के विषय मे मैं भी विलब नही चाहता। जिस प्रकार आपके प्रेम की सफलता असली डिब्बे के चुनाव पर निर्भर थी, उसी प्रकार मेरे प्रेम की सफलता आपके द्वारा ठीक डिब्बे के चुनाव किये जाने पर निर्भर थी। मैंने उससे घोर याचना की और इतनी कि मै थक गया, अंत मे उसने मुझसे प्रतिज्ञा की—यदि प्रतिज्ञा का विश्वास किया जा सके—कि वह मुझसे तभी विवाह करेगी जब आप उसकी स्वामिनी से विवाह कर सकेगे।

पोर्शिया : नैरिसा ! क्या यह सत्य है ?

नैरिसा : हाँ श्रीमती। है तो सत्य ! अब यदि आप प्रसन्न हो।

बैसैनियो : क्या तुम सचमुच इस विषय मे गभीर हो ?

ग्रेशियानो : हाँ श्रीमान्।

बैसैनियो : हमारी शादी की दावत तुम्हारी शादी की वजह से कही ज्यादा इज्जत हासिल करेगी।

ग्रेशियानो . कौन आ रहा है ? लौरेन्ज़ो और उसकी विधर्मी स्त्री ? और कौन ? मेरा वेनिसवासी पुराना मित्र सैलेरियो ?

[लौरेन्ज़ो, जैसिका और सैलैरियो का प्रवेश]

बैसैनियो : स्वागत लौरेन्ज़ो और सैलेरियो ! आओ ! यदि इस घर का सद्यः प्रभुत्व मुझे अधिकार देता है तो मै तुम्हारा यहाँ स्वागत करता हूँ और मेरा यह कार्य्य पूर्णतः न्याय्य है। सुंदरी प्रिये पोर्शिया ! आज्ञा दो कि मै अपने प्रिय मित्रो और स्वदेश-बधुओ का इस घर मे स्वागत करूँ।

पोर्शिया : उनका स्वागत है स्वामी ! वे हमारे अतिथि है।

लौरेन्ज़ो : मैं श्रीमान् को धन्यवाद देता हूँ। जहाँ तक मेरा प्रश्न है श्रीमान् ! मेरा इरादा यहाँ आपसे मिलने का नहीं था। मुझे

तो योंही सैलैरियो से मिलना था। उसने मुझे ऐसे ज़ोर देकर बुलाया था कि मेरे लिये अस्वीकार करना असंभव हो गया। और मै उसके साथ ही आ गया।

सैलैरियो : यह ठीक है श्रीमान्! और इसकी वजह भी थी। श्रीमन्त ऐन्टोनियो ने आपको अपनी शुभ कामनाएँ भेजी है।

[बैसैनियो को एक पत्र देता है।]

बैसैनियो : इससे पहले कि मै उनका पत्र खोलूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप पहले मुझे मेरे मित्र के बारे में बताये कि वे सकुशल तो है?

सैलैरियो : नहीं श्रीमान्, वे बीमार नहीं है, दिमाग़ी परेशानी की तो मै क्या कह सकता हूँ? उन्हें शांति और सांत्वना की आवश्यकता है। उनके पत्र से ही आपको उनकी हालत का अदाज़ा हो जायेगा।

[बैसैनियो पत्र पढ़ता है।]

ग्रेशियानो : नैरिसा! आगतुक का स्वागत करो और उन्हें अपनी ओर से शुभ वचनों का प्रदान करो। सैलैरियो, आओ, मुझसे हाथ मिलाओ। वेनिस से क्या खबर लाये हो? दयालु श्रेष्ठि-राजकुमार ऐन्टोनियो कैसे है? मुझे निश्चय है कि वे हमारी सफलता का संवाद सुनकर अत्यत प्रसन्न होंगे। हम लोग जेसन की भाँति है और हमने सुनहली ऊन प्राप्त कर ली है।[1]

सैलैरियो : काश, तुम वह सुनहली ऊन हासिल कर पाते जो ऐन्टोनियो ने खो दी है।[2]

---

१. एक प्राप्त कथा का सदर्भ है। यहाँ सुनहली ऊन से पोशिया और नैरिसा से तात्पर्य्य है।

२. यहाँ धन से तात्पर्य्य है।

पोर्शिया : इन कागजों मे अवश्य कोई बुरी खबर है क्योंकि बैसैनियो के चेहरे का रंग उड़ा जा रहा है। क्या कोई प्रिय मित्र स्वर्गवासी हुआ, अन्यथा किसी भी दृढ़ पुरुष का धैर्य्य इतना विचलित करने की सामर्थ्य किसमे है? क्या खबर बुरी से बदतर होती जा रही है कि आप इतने पीले पड़ते चले जा रहे है? क्षमा करे। बैसैनियो! मैं आपकी अर्द्धांगिनी हूँ, मुझे इस पत्र के संवाद का ज्ञान प्राप्त करने की आज्ञा दीजिये।

बैसैनियो : प्रिये पोर्शिया! इन कागजों पर कुछ बहुत ही अशुभ अक्षर लिखे है। प्रिये, तुम तो खूब जानती हो कि जब मैंने पहली बार तुमसे अपना प्रेम प्रगट किया था तब बिल्कुल स्पष्ट रूप से कह दिया था कि अपने कुलीन जन्म के अतिरिक्त मेरे पास कोई धन नही था। जो मैंने कहा था वह बिल्कुल सच था। जब मैंने कहा था मेरे पास कोई सपत्ति नही थी, तब मुझे कहना चाहिये था कि मेरी परिस्थिति बहुत ही शोचनीय थी। सचाई तो यह है कि मैने अपने एक अत्यंत प्रिय मित्र से धन उधार लिया था और मुझे उस समय धन देने के लिये उसे अपने एक घोर शत्रु से उधार लेना पड़ा था। प्रिये! उसी मित्र का यह पत्र है। यह कागज नही उसका शरीर है और इस पर अक्षर नही लिखे हैं यह उसके शरीर पर हुए वे घाव है जिनसे जीवनदायी रक्त बहा जा रहा है। किंतु सैलेरियो! क्या यह सत्य है कि उनके सारे सपत्ति से लदे जहाज विनष्ट हो गये है? त्रिपोलिस, मैक्सिको, इगलैड, लिस्बन, बार्बरी, भारत इत्यादि विभिन्न स्थानो को गये हुए उनके अनेक जहाजो में से क्या एक भी वेनिस नही लौटा? क्या भीषण समुद्री चट्टानो से एक भी नही बच सका? क्या उन सबका ही लहरों मे सर्वनाश हो गया?

सैलैरियो : एक भी नही बचा श्रीमन्त बैसैनियो! किंतु सबसे अधिक कष्टकर बात तो यह हे कि शाइलॉक उस धन को लेने को भी तैयार नहीं है जो मौजूद हे, और ऐन्टोनियो देने को तैयार है। मैने कभी इस यहूदी की भाँति मनुष्य-शरीर में छिपे हिंस्र पशु को नही देखा जो कि अपने ही जैसे दूसरे मनुष्य का सर्वनाश करने पर तुल गया हो। वह ड्यूक पर जोर दे रहा है, रात-दिन लगा है कि ऐन्टोनियो के विरुद्ध वे कोई कड़ा कदम उठाये। यदि ऐन्टोनियो को दंड नहीं दिया जाता तो शाइलॉक उन अधिकारों का प्रश्न उठा देगा जो उस जैसे विदेशियो को भी वेनिस के नागरिकों की भाँति प्राप्त है। बीस व्यापारी, स्वयं ड्यूक और राजा के सर्वोच्च अधिकारी, सम्मानित पदाधिकारी उससे कह चुके है कि वह अपनी माँग हटा ले, किंतु कोई भी सफल नहीं हो सका है कि उसकी ईर्ष्या-भरी माँग को रोक सके, जो न्याय माँगती है और समय पर दस्तावेज की कीमत न रख सकने के कुसूर का मोल माँग रही है।

जैसिका : जब मै अपने पिता के साथ रहती थी, मैने उन्हे अपनी जाति के कई व्यक्तियो, ट्यूबॉल और चुस से यह ज़ोरदार शब्दो में कहते सुना था कि वे ऐन्टोनियो को दिये रुपयों से बीस गुना धन लेने की अपेक्षा उसके शरीर का आधा सेर मांस लेना कही अधिक पसंद करेंगे। अपने पिता को पूरी तरह से जानते हुए, मै विश्वास दिलाती हूँ कि श्रीमान्! यदि कानून, राज्य के अधिकारी, और स्वयं ड्यूक की शक्ति उन्हें उनके पथ पर चलने की स्वतंत्रता देगे तो बिचारे एंन्टोनियो को दया नही मिल सकेगी।

पोर्शिया : क्या यही आपके वे दयालु और उदात्त विचार वाले मित्र

हैं जिन्होंने आपको धन दिया था ? क्या वे ही खतरे में है ?

बैसैनियो : वह मेरा अत्यंत प्रिय मित्र है। उसका हृदय बहुत ही दयालु है, उदात्त प्रकृति है, और वह कभी भी करुणा-भरे कार्य्य करते नही हटता। उसमें प्राचीन रोम-निवासियो का गौरव और सम्मान है, जैसा आज के इटली में शायद ही किसी मे हो।

पोर्शिया : उन्हे यहूदी को कितना धन देना है ?

बैसैनियो : मेरे कारण उन्हें यहूदी को ३००० सिक्के देने है।

पोर्शिया : केवल तीन हजार ड्यूकैट देने हैं उन्हे यहूदी को ? उसे ६००० सिक्के दे दिये जायेंगे, वह उस लिखा-पढी को रद्द कर दे। मैं उसे १२००० नही, १८००० ड्यूकैट तक ऐन्टोनियो जैसे अच्छे मित्र के लिये देने को तैयार हूँ। ऐसे मित्र को आपके कारण तनिक भी कष्ट नही सहना चाहिये। किंतु पहले हम सबको गिरजे जाकर विवाह करना चाहिये और तब आपको तुरत वेनिस, अपने मित्र की रक्षा करने को, जाना चाहिये। मै तब तक आपके निकट नही सोऊँगी जब तक कि आपकी सारी परेशानी दूर नही हो जाती। उस छोटे-से ऋण को चुकाने के लिये मैं आपको उस ऋण से बीस गुना ज्यादा धन दूँगी। जब धन दे दिया जाये तब आप अपने मित्र को भी यही ले आइये। तब तक मै और नैरिसा सेविकाओं या विधवाओं की भाँति रहेगी। शीघ्रता करें और आप यह भी याद रखे कि आपको विवाह के दिन ही वेनिस को रवाना हो जाना है। धैर्य्य रखिये और अपने मित्रो का उत्फुल्ल स्वागत कीजिये। मैं आपसे बहुत प्रेम करूँगी, क्योकि मैने आपको मुश्किल से पाया है। किंतु मुझे अपने मित्र ऐन्टोनियो का पत्र सुनाइये।

बैसैनियो : (पत्र पढ़ता है।) प्रिय बैसैनियो, मेरे सब जहाज नष्ट हो

गये है। मेरे ऋणदाता सब निष्ठुर हो गये है और अपना सारा रुपया माँग रहे हैं। मेरे पास उन्हें देने के लिये कुछ भी नही है। क्योंकि मै शाइलॉक को समय पर धन नही दे सका, और क्योकि इसका दण्ड मृत्यु है, इसलिये, मैं उन सब ऋणों को जो तुम्हें मुझे चुकाने है, तुम पर से रद्द करता हूँ। किंतु मेरी बड़ी इच्छा है कि मरने के पहले एक बार तुमसे मिल सकूं। यदि तुम्हारा नया प्रेम तुम्हें आने से रोकता है, तो मेरा पत्र तुम पर व्यर्थ ही दबाव न डाले यही चाहता हूँ।

पोर्शिया : हाय रे ! हम अपना कार्य्य तुरंत समाप्त करें और शीघ्र आप वेनिस जाइये।

बैसैनियो : मैं तुरंत जाऊँगा, क्योंकि तुमने अत्यंत कृपा करके आज्ञा दे दी है। किंतु मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मै वहाँ आवश्यकता से अधिक तनिक भी नही ठहरूँगा और तब तक विश्राम नही करूँगा जब तक जल्दी से जल्दी लौट न आऊं।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वेनिस - पथ]

[शाइलॉक, सैलैनियो, ऐन्टोनियो और जेलर का प्रवेश]

शाइलॉक : जेलर ! इसका ध्यान रखना। मुझसे दया की मत कहो। यही है वह मूर्ख जो मुफ्त धन उधार देता था। जेलर ! इसको अच्छी तरह देखना। हाँ ! निकल न जाये !

ऐन्टोनियो : शाइलॉक ! मेरी बात तो सुनो !

शाइलॉक : मुझे तो दस्तावेज की शर्त्त से मतलब है, उसके विरुद्ध मत बोलना। मैंने कसम खाई है कि शर्त्त पूरी करवाऊँगा।

तुमने अकारण मुझे कुत्ता कहा था, और क्योंकि मैं कुत्ता हूँ मेरे दाँतों से सावधान रहो। ड्यूक मुझे न्याय देंगे। मुझे ताज्जुब है ओ अधम जेलर! कि तुम इसकी प्रार्थना पर इसे लेकर बाहर आ गये। क्या तुम इतने मूर्ख हो ?

ऐन्टोनियो : कृपया मेरी बात तो सुन लें।

शाइलॉक : मुझे शर्त्त चाहिये। मै तुम्हारी बात सुनना नही चाहता। मुझे शर्त्त पूरी करवानी है; और इसीलिये मुझसे और बातें मत करो। मै कोमल और मंद दृष्टि मूर्ख नहीं बन सकता कि सिर हिला दूँ और दया करूँ, आह भरूँ और ईसाई मित्रों के सामने समर्पण कर दूँ। पीछे मत आओ। मै बात नहीं करना चाहता, मुझे तो शर्त्त पूरी करवानी है।

[प्रस्थान]

सैलैनियो : मनुष्यों के बीच ऐसा हृदयहीन कुत्ता शायद ही कभी रहा हो!

ऐन्टोनियो : उसे छोड़ो, चाहे जिस राह पर वह चले। ऐसी निष्फल प्रार्थनाएँ लेकर मैं उसके पास नहीं जाऊँगा। वह मेरा जीवन चाहता है, और मैं खूब जानता हूँ कि वह ऐसा क्यों चाहता है। मेरे पास आकर अपना दुखड़ा रोनेवाले कितने ही व्यक्तियो को मैंने इसके चंगुल से छुड़ाया है। और यही कारण है कि वह मुझसे घृणा करता है।

सैलैनियो : मुझे निश्चय है कि ड्यूक ऐसी शर्त्त को कभी भी पूरा नही होने देंगे।

ऐन्टोनियो : ड्यूक कानून को तो नही रोक सकते। विदेशियों को हमारे साथ वेनिस मे समानाधिकार है और यदि उससे उन्हे वंचित किया जाता है, तो राज्य के न्याय-विधान पर बड़ा अभियोग लगेगा। जानते हो न कि नगर का व्यापार और लाभ

सारी ही जातियों और राष्ट्रों से चलता है। इसीलिये जाने भी दो। इन दुखों और हानियों ने मुझे इतना निराश कर दिया है कि कल मेरे हिंस्र ऋणदाता को शायद ही आधा सेर मांस प्राप्त हो। चलो जेलर! ईश्वर से प्रार्थना करो कि वैसैनियो आ जाये ताकि मैं उसका ऋण चुका दूँ और फिर शांति से प्राण त्याग कर दूँ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के घर का एक कमरा]

[पोर्शिया, नैरिसा, लौरेन्ज़ो, जैसिका और बॉलथाज़र का प्रवेश]

लौरेन्ज़ो : श्रीमती! यद्यपि मैं आपके सामने ही कहता हूँ कि आपके विचार अत्यंत उदार और उदात्त हैं, बल्कि आपको पवित्र प्रेम का भी पूरा ज्ञान है, आप इसे मेरी चाटुकारिता न समझें। अपने पति की अनुपस्थिति में भी जो उत्फुल्लता आपने प्रदर्शित की है वह निश्चय ही स्तुत्य है। किंतु यदि आपको मालूम होता कि जिसके प्रति आप इतनी दया दिखा रही हैं वह कितना महान् है, और आपके पति का उससे कितना गहरा स्नेह है, तो मैं निश्चय से कह सकता हूँ कि उसके प्रति करुणा दिखाने में आपको कहीं अधिक हर्ष और गर्व होता। यदि यही आप किसी साधारण व्यक्ति के प्रति करतीं, तो उसमें आपको इतना आनंद नही होता।

पोर्शिया : मैंने कभी किसी का भला करने पर शोक नहीं किया, न अब करती हूँ। मुझे निश्चय है कि जो मनुष्य प्रेम के बंधन में दृढ़ता से बंधे रहते हैं और एक दूसरे के साथ समय को सुख से

बिताते हैं, वे सूरत-शकल, तमीज़ और स्वभाव में भी बहुत मिलते-जुलते है। और यही मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि मेरे पति के अत्यंत प्रिय मित्र ऐन्टोनियो भी उन्ही के समान उदात्त भाव वाले और योग्य होगे। यदि यह सत्य है तो मैने पति के एक मित्र की रक्षा मे बहुत कम गँवाया है। लेकिन मुझे डर है कि कहीं मै खुद ही तो अपनी तारीफ नही कर रही हूँ, इसलिये इस बारे मे तो मै बोलूंगी ही नही। देखो लौरेन्ज़ो! जब तक बैसैनियो नही लौटते तब तक तुम ही इस घर की देख-भाल करना। जहाँ तक मेरा सवाल है मैने यह व्रत लिया है कि नैरिसा के साथ तब तक चिंतन और प्रार्थनाओं मे समय निकालूंगी जब तक बैसैनियो और ग्रेशियानो लौटकर नही आ जाते। यहाँ से दो मील दूर एक गिरजा है, हम वही रहेगी। मै प्रार्थना करती हूँ कि आप यह कर्त्तव्य सँभाले और परिस्थितिवश ही आपके प्रति जो मेरा स्नेह है, आपसे यह अनुरोध कर रहा है।

लौरेन्ज़ो : श्रीमती ! मै सहर्ष यह कार्य्य करूँगा और आपकी दयालु आज्ञा का पालन करूँगा।

पोर्शिया : मैने इसके बारे में अपने सेवकों को आदेश भी दे दिये है और वे आपको और जैसिका को स्वामी-स्वामिनी के रूप में ही देखेंगे, जब तक मै और बैसैनियो लौट नहीं आते। अच्छा तो बिदा ! फिर मिलेगे !

लौरेन्ज़ो : ईश्वर करे आपका समय सुख से बीते।

जैसिका : आपकी मनोकामनाएँ पूर्ण हों !

पोर्शिया : मै आपको इस वान्छा के लिये धन्यवाद देती हूँ और चाहती हूँ कि यही आपको भी मिले। अच्छा जैसिका ! बिदा ! (जैसिका और लौरेन्ज़ो का प्रस्थान) हाँ, बॉलथाजर ! मैने तुम्हे हमेशा

ईमानदार और सच्चा ही पाया है, और आशा है आगे भी ऐसा ही पाऊँगी। यह पत्र लो और जितने शीघ्र जा सको मेरे भाई डॉक्टर बैलारियो के पास चले जाओ और जो भी वस्त्र और कागज़ वे दे उन्हें लेकर शीघ्रातिशीघ्र चले आओ और वह है न नावों का घाट, जहाँ वेनिस से यहाँ तक आने-जाने वाली नावें इकट्ठी होती है, वहीं तुरंत आ जाओ। बातों में समय नष्ट न करना। फ़ौरन जाओ। मै तुमसे पहले ही घाट पर पहुँच जाऊँगी।

बॉलथाज़र : श्रीमती ! जितनी जल्दी जा सकूँगा जाऊँगा।

[प्रस्थान]

पोर्शिया : चलो नैरिसा ! मेरे दिमाग़ में कुछ योजना है और अभी तक मैंने तुम्हें उसके बारे में कुछ भी नहीं बताया है। हम अपने पतियों के पास कही पहले पहुँच जायेंगी इतने पहले कि हमारी उपस्थिति उतनी शीघ्र सोचते भी न होंगे।

नैरिसा : लेकिन क्या वे हमारी उपस्थिति को वहाँ जान भी नहीं पायेंगे ?

पोर्शिया : हाँ ! वे हमे जिन वस्त्रों मे देखेंगे, उनसे वे हमें स्त्री नही, पुरुष समझेंगे। जब हम दोनों दो नवयुवक बनेंगे, मै शर्त्त बद कर कह सकती हूँ कि मै ही अधिक फुर्तीली लगूंगी और मैं ही बड़े जोम से कटार भी लगाऊँगी। लड़कपन से जवानी मे पाँव रखनेवाले तरुण के नये ही भारी होते स्वर मे मैं बात करूँगी। ऐसे मर्दाने लंबे क़दम रख कर चलूंगी कि औरतों के तो दो क़दम समा जायेंगे एक में ! लड़ाई, झगड़ों, द्वंद्वों की तो बढ़-बढ़कर बातें करूँगी और उच्च कुल की स्त्रियों ने किस प्रकार मेरा प्रेम जीतने का प्रयत्न किया इसके बारे मै तरह-तरह के झूठे प्रेम के किस्से गढ़-गढ़कर सुनाऊँगी कि मैंने उनके प्रेम को ठुकरा

दिया और वे बीमार पड़कर मर गईं और तब मै कुछ नही कर सका। फिर मै शोक करूँगी, कि कही अच्छा होता गर मै उनकी मृत्यु का कारण नहीं बनता। ऐसी ही छोटी-मोटी बीसियों झूँठें बोलूंगी कि जो सुनेंगे वे समझेंगे कि हाल ही में स्कूल से निकला हुआ कोई लड़का है। मैं ऐसे अक्खड़ स्कल के लड़को की हजारो चालबाजियाँ जानती हूँ और देख लेना उन्ही को वहाँ दिखाऊँगी। अब चलो। मै तुम्हे गाड़ी में अपनी पूरी योजना सुनाऊँगी। गाड़ी बाग के दरवाजे पर हमारा इंत-जार कर रही है। अब जल्दी करो, क्योकि हमें दिन मे बीस-बीस मील तक का सफर हर रोज तय करना है।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[वही : बाग]

[लॉन्सलौट और जैसिका का प्रवेश]

लॉन्सलौट : हाँ, आपको यह ध्यान में रखना चाहियें कि माँ-बाप के पाप संतान पर ही उतरते हैं। मुझे डर है कि कही अपने कुटिल पिता के कारण आप पर आँच न आवे, मैं सदैव आपसे बहुत स्पष्टवादी रहा हूँ और अब भी वैसे ही बाते कर रहा हूँ। साहस रखिये, क्योंकि मुझे लगता है कि आप पर सदा के लिये विनाश बरसने वाला है।

जैसिका : किंतु मै अपने पति द्वारा बचा ली जाऊंगी, जिन्होंने मुझे ईसाई बना लिया है।

लॉन्सलौट : हाँ-हाँ, तुम्हें ईसाई बनाने के कारण तो उनपर भी अभि-

योग लगेगा। हम पहले ही काफी ईसाई थे, इतने कि काफ़ी खुशी से मिल-जुलकर रह सकते थे। अगर इस तेज़ी से लोग ईसाई बनाये गये मुझे विश्वास है कि सूअर के गोश्त की क़ीमत चढ़ जायेगी और अगर सब ईसाई सूअर का मांस खाने लगे तो कुछ दिन बाद किसी भी कीमत पर सूअर का मांस तो मिलना ही बद हो जायेगा।

जैसिका : मैं अपने पति को इसकी सूचना दूंगी लॉन्सलौट! क्या कहते हो! वे आ रहे है।

[लौरेन्ज़ो का प्रवेश]

लौरेन्ज़ो : अगर तुम इसी तरह मेरी पत्नी से एकात में बातें करते रहे लॉन्सलौट! तो मुझे तुमसे ईर्ष्या होने लगेगी।

जैसिका : नही लौरेन्जो! तुम्हे किसी डर की ज़रूरत नही। हम तो झगड़ रहे हैं। यह मुझसे साफ-साफ कहता है कि मेरे लिये ईश्वर की ओर से कोई दया नही है, क्योंकि मैं यहूदी की बेटी हूँ। और यह कहता है कि तुम ईसाई बिरादरी के अच्छे सदस्य नही हो, क्योंकि तुम यहूदियों को ईसाई बनाकर सूअर के गोश्त की कीमत चढ़ा रहे हो!

लौरेन्ज़ो : (लॉन्सलौट से) चलो भीतर! जाकर कहो, खाने की तैयारी करें।

लॉन्सलौट : वह तो तैयार है श्रीमान्! उन सबके अपने पेट हैं।

लौरेन्ज़ो : कैसा बातून आदमी है! जाओ खाना तैयार करने को कहो।

लॉन्सलौट · वह भी हो गया श्रीमान् ! केवल ढंकने* की कसर है ।
लौरेन्ज़ो : तो जा के ढंको* न ?
लॉन्सलौट : नही श्रीमान् ! मै तो अपना काम जानता हूँ ऐसी गलती कैसे करूँ !*
लॉरेन्ज़ो : अब बक-बक बद करो । अपनी सारी अक्ल का पिटारा क्या इसी वक्त खोल दोगे ? मेरे लफ्जों का सीधा-सादा मतलब निकालो ! अपने साथी नौकरों मे जाओ और उनसे कहो कि मेज बिछा दे, दस्तरखानों से ढंक दें और गोश्त परोसें, हम खाने आते हैं ।
लॉन्सलौट : अच्छा सरकार ! मेज लग जायेगी और गोश्त ढंक जायेगा, लेकिन खाने आना तो आपकी मर्जी और शौक पर ही निर्भर है ।

[प्रस्थान]

लौरेन्ज़ो : कैसी लफ्फाजी है ! लफ्ज़ो से खेलता है । इसके दिमाग मे बड़े-बड़े शब्द भरे हुए है । और मै कई बेवकूफों को जानता हूँ जो इससे कही ऊँचे पदो पर जीवन में आसीन है, वे भी बहुत शब्द जानते है किंतु नही जानते कि उनका प्रयोग कैसे करे । कहो प्रिये जैसिका ! क्या हाल है ? बैसैनियो की पत्नी तुम्हे कैसी लगी ?
जैसिका : उसकी प्रशसा करने को मेरे पास समर्थ शब्द नही है । यह

---

*अंगरेज़ी में Cover शब्द है। पहले अर्थ में दस्तरखान से ढँकना है। दूसरे अर्थ में भी वही है किंतु तीसरे स्थान पर लॉन्सलौट Cover का अर्थ अपना टोप लगाने से लेता है। यूरोप में नौकर मालिक के सामने सिर नही ढँकते, वह मालिक की बेइज्जती समझी जाती है। शेक्सपियर ने दो अर्थ का शब्दप्रयोग किया है, जिसका हिंदी में पर्य्याय नही मिलता।

तो उचित ही है कि श्रीमान् बैसैनियो अब कायदे की जिंदगी बितायें। उन्हें तो पोर्शिया जैसा रत्न मिलने पर यह पृथ्वी स्वर्ग का-सा आनंद देगी। यदि वे इस पृथ्वी पर अब भलमनसाहत से नहीं रह सकते, तो बहुत मुमकिन है कि उन्हें स्वर्ग में भी जगह न मिले। यदि दो देवता इस पृथ्वी की दो स्त्रियों के लिये प्रतिद्वन्द्विता में पड़ जायें और पोर्शिया उन दो स्त्रियों मे से एक हो तो उस दूसरी स्त्री में अवश्य कुछ जोड़ना पड़े ताकि वह पोर्शिया की बराबरी में खड़ी हो सके, क्योंकि पोर्शिया की बराबरी तो कोई स्त्री कर ही नहीं सकती।

लौरेन्ज़ो : जिस प्रकार पोर्शिया अपनी सानी नही रखने वाली पत्नी है, उसी प्रकार मुझमे भी तुम्हें एक लासानी पति मिला है।

जैसिका : जरा ठहरो! पहले अपने बारे में मेरी राय तो सुन लो।

लौरेन्ज़ो : जरूर सुनूँगा, पर पहले खाने तो चलो।

जैसिका : नही, इस वक्त मै प्रसन्न हूँ, इसीलिये मुझे ज़रा तुम्हारी प्रशसा कर लेने दो!

लौरेन्ज़ो : नही अभी नही। खाते वक्त कह लेना, तब जो भी तुम कहोगी, और चीजों के साथ मै उसे भी पचा जाऊँगा।

जैसिका : अच्छी बात है। मै वही तुम्हारी तारीफ़ करूँगी।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[वेनिस—न्यायालय]

[ड्यूक, वेनिस के राजकुलीन व्यक्ति, बैसैनियो, ग्रेशियानो और सैलैनियो तथा अन्यो का प्रवेश]

ड्यूक : क्या ऐन्टोनियो यहाँ उपस्थित है ?

ऐन्टोनियो . जी हाँ महानुभाव !

ड्यूक : मुझे तुम्हारे लिये खेद है, तुम एक पाषाण हृदयवादी को उत्तर देने आये हो जो कि अमानुषिक अधम है, जो दयाहीन है, और जिसमे करुणा की एक बूंद भी शेष नही है।

ऐन्टोनियो : मैंने महानुभाव के उन प्रयत्नों के विषय में सुन लिया है जिनसे आपने उसके हृदय की कठोरता को कम करने की चेष्टा की है। पर क्योकि यह अडिग हो रहा है, और उसकी घृणा से मुझे कानून नही बचा सकता, मैने उसके क्रोध के सामने समर्पण करना स्वीकार कर लिया है और अब मै धैर्य्य के कवच से उसकी कठोरता, अत्याचार और क्रोध को सहन करूँगा।

ड्यूक : कोई जाओ और यहूदी को न्यायालय मे बुलाओ।

ऐन्टोनियो : वह द्वार पर ही खड़ा है। लीजिये श्रीमान्! वह आ गया।

[शाइलॉक का प्रवेश]

ड्यूक : रास्ता छोड़ो। शाइलॉक को हमारे सामने खड़ा होने दो। शाइलॉक ! संसार समझता है, और मै भी समझता हूँ कि तुम

केवल अंतिम क्षण तक अपनी निष्ठुरता का इस प्रकार प्रदर्शन कर रहे हो, और अंत मे करुणा और दया तुम्हारे हृदय में उत्पन्न होंगी और तुम्हारे घृणा-प्रदर्शन से भी अधिक आकर्षक बन जायेगी। हमें आशा है कि अंत में न केवल तुम इस अभागे व्यापारी के शरीर से अपनी आधा सेर माँस की माँग को छोड़ दोगे, वरन् करुणा और दया की भावना से उद्वेलित होकर, ऐन्टोनियो को दिये मूलधन में से भी कुछ क्षमा कर दोगे। हमें निश्चय है कि तुम ऐन्टोनियो से सहानुभूति जताओगे क्योंकि उसने भारी हानि सही है और एक के बाद दूसरी विपत्ति उसे दवाती चली गई है। यद्यपि एक समय व्यापारियों में वह राजकुमार था, किंतु इस समय वह बिल्कुल बरबाद हो चुका है, और अब उसकी हालत ऐसी है कि अत्यन्त कठोर और पाषाण हृदय तथा निष्ठुर हृदय भी उसे देखकर पसीज उठें; यहाँ तक कि हठी तुर्क और तातार जो किसी के प्रति दया नही दिखाते वे भी इसे देखकर विचलित हो सकते है। हम तुमसे सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुनने की आशा करते है शाइलॉक!

शाइलॉक : मै जो चाहता हूँ वह महानुभाव की सेवा में पहले ही निवेदन कर चुका हूँ। मैने अपने पवित्र रविवार* की सौगंध खाई है कि इस शर्त्तनामे के हिसाब से जो मुझे मिलना है, उसे पूरी तरह से वसूल करूँगा। यदि आप मेरी कानूनी माँग को ठुकराते है तो आप अपने नगर के न्याय, कानून और नागरिक स्वतंत्रता के अधिकारों को ही ठुकराते है। आप मुझसे पूछते है कि मै बेकार के गोश्त मे से आधा सेर क्यों लेना चाहता हूँ,

*यहूदियो में रविवार को काम भी नही करते—वह पवित्र दिन माना जाता है।

तीन हजार ड्यूकैट क्यों नही ले लेता ? मै इस प्रश्न का उत्तर देने को तैयार नही हूँ। मै तो कहता हूँ कि यह मेरी तबियत है। मान लीजिये मेरे घर मे चूहो की बहुतायत है और मै उन्हे मरवाने को दस हजार ड्यूकैट खर्च करना चाहता हूँ, इससे किसी को मतलब क्या? क्या इस उत्तर से आपका काम चलता है ? कुछ लोग पतली आवाज में बोलता सूअर पसद नही करते। कुछ तो बिल्ली देखकर पागल हो उठते है, और कुछ ऐसे है जो धौकनो के बाजे को आवाज भी नही सुन सकते। मनुष्य सदैव ही तर्क और विवेक से वस्तुओं को पसंद-नापसद नही करता, बल्कि वह भावो से परिचालित होता है, जो उसे नचाते है। कोई नहीं बता सकता कि क्यो किसी को सूअर का पुकारना बुरा लगता है। क्यों दूसरे को एक मासूम बिल्ली को देखकर पागल होने की धुन समाती है और क्यों कोई और आदमी धौकनी के ऊनी कपड़े मे लिपटे बाजे को नही चाहता। मामूली बातो से चिढकर वे ऐसे विरोधी भावों की अभिव्यक्ति करते है, जो समझाई नही जा सकती। इसी प्रकार मै भी नही बता सकता कि ऐन्टोनियो के प्रति मेरे हृदय मे इतनी घृणा क्यों है और इसीलिये शर्तनामे के पूरे न होने के कारण मै उसका दण्ड माँग रहा हूँ, हालाँकि इसमे मेरी ३००० ड्यूकैट की हानि है ! क्या यह उत्तर आपको सतोष देता है ?

बैसैनियो . ओ निष्ठुर हृदय यहूदी ! यह तो अपनी निर्दयता को न्याय्य बनाने का कोई तर्क नही है।

शाइलॉक : मैं तुम्हे उत्तर देकर संतुष्ट करने को बाध्य नही हूँ।

बैसैनियो : क्या सब मनुष्य उस सबको मार डालने की इच्छा करते है जिसे वे नही चाहते ?

शाइलॉक : अगर एक आदमी किसी चीज से नफरत करता है तो क्या यह उसको बरबाद कर देना नहीं चाहते ?

बैसैनियो : विरोध की प्रत्येक भावना तुरंत ही ऐसी घोर घृणा की मंजिल पर नही पहुँच जाती।

शाइलॉक : क्या तुम एक ही साँप को अपने को दो बार डस लेने दोगे ?

ऐन्टोनियो : कृपया यह याद रखें कि आप शाइलॉक से तर्क कर रहे हैं। आप समुद्र-तीर पर खड़े होकर उत्ताल तरगों को आज्ञा दे सकते है कि लहरे अपनी गति की ऊर्ध्व सीमा तक नहीं जायें, आप एक भेड़िये से पूछ सकते हैं कि वह मेमने को क्यों खा गया, आप पर्वत पर उगे चीड़ के वृक्षों को आज्ञा दे सकते हैं कि वे तूफान के झकोरों में भी मर्मर न करे, आप ऐसे और असंभव कार्य्य भी कर सकते है, किंतु इस आक्रोशग्रस्त व्यक्ति के यहूदी-हृदय को नर्म करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिये मै आपसे अनुनय करता हूँ कि आप इसका हृदय परिवर्त्तित करने की व्यर्थ चेष्टा नही करें। मेरे विरुद्ध आदेश निकलने दीजिये। ऐसी स्पष्ट और मुखर घोषणा, जो न्याय के अनुसार उचित हो, और यहूदी की इच्छा को पूर्ण करे।

बैसैनियो : शाइलॉक ! मैं तुम्हारे ३००० सिक्कों के स्थान पर तुम्हे ६००० सिक्के देने को तत्पर हूँ।

शाइलॉक : तीन हजार सिक्के नही, अगर तुम ३६००० सिक्के भी दो, तो भी मै लेने को तैयार नहीं हूँ। मुझे अपने शर्त्तनामे की सजा चाहिये और मै कुछ नही चाहता।

ड्यूक : जब तुम स्वयं दूसरों के प्रति दयाविहीन हो, तब स्वयं परमात्मा से दया की आशा कैसे कर सकते हो ?

शाइलॉक : परमात्मा के किस न्याय से भयभीत होऊँ मैं? मैने क्या

पाप किया है? तुममें से कितनों ही ने गुलाम खरीद रखे है। और तुम उनसे नीचे से नीचे दर्जे का काम भी लेते हो। तुम उन्हे अपने गधों, कुत्तों और खच्चरो की तरह गुलामी के कारण काम मे लाते हो। क्यों? सिर्फ इसलिये कि तुमने उन्हे खरीदा है। क्या मैं कहूँ कि तुम उन्हे छोड़ दो? उन्हे आज़ाद कर दो? अपने उत्तराधिकारियो से उनका विवाह कर दो? तुम्हारे बोझो के नीचे उनका पसीना क्यो बहे? क्यों न उनके बिस्तर भी तुम्हारे बिस्तरों की तरह गुदगुदे और मुलायम हो? तुम्हारे स्वादिष्ट भोजनो से उनके भी हलक तर क्यो नही रहे? तुम कहोगे—गुलाम हमारे हैं। और यही मेरा भी जवाब है। मैं जो इसका आधा सेर गोश्त माँगता हूँ, यह भी मैने बहुत बड़ी कीमत पर खरीदा है। यह मेरा है और मैं उसे लेकर रहूँगा। अगर आप मुझसे इकार करते हैं, तो आपके न्याय को धिक्कार है! वेनिस के कानून मे असलियत नही, वे लागू भी नही होते! मैं इंसाफ के लिये खडा हूँ! जवाब दीजिये! जो मैं माँग रहा हूँ वह मुझे मिलेगा?

ड्यूक : अपने मे निहित अधिकारो के अनुसार मैं इस कचहरी को बर्खास्त कर दूंगा यदि योग्य वकील डॉक्टर बैलारियो आज नही आ जाते। मैने उन्हे इस मामले मे राय देने को बुलवाया है।

सैलैरिनो : आदरणीय! योग्य वकील के कुछ पत्र लेकर एक दूत अभी पदुआ से आया है, वह बाहर प्रतीक्षा कर रहा है।

ड्यूक : दूत को आने दो और पत्रो को मेरे पास भेजो।

बैसैनियो : निराश न हो ऐन्टोनियो! अरे पुरुष हो! धैर्य्य छोड़ते हो? चिंता मत करो! तुम्हारे रक्त की एक बूंद गिरने के पहले ही इस यहूदी को मैं अपना मांस, हड्डी और रक्त सब सौप दूंगा।

ऐन्टोनियो : मै गल्ले की एक बीमार भेड़ की तरह हूँ और मै ही मरने के सबसे अधिक योग्य हूँ। कमज़ोर फल ही सबसे पहले धरती पर गिर जाता है। जितनी जल्दी हो सके मुझे ही मरने दो। बैसेनियो! तुम्हारे लिये ज़िंदा रहना ही ज्यादा अच्छा है ताकि मेरी कब्र पर अंतिम बात लिख सको।

[नैरिसा का एक वकील के क्लर्क के पुरुष-वेश में प्रवेश]

ड्यूक : क्या तुम पडुआ से डॉक्टर बैलारियो के पास से आ रहे हो?

नैरिसा : जी श्रीमान्! मै पडुआ से डॉक्टर बैलारियो के पास से ही आ रहा हूँ। उन्होने आपको प्रणाम कहा है।

[पत्र देता है।]

बैसैनियो : शाइलॉक! तुम इतने मनोयोग और आतुरता से अपना चाकू क्यों तेज़ कर रहे हो?

शाइलॉक : उस दिवालिये से जमानत चुकाने के लिये।

ग्रेशियानो : तुम अपनी एड़ी पर नही, आत्मा पर ओ निर्मम यहूदी! अपने चाकू को पैना कर रहे हो! किंतु कोई भी धातु, यहाँ तक कि वधिक का परशु भी तुम्हारी घृणा की धार की आधी तेज़ी भी अपने मे नही ला सकता। क्या कोई भी याचना तुम्हारे हृदय में अपना पथ नहीं बनाती?

शाइलॉक : तुम सोच सको ऐसी तो मुझे कोई नज़र ही नही आती।

ग्रेशियानो : तुम्हारा सर्वनाश हो! ओ हृदयहीन कुत्ते! जो न्याय तुम्हे जीवित रहने का अधिकार देता है, वह न्याय नहीं स्वयं वही अन्याय है। तुम्हारा जीवन और तुम्हारा चरित्र देखकर मेरा विश्वास ईसाई धर्म से डिगा जाता है।[1] बल्कि मुझे तो

---

१. ईसाई पुनर्जन्म नही मानते।

उस प्राचीन यूनानी दार्शनिक पाइथॉगोरस का सिद्धांत ही ठीक लगता है कि मनुष्य की देह मे पशुओं की आत्मा भी अपना जन्म लेती है। तुम्हारी घृणा-भरी आत्मा पहले अवश्य किसी भेडिये मे रह चुकी है। और जब मनुष्य को मारने के कारण वह भेड़िया वध्यस्थान मे था, वह निर्दय आत्मा उसमें से भाग निकली और तुम्हारे शरीर मे घुस गई, उसी समय जब कि तुम अपनी माता के गर्भ मे सो रहे थे। तुम्हारी इच्छाएँ भयानक, वीभत्स, निर्मम, क्रूर और भेड़िये की भाँति हिंस्र हैं।

शाइलॉक : जब तक तुम शर्त्तनामे की मोहर नही हटा सकते, तुम इतना चिल्लाकर बेकार अपने फेफड़ों को दुखा रहे हो नौजवान! होश मे आओ! वर्ना फिर तुम्हारे इस दिमाग का कोई इलाज भी नही हो पायेगा। मै यहाँ इंसाफ के लिये खडा हूँ।

ड्यूक : बैलारियो का पत्र एक तरुण और अति विद्वान डॉक्टर को हमारे न्यायालय मे भेजता है। वह कहाँ है ?

नैरिसा : वे निकट ही हैं। वे इसी को जानना चाहते हैं कि आप उन्हे भीतर घुसने की आज्ञा भी देंगे या नही ?

ड्यूक : अवश्य! सहर्ष! तुममे से तीन-चार आदमी बाहर जाओ और उन्हे न्यायालय मे ससम्मान ले आओ। तब तक न्याया-लय मे बेलारियो का पत्र पढा जाये।

क्लर्क : (पढ़ता है।) श्रीमंत से सविनय निवेदन है कि आपका पत्र प्राप्त हुआ। इस समय मै बहुत अस्वस्थ हूँ। किंतु जिस समय आपका दूत आया है, उस समय ही रोम से एक तरुण डॉक्टर मित्र मुझसे मिलने आये हुए हैं। उनका नाम बॉलथाज़र है। मैंने उन्हे यहूदी और व्यापारी ऐन्टोनियो के झगड़े के बारे मे बताया। हमने साथ-साथ कई किताबें देखी। उन्हे मैंने अपनी

राय बताई है और फिर उनकी अपनी विद्वत्ता है, जो उस पर सान चढ़ा देगी। उनके ज्ञान की महानता के बारे मे क्या कहूँ? मेरी प्रार्थना पर वे श्रीमान् के यहाँ मेरा स्थान भरने के लिये आ रहे हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आयु को कम समझने के कारण कही ऐसा न हो कि उनके सम्मान में किसी प्रकार की त्रुटि हो जाये। मैने तो इतनी कम आयु में कही इतनी विद्वत्ता नही देखी। मैं श्रीमान् से निवेदन करता हूँ कि उन्हें स्वीकार करें और फिर वे स्वयं ही जो कुछ करेंगे, उसी से उनकी वास्तविकता प्रगट हो जायेगी, मैं और क्या कहूँ?

ड्यूक : आप सबने डॉक्टर बैलारियो का पत्र सुन लिया है। और मैं समझता हूँ कि डॉक्टर आ गये है।

[पोर्शिया का न्याय के डॉक्टर--वकील के रूप में पुरुष-वेश में प्रवेश]

ड्यूक . इधर आइये। आइये हाथ मिलाये। क्या आप ही वृद्ध बैलारियो की ओर से आये है?

पोर्शिया : जी हाँ श्रीमत!

ड्यूक : आपका हार्दिक स्वागत है। कृपया बैठिये। मै समझता हूँ कि आज हमें जिस झगड़े का इंसाफ़ करना है उससे आप पूरी वाकफियत रखते है?

पोर्शिया : हाँ श्रीमत! मुझे पूरा मामला मालूम है। कौन-सा व्यक्ति ऐन्टोनियो है, और शाइलॉक कौन है?

ड्यूक : ऐन्टोनियो और शाइलॉक जरा आगे बढ़ आयें।

पोर्शिया : क्या तुम्हारा नाम शाइलॉक है?

शाइलॉक : हाँ, मेरा नाम शाइलॉक ही है।

पोर्शिया : तुम एक बहुत अस्वाभाविक मांग प्रस्तुत कर रहे हो शाइलॉक! किंतु वह कानून के हिसाब से उचित है। अगर तुम

डटे रहोगे तो वेनिस का कानून उसे रोक नहीं सकता। (ऐन्टो-
नियो से) तुम इसके अधिकार मे हो और यह तुम्हारी हानि कर
सकता है, यही बात है न ?

ऐन्टोनियो : यह यही कहते है।

पोर्शिया : तुम शर्तनामे को मजूर करते हो ?

ऐन्टोनियो : करता हूँ।

पोर्शिया : तब तो यहूदी को ही दयावान होना पड़ेगा।

शाइलॉक : मुझ पर ऐसा क्या दबाव है ? जरा मै भी तो सुनूँ !

पोर्शिया : करुणा एक ऐसा गुण है जिसका प्रयोग बल के द्वारा
नही हो सकता। वह तो मनुष्य के हृदय मे वैसे ही जाग्रत
होती है, जैसे आकाश के मेघों से रस द्रवित होता है।
करुणा तो दोनों पक्षो के लिये श्रेयस्कर है। जो करता है वह
भी श्रेष्ठ है, जो पाता है वह तो उसका फल प्राप्त करता ही
है। करुणा सशक्तो मे भी सशक्त है, उससे महती कोई शक्ति
नही। सिंहासनस्थ सम्राट् के राजमुकुट से वह ज्योति विकीर्ण
नही होती, जो उसकी करुणा से होती है। राजदण्ड तो पार्थिव
शक्ति का प्रतीक है, उससे वैभव और आतक प्रदर्शित होता है,
उससे शक्ति और बल का भय प्रगट होता है; किंतु करुणा राज-
शक्ति से भी ऊँचा स्थान रखती है। वह तो सम्राटों के हृदय
मे वास करती है, वह तो एक दैवी शक्ति है, ईश्वरीय गुण है।
यही पार्थिव शक्तियाँ उस समय दैवी बन जाती है जब न्याय
का सचालन करुणा करती है। इसलिये यहूदी ! न्याय भले ही
तुम्हारी माँग हो, तनिक इस पर भी विचार करो। न्यायमात्र
मे आत्मा की मुक्ति का कोई पथ नही है। हम करुणा की भीख
माँगते है। और वही प्रार्थना हमें अन्यों के प्रति दयापूर्ण व्यवहार

करने की प्रेरणा देती है। तुम्हारी माँग के न्याय को तनिक विनम्र करने के लिये मैंने काफी कह दिया है। किंतु यदि तुम उस पर अड़े रहोगे, तो न्याय के लिये ही खड़ा यह न्यायालय अवश्य ही ऐन्टोनियो को दण्डित करने को बाध्य हो जायेगा।

शाइलॉक : जो कुछ मेरे कर्म हैं उनका फल मुझे ही मिले! मैं तो न्याय चाहता हूँ, मेरा शर्त्तनामा! मेरी शर्त्तें! मेरा न्याय! वही दण्ड! बस!

पोर्शिया : क्या ऐन्टोनियो कर्ज नही चुका सकता?

बैसैनियो : जी हाँ, चुका सकता है। मैं न्यायालय में उसकी ओर से रुपया देने को तैयार हूँ। मैं दुगना देने को तैयार हूँ। यदि वह भी काफी नहीं है तो मैं दस गुना भरने को तत्पर हूँ। यदि ऐसा न कर सकूं तो शाइलॉक मेरे हाथ, पाँव, सिर, सब ले ले। यदि यह भी शाइलॉक को स्वीकृत नहीं है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिहिंसा सत्य पर छा गई है। मैं अनुनय करता हूँ कि एक बार अपने अधिकार से कानून बदल दे; एक महान औचित्य के लिये, एक लघु अनौचित्य भी करे, ताकि इस निर्दय शैतान की कुटिल कामना पूर्ण नहीं हो।

पोर्शिया : यह नही हो सकता। वेनिस में ऐसी कोई शक्ति नहीं जो कि स्थापित नियम को उलट सके। यह तो एक बुरा उदाहरण प्रस्तुत करने वाली बात है। और एक गलती के सहारे न जाने कितनी बुराइयाँ राज्य के कार्य्य में घुस जायेगी। यह नही हो सकता।

शाइलॉक : अरे न्याय करने आज तो डैनियल* आ गया! धर्मराज डैनियल आ गया!

*डैनियल—यहूदी कथाओ में निरासक्त सर्वश्रेष्ठ न्यायकर्त्ता।

ओ बुद्धिमान तरुण न्यायकर्त्ता ! मै तुम्हारा कितना सम्मान करता हूँ !!

पोर्शिया : ज़रा महरबानी करके मुझे शर्त्तनामा तो दिखायें।

शाइलॉक . ओ परम बुद्धिमान डॉक्टर ! यह लीजिये ! यह लीजिये !

पोर्शिया : शाइलॉक ! तुम्हारे दिए हुए धन से तिगुना दिया जा रहा है !

शाइलॉक : सौगध है, सौगध है, मैने भी परमात्मा से एक सौगध खाई है। क्या मै अपनी आत्मा पर शपथ भग करने का पाप डालूं ? नही ! सारा वेनिस मुझे मिल जाये तब भी नही !

पोर्शिया : तब यह साफ कहा जा सकता है कि शर्त्तनामा पूरा नहीं हुआ और इसमे लिखी शर्त्त के मुताबिक शाइलॉक पूरी सजा देने का अख्तियार रखता है। इसलिये यहूदी को आधा सेर गोश्त निकाल लेने का पूरा हक है—वह ऐन्टोनियो के शरीर से उसके हृदय के पास से कही से भी गोश्त निकाल सकता है। मैं तुम्हारे सामने प्रार्थना लिय खड़ा हूँ शाइलॉक ! फिर सोच लो ! तिगुना धन ले लो और मुझे शर्त्तनामा रद्द करने की इजाजत दो !

शाइलॉक : शर्त्तनामे मे लिखी शर्त्त के मुताबिक शर्त्त पूरी हो जाने दीजिये, तब आप खुद इसे रद्द कर दीजिये। मुझे विश्वास है, आप एक अच्छे न्यायकर्त्ता है। आप तो न्याय के ज्ञाता है और आपकी न्याय की व्याख्या तो नितात उचित और उत्तम है। मै विनय करता हूँ कि आप अपना फैसला सुना दे, उस कानून के नाम पर जिसकी आप इज्जत करते है, दुहाई देते है। मैं अपनी आत्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि कोई भी सुंदर वक्तृता या कोई भी करुणतम याचना मेरे दृढ निश्चय को बदल नही सकती। मैं इसी पर जोर देता हूँ कि शर्त्तनामे की शर्त्त ही पूरी हो।

ऐन्टोनियो : मैं भी न्याय से सहर्ष प्रार्थना करता हूँ कि अब दण्ड सुना दिया जाये।

पोर्शिया : तब तो फिर ठीक है। उसके चाकू के लिये अपनी छाती को तैयार कर लो।

शाइलॉक : आह महान न्यायी! ओ सर्वश्रेष्ठ तरुण!

पोर्शिया : जिस कानून का ऐसे सवाल से ताल्लुक है इस सजा के बिल्कुल माकूल है और शाइलॉक ऐन्टोनियो से पूरी तरह वसूल कर सकता है।

शाइलॉक : ओ परम विद्वान न्यायी! ओ अविचलित महान व्यक्ति! आप बिल्कुल ठीक हैं। श्रीमान्, आप अपनी आयु से कहीं अधिक बुद्धिमान हैं!

पोर्शिया : इसलिये अपना सीना खोल दो।

शाइलॉक : हाँ, इसका सीना! यही शब्द है शर्त्तनामे में। महान न्यायकर्त्ता! लिखे शब्द है: 'उसके हृदय के निकटतम स्थान से'

पोर्शिया : हाँ, ठीक कहते हो। पर क्या तुम्हारे पास गोश्त तोलने के लिए तराजू भी है?

शाइलॉक : बिल्कुल तैयार है।

पोर्शिया : शाइलॉक! एक डॉक्टर को अपने खर्चे से ऐन्टोनियो के पास खडा करो, कही ऐसा न हो कि उनका जरूरत से ज्यादा खून वह जाने से वह मर ही जाये।

शाइलॉक : लेकिन यह तो शर्त्तनामे में नही लिखा!

पोर्शिया : हाँ, ऐसा नही लिखा है। लेकिन उससे क्या? इतनी दया करोगे तो तुम्हारे लिये अच्छा ही है।

शाइलॉक : मै ऐसा नही कर सकता। यह शर्त्तनामे मे नही लिखा है।

पोर्शिया : ऐन्टोनियो! क्या तुम कुछ कहना चाहते हो?

ऐन्टोनियो : मै अधिक कुछ नही कहना चाहता। मैं तो मौत का सामना करने को तैयार हूँ। आओ वैसैनियो! विदा। इस बात का दुख न करना कि तुम्हारे कारण मुझे ऐसी परिस्थिति मे पड़ना पडा कि अत मे मुझे जान से हाथ धोना पड़ गया। साधारणतः अन्यो से भाग्य इतने अनुकूल नही रहा, जितना मुझसे। यह तो एक मामूली बात है कि भाग्य अभागे को तो सपत्ति-नाश पर भी उबार ले जाता है पर उससे बहुत दिन तक परेशानियों और गरीबी की जिदगी बिताने पर मजबूर करता है। मुझे तो मौत ऐसी जिदगी से नजात दे देगी। अपनी कुलीन पत्नी को मेरी शुभकामनाएँ देना और उन परिस्थितियो से अवगत कराना जिनके कारण मुझे मरना पड़ रहा है। उनको बताना कि मेरे-तुम्हारे कितने सुदृढ सबध थे और मेरी मृत्यु के बाद मेरे बारे मे प्रेम-भरे वचन कहना वैसैनियो! जब तुम मेरी कथा कह चुको तब उनसे पूछना कि क्या उनके पति का एक बहुत प्यारा मित्र नही था! इसका खेद न करो कि एक प्रिय मित्र अब सदा के लिये बिछुड़ जायेगा। उसे इसका तनिक भी शोक नही कि वह तुम्हारा ऋण चुका रहा है, यदि यहूदी मेरे हृदय के पास से एक मास-खण्ड काटता है, तो मै सहर्ष इस दण्ड को भुगत लूंगा।

वैसैनियो . ऐन्टोनियो! मेरा ऐसी पत्नी से विवाह हुआ है जो मुझे अपनी जिंदगी की तरह प्यारी है। किंतु स्वयं यह जीवन, मेरी पत्नी, और सारा संसार, इनमे से किसी को भी मै तुम्हारे जीवन से ऊपर नही रखता। सच कहता हूँ, इस शैतान से तुम्हे छुड़ाने के लिये मै सबका बलिदान कर सकता हूँ।

पोर्शिया : तुम्हारी यह बात सुनकर तुम्हारी पत्नी प्रसन्न नही होगी।

ग्रेशियानो : मेरी भी एक पत्नी है, जिसे मैं सौगंध खाकर कह सकता हूँ, प्रेम करता हूँ। मै चाहता हूँ कि वह स्वर्ग चली जाये, काश, इस हृदयहीन यहूदी के भीतर दैवीशक्ति से कोई परिवर्त्तन ला सके।

नैरिसा . अच्छा है, आप अपनी स्त्री की अनुपस्थिति मे ऐसी इच्छा कर रहे हैं, वर्ना अगर वह सुन लेती तो जरूर घर मे आसमान सिर पर उठा लेती ।

शाइलॉक : (स्वगत) यह है ईसाई जाति के पति, जो अपनी पत्नियों को इतना सस्ता समझते है कि अपने स्वार्थो को पूरा करने के लिये उनका बलिदान देने को तत्पर है। मेरे भी एक पुत्री है! काश, उसका विवाह भी बैराबैस के वंश मे से किसी से होता, न कि ईसाई से । (प्रगट) समय नष्ट हो रहा है । न्याय पूर्ण होने दीजिये ।

पोर्शिया : इस सौदागर का आधा सेर गोश्त तुम्हारा है, न्यायालय तुम्हे देता है, कानून तुम्हे आज्ञा देता है ।

शाइलॉक : अरे न्यायी ! अरे महान न्यायी !

पोर्शिया : और तुम यह गोश्त उसकी छाती से काट सकते हो ! न्यायालय तुम्हे देता है, कानून तुम्हे आज्ञा देता है ।

शाइलॉक : अरे विद्वान न्यायकर्त्ता ! क्या दण्ड है ! चलो तैयार हो जाओ !

पोर्शिया : थोड़ा ठहरो ! कुछ और भी है। लेकिन यह शर्त्तनामा तुम्हे लोहू की एक बूंद भी नही देता । साफ अल्फाज मे लिखा है : 'आधा सेर गोश्त' । यह शर्त्तनामा है, अपना आधा सेर गोश्त निकाल लो। लेकिन अगर काटते वक्त तुमने इस ईसाई के लहू की एक बूंद भी टपका दी, तो तुम्हारे हाथ और सपत्ति, वेनिस

के कानून के मुताबिक वेनिस-राज्य के हाथों जब्त हो जायेंगे।

ग्रेशियानो : अरे श्रेष्ठ न्यायकर्त्ता। यहूदी ! देख ! क्या विद्वान न्यायी है !

शाइलॉक : क्या यही कानून है ?

पोर्शिया : तुम स्वयं ही कानून देख लो। तुम न्याय पर जोर देते हो, तो विश्वास रखो, न्याय मिलेगा, जितना तुम चाहते हो, उससे भी अधिक।

ग्रेशियानो : ओ परम विद्वान न्यायकर्त्ता ! यहूदी ! बोल ! ओ परम न्यायी !

शाइलॉक : तब मैं वह शर्त्त मजूर करता हूँ। मुझे तिगुना धन दिला दे। ईसाई को जाने दे।

बैसैनियो . यह रहा धन !

पोर्शिया : ठहरो ! यहूदी को न्याय मिलेगा। ठहरो। जल्दी न करो। उसे दण्ड के अतिरिक्त कुछ भी नही चाहिये।

ग्रेशियानो : अरे यहूदी ! वाह रे न्यायकर्त्ता ! परम विद्वान न्यायकर्त्ता !

पोर्शिया . इसलिये गोश्त काटने को तैयार हो जाओ। किंतु रक्त न बहाना। न ज्यादा काटना, न कम, सिर्फ आधा सेर गोश्त। अगर तनिक भी अधिक या कम काट लिया, चाहे वह कितना ही कम-ज्यादा क्यो न हो कि एक हिस्से का बीसवाँ हिस्सा भी इधर-उधर हो, बल्कि अगर तराजू बाल भर भी झुक गई, तो तुम्हारी मौत है और तुम्हारी सारी संपत्ति जब्त करली जायेगी।

ग्रेशियानो : दूसरा डैनियल ! यहूदी ! एक डैनियल आ गया है। अरे विधर्मी, अब तो आखिर पकड़ा गया न ?

पोर्शिया : यहूदी क्यो रुकता ? अपनी शर्त्त पूरी करे !

शाइलॉक : मेरा मूलधन ही दे दो, मुझे जाने दो।

बैसैनियो : यह लो, मेरे पास तैयार है।

पोर्शिया : उसने कचहरी मे साफ़ इंकार किया है। उसे केवल न्याय मिलेगा। शर्त्त पूरी करे।

ग्रेशियान्नो : डैनियल ! फिर कहता हूँ दूसरा डैनियल ! मै तुम्हे धन्य-वाद देता हूँ यहूदी ! तूने मुझे यह मुहाविरा तो सिखा दिया।

शाइलॉक : क्या मुझे केवल मूलधन भी वापिस नहीं मिलेगा ?

पोर्शिया : केवल शर्त्त पूरी करने की आज्ञा के अतिरिक्त तुम्हे कुछ भी नही मिलेगा। और तुम अपने ही खतरों पर पूरी कर सकते हो।

शाइलॉक : शैतान की मार ! मै अब यहाँ जिरह करने को नही रुकना चाहता।

पोर्शिया : ठहरो यहूदी। अभी कानून की तुम पर एक और पकड़ है। वेनिस के कानून मे कहा गया है कि यदि यह साबित हो जाये कि कोई विदेशी सीधे या किसी और तरीके से किसी नागरिक की जान लेना चाहता है तब जिसके विरुद्ध वह ऐसा करता है उसे अधिकार है कि वह मारने की कोशिश करने वाले की आधी सपत्ति प्राप्त कर ले। बाकी आधा सरकार के खज़ाने में जायेगा। मारनेवाले का जीवन केवल ड्यूक की दया पर निर्भर रहता है। यदि ड्यूक न चाहे तो किसी की भी प्रार्थना व्यर्थ है। तुम इस खतरनाक हालत मे हो, क्योकि यह बिल्कुल साफ है कि सीधे भी और हर तरीके से भी तुमने प्रतिवादी की जान लेने की कोशिश की है। इस तरह तुम इस जुर्म के मुजरिम साबित हुए हो। इसलिये फौरन अपने घुटने टेक कर ड्यूक से दया की भीख माँगो।

ग्रेशियानो : यहूदी ! ड्यूक की आज्ञा के लिये प्रार्थना करो कि घर

जाकर फाँसी लगाकर मर सको। तुम तो यह भी नही कर सकते। क्योकि तुम्हारी सारी जायदाद राज्य ने जब्त कर ली और अब तुम गले मे बाँधने के लिये रस्सी भी कहाँ से लाओगे? रस्सी का भी खर्चा सरकार को ही करना पड़ेगा।

ड्यूक : अब तुम हमारी आत्मा का भेद देखो! तुम्हारे याचना करने के पूर्व ही मैं तुम्हे क्षमा करता हूँ, जीवन-दान देता हूँ। तुम्हारी आधी सपत्ति ऐन्टोनियो की है और आधी राज्य की। यदि तुम दीन पश्चात्ताप करोगे तो मै तुम्हारी जायदाद को जब्त न करके साधारण जुर्माना ही कर दूंगा।

पोर्शिया . आप राज्य का भाग छोड़ सकते है, ऐन्टोनियो का भाग नही।

शाइलॉक : नही, मेरा जीवन भी ले लो। जब सब सपत्ति ही ले लोगे, तब मेरे जीवित रहने से भी क्या लाभ? बिना आधार के घर ही कैसे खड़ा रह सकता है? जब मेरे जीवन का ही आधार ले लोगे तब मै ही रह कर क्या करूँगा?

पोर्शिया : ऐन्टोनियो! तुम इस पर क्या दया कर सकते हो?

ग्रेशियानो : एक फाँसी का फंदा मुफ्त दे सकते है! भगवान के लिये! और कुछ नही।

ऐन्टोनियो : मै ड्यूक और न्यायालय से प्रार्थना करता हूँ कि जो जुर्माना इसकी आधी जायदाद से संबध रखता है, जिसे राज्य ले लेगा, उसे क्षमा किया जाये, बशर्ते कि यह बाकी आधी मुझे दे दे, एक ट्रस्ट के रूप मे, ताकि मै उस भाग को उस व्यक्ति को इसकी मृत्यु के बाद दे सकूँ, जिसने इसकी पुत्री से विवाह किया है। यह जो इसे सहूलियत दी जा रही है, इसके बदले मे मैं इसके सामने दो शर्त्तें पेश करता हूँ—एक यह कि यह तुरत

ईसाई धर्म को अगीकार कर ले, दूसरे यह न्यायालय में ही वह लिखा-पढ़ी पक्की कर दे जिसमे साफ़ लिखा हो कि जायदाद का आधा हिस्सा इसकी मौत के वक्त इसके दामाद और इसकी बेटी को मिल जाये।

ड्यूक : यह ऐसा ही करेगा, वर्ना अभी जो क्षमा दी गई है वह वापिस ले ली जायेगी।

पोर्शिया : यहूदी ! क्या तुम तृप्त हो ? कुछ कहना है ?

शाइलॉक : मै तृप्त हूँ।

पोर्शिया : क्लर्क ! विरासत का दस्तावेज़ तैयार करो।

शाइलॉक : मै प्रार्थना करता हूँ कि मुझे यहाँ से जाने की आज्ञा दी जाये। मेरी तबियत ठीक नही है। मेरे पास दस्तावेज भेज दीजिये। मै दस्तखत कर दूंगा।

ड्यूक : जा सकते हो, पर काम पूरा कर देना।

ग्रेशियानो : जब तुम ईसाई होगे तो तुम्हारे दो धर्मपिता[1] होंगे। यदि मै न्यायकर्त्ता होता तो मै तुम्हे १२ धर्मपिता देता ताकि जूरी बनकर वे तुम्हें ईसाई बनाने की बजाय फाँसी की सजा देते।

[शाइलॉक का प्रस्थान]

ड्यूक : (पोर्शिया से) मै आपको आज अपने यहाँ भोजन पर निमन्त्रित करता हूँ।

पोर्शिया : मै अत्यंत विनय से क्षमा माँगता हूँ। मुझे आज रात ही पदुआ के लिए कूँच कर देना है और यह मेरे लिये बहुत ही आवश्यक है।

ड्यूक : क्या करें। खेद है आपको तनिक भी अवकाश नही।

---

१ ईसाई बनाते समय एक व्यक्ति धर्मपिता बनता है। यहाँ दो है—पोर्शिया और ऐन्टोनियो।

ऐन्टोनियो ! इन्हे अच्छा पुरस्कार देना। तुम वास्तव मे इनके बहुत ऋणी हो।

[ड्यूक तथा उसके सेवकों का प्रस्थान]

बैसैनियो : योग्य मित्र ! आप ही की बुद्धिमत्ता से मै इस भयानक संकट से निकल सका हूँ। आपके इस कष्ट के लिये हम शाइलॉक को दिये जाने वाले ३००० ड्यूकैट आपकी सेवा मे अर्पित करना चाहते है।

ऐन्टोनियो : और हम सदा सर्वदा के लिये प्रेम और सेवा के क्षेत्र में आपके ऋणी बने रहेगे ।

पोर्शिया : जो पूर्ण तृप्त हो जाता है, उसे पूरा इनाम भी मिल जाता है। तुम्हे छुड़ाकर मै पूर्ण सतुष्ट हूँ। और इसीलिये यह मानता हूँ कि मुझे पूरा इनाम मिल चुका है। रुपये की तरफ तो मेरा ध्यान नही था। मै चाहता हूँ तुम सुखी रहो। अब विदा दो।

बैसैनियो : श्रीमान् ! हम तो आपको इस विषय में दबाने के लिये मजबूर है। आप फीस के तौर पर नही, हमारी यादगार के तौर पर ही कोई भेट तो लेते जाइये। मै प्रार्थना करता हूँ, अस्वीकार न कीजिये ।

पोर्शिया : आप तो बहुत दबाते है। खैर मानना ही पड़ेगा। (ऐन्टोनियो से) मुझे अपने दस्ताने दे दीजिये, आपकी खातिर उन्हे पहना करूँगा। (बैसैनियो से) आपके प्रेम की याद मे मै आपसे यह अगूठी लूँगा। हाथ पीछे न खीचिये। मुझे और कुछ नही चाहिये। और फिर प्रेम है तो क्या आप इससे इकार कर देंगे ?

बैसैनियो : यह अगूठी ! श्रीमान् ! क्या बताऊँ ! बड़ी मामूली चीज है। आपको इसे देना तो आपकी तौहीन करना है ।

पोर्शिया : मुझे तो बस यही चाहिये, अब तो बस मन मे भर गई है।

बैसैनियो : मै इसकी कीमत की वजह से नही हटता। मै ऐलान

करा के वेनिस की कोई बहुत कीमती चीज आपके लिये तलाश कराता हूँ। पर इसके लिये मुझे माफ़ कीजिये। बस इतनी मेरी मान जाइये।

पोर्शिया : आप भी खूब ही देते हैं। एक तो मुझसे याचना करा ली और अब मुझे यह सिखा रहे है कि भिखारी को कैसे जवाब दिया जाता है ?

बैसैनियो : श्रीमान् ! यह अगूठी तो मेरी पत्नी ने मुझे दी थी। और जब उसने पहनाई थी तब मुझसे कसम ले ली थी कि न मै इसे बेचूंगा, न गँवाऊँगा।

पोर्शिया : यह तो मर्दो मे न देने के लिये आम बहाना है। अगर आपकी पत्नी पागल ही है, तो और बात है। क्या, मै इस अगूठी के योग्य नही हूँ। आप इसे मुझे दे देगे तो क्या वह बुरा मानेगी। चले। रखिये। तकलीफ़ न उठाइये।

[पोर्शिया और नैरिसा का प्रस्थान]

[illegible]नयो : श्रीमत बैसैनियो ! अगूठी दे दो न ? क्या उसका काम और मेरा प्रेम दोनो भी ऐसे नही है कि तुम्हारी पत्नी की आज्ञा को बदल सके ?

बैसैनियो : ग्रेशियानो ! लेना ! दौड़ के उसे रोकना। उसे यह अगूठी दे दो। और हो सके तो उसे ऐन्टोनियो के घर ले आना। जल्दी जाओ।

[ग्रेशियानो का प्रस्थान]

चलो, हम तब तक वहाँ पहुँच जाये। हम लोग कल शाम को बेलमोन्ट के लिये रवाना होगे। चलो ऐन्टोनियो, अब चलें।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वही : पथ]

[पोर्शिया, नैरिसा का पुरुष-वेश में ही प्रवेश]

पोर्शिया : यहूदी का घर तलाश करो। उसे दस्तावेज दे दो और उससे दस्तखत करा लो। हम आज रात चलेंगे और अपने पतियों के आने के एक दिन पहले ही पहुँच जायेंगे। लौरेन्जो तो इस दस्तावेज को पाकर खुश हो जायेगा।

[ग्रेशियानो का प्रवेश]

ग्रेशियानो : श्रीमान् ! बड़े भाग्य कि आप मिल तो गये ! श्रीमंत बैसैनियो ने बाद मे सोचने पर अपना इरादा बदल दिया। उन्होने अंगूठी भिजवाई है। उन्होने आपको ऐन्टोनियो के घर पर भोजन के लिये निमंत्रित भी किया है।

पोर्शिया : यह तो नही हो सकता। मै नही आ सकूंगा। हाँ अंगूठी के लिये धन्यवाद देता हूँ। कृपया आप उनसे कह दे। और हाँ, कृपया तनिक शाइलॉक का घर इस नौजवान को दिखा दें।

ग्रेशियानो : जरूर-जरूर।

नैरिसा : श्रीमान् ! मै कुछ कहना चाहता हूँ। (पोर्शिया से अलग) मै देखती हूँ यदि मैं अपने पति की अँगूठी ले सकूँ, जिसे मैने देते समय प्रतिज्ञा कर ली थी कि वे सदैव अपने पास रखेंगे।

पोर्शिया : (नैरिसा से अलग) ले ले। जरूर मिलेगी। उन्होंने तो मर्दो को अंगूठियाँ दी हैं, पर हम तो कसम खाकर विरोध करेंगी और कहेंगी कि नही स्त्रियों को दी है। (जोर से) जल्दी-जल्दी करो। तुम जानते हो मै कहाँ प्रतीक्षा करूँगा ?

नैरिसा : चलिये श्रीमान् ! आप ही मुझे घर दिखायेंगे न ?

[प्रस्थान]

पाँचवां अंक

दृश्य १

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के घर का रास्ता]

[लौरेन्ज़ो और जैसिका का प्रवेश]

लौरेन्ज़ो : कैसी चांदनी निखरी हुई है। मीठी बयार निःशब्द-सी वृक्षों को चूमती हुई बह रही है। ऐसी ही चाँदनी रात में ट्रोइलस ट्रॉय नगर की प्राचीर पर चढा होगा और उसने उन यूनानी शिविरो की ओर देख कर लंबी-लंबी आहें भरी होंगी जहाँ उसकी विश्वासघातिनी प्रिया क्रैसिडा सो रही होगी।[1]

जैसिका : ऐसी ही चाँदनी रात में थिस्बी भीरुता से ओस भीगी घास पर चली होगी और जब उसने सिंह की छाया देखी तब घोर आतंक से भर कर भाग गई होगी।

लौरेन्ज़ो : ऐसी ही चाँदनी रात में कारथेज की रानी दीदो उत्ताल तरगों से आंदोलित समुद्र-तीर पर बिना एक भी हरी डाल हाथ में लिये खड़ी रही होगी, जहाँ से उसने अपने प्रेमी ईनीज़ को बिदा दी होगी और अनुनय-भरे स्वर मे कहा होगा कि शीघ्र ही कारथेज लौट आना।

जैसिका : ऐसी ही चाँदनी रात मे जेसन की पत्नी मीडिआ ने ऐन्द्र-जालिक जड़ी-बूटियाँ एकत्र की होंगी। जिनसे उसने अपने सुसर ईसन को फिर युवक बना दिया था।

---

१ एक प्राचीन यूनानी कथा का सदर्भ। इसी प्रकार यहाँ कई कथाएँ आई है जिनका मूल तात्पर्य प्रेम व्यक्त करना है।

लौरेन्ज़ो : ऐसी ही सुदर रात को धनी यहूदी की पुत्री जैसिका, अपने पिता के घर से भागी थी अपने निर्धन प्रेमी के साथ बेल्मोन्ट को।

जैसिका : ऐसी ही मधुर रात्रि को तरुण लौरेन्जो ने जैसिका से अपना अखंड और सर्वकालीन प्रेम प्रगट किया था और अपनी अनेक विश्वासदायिनी और शाश्वत रहने वाले प्रेम की प्रतिज्ञाओ से उसका हृदय जीत लिया था, वे प्रतिज्ञाएँ जिनमें से एक भी विश्वास करने योग्य नही थी।

लौरेन्ज़ो : ऐसी ही मनोहर रात मे सुदरी जैसिका ने अपनी तेज जीभ से अपने प्रेमी के विश्वास पर सदेह किया था, जिसे उसने क्षमा कर दिया था।

जैसिका : ऐसी ही रात के तुम्हारे इस खेल मे मै तुम्हें अवश्य हरा देती, यदि कोई आता न होता। देखा न ? किसी की पदचाप सुनाई दे रही है।

[स्टीफ़ेनो का प्रवेश]

लौरेन्ज़ो : रात के सन्नाटे मे इतनी तेजी से कौन आ रहा है ?

स्टीफ़ेनो : मित्र !

लौरेन्ज़ो : मित्र ! कौन मित्र ! तुम्हारा नाम ! बताओ मित्र !

स्टीफ़ेनो : मेरा नाम स्टीफ़ेनो है और मैं यह सवाद लाया हूँ कि मेरी स्वामिनी पौ फटने से पहले यहाँ बेल्मोन्ट मे आ पहुँचेगी। वे यहाँ-वहाँ तीर्थ-यात्री की भाँति घूम रही हैं और जहाँ-जहाँ पवित्र गिरजे हैं वहाँ-वहाँ दर्शन करतीं, एक सुखी दंपति के प्रार्थना करतीं, शुभकामना करती, पर्य्यटन कर रही हैं।

लौरेन्ज़ो : उनके साथ कौन आ रहा है ?

स्टीफ़ेनो : केवल एक पवित्र साधु है और नैरिसा है। क्या मेरे स्वामी वैसैनियो लौट आये है ?

लौरेन्ज़ो : नहीं वे नहीं आये, और न अभी कोई ख़बर आई है। चलो जैसिका भीतर चले और श्रीमती पोर्शिया के लिये महान स्वागत का आयोजन करे।

[लॉन्सलौट का प्रवेश]

लॉन्सलौट : ऐ हो, ऐ हो ! कहाँ हो ! बोलो ! बोलो !

लौरेन्ज़ो : कौन है ?

लॉन्सलौट : अरे ? स्वामी लौरेन्ज़ो कहाँ है ! स्वामी लौरेन्ज़ो !

लौरेन्ज़ो : अरे चिल्लाओ मत। मै यहाँ हूँ।

लॉन्सलौट : आप कहाँ है ?

लौरेन्जो : यहाँ हूँ तो !

लॉन्सलौट : उनसे कहो कि स्वामी वैसैनियो के पास से एक दूत आया है और संवाद लाया है कि वे पौ फटते तक आ पहुँचेगे।

[प्रस्थान]

ैरेन्ज़ो : प्रिये जैसिका ! भीतर चलो, और वही उनकी प्रतीक्षा करे। और फिर बात ही क्या है ? हम भीतर ही क्यों जाये ? स्टीफ़ेनो ! तुम सेवकों को सूचना दे दो कि श्रीमती पोर्शिया शीघ्र आ रही है और घर के गाने-बजाने वालों से भी कह दो कि तैयार हो जाये और बाग मे आ जाये।

[स्टीफ़ेनो का प्रस्थान]

इस तीर पर चाँदनी कैसी जादू-भरी-सी सो रही है ! आओ यहाँ बैठे और मधुर सगीत सुने। सगीत की मीठी तानों से रात की पूर्ण निस्तब्धता कितनी एकाकार हो गई है। बैठो जैसिका। देखो, सुवर्ण की कणिकाओ से जटित आकाश कितना सुहावना लग रहा है। छोटे से छोटा नक्षत्र भी आज मानों मधुरतम स्वर से गा रहा है, घूमता हुआ मानो वे सब देवदूत

है, सुंदर ! ऐसी ही सगीत की तल्लीनता अमर आत्माओ मे भी होती है, किंतु जब तक यह आत्मा क्षणभगुर पार्थिव शरीर मे रहती है तब तक हम उसे सुन नहीं पाते ।

[संगीतज्ञों का प्रवेश]

आओ ! आओ ! डायना[1] को अपने गीत से जगाओ । मीठे स्वरो से अपनी स्वामिनी की श्रुतियो को भर दो और उन्हे घर की ओर खीच लाओ ।

[संगीत]

जैसिका : मै जब भी मधुर सगीत सुनती हूँ तब एक उदासी-सी मुझ पर छा जाती है ।

लौरेन्ज़ो : इसका कारण है कि तुम उसमे तल्लीन हो जाती हो । जगली और हिंस्र पशु भी संगीत से प्रभावित हो जाते है । चचल और अनसीखे घोड़े भी, जो कि भयानक ढंग से कूदते हैं, चिल्लाते और जोर से हिनहिनाते है, शक्ति के स्फुरण से उच्छृखल होते हैं, वे भी यदि तुरही-नाद सुनते हैं, या संगीत की मधुर धारा उनके कानो मे पड़ जाती है, तो शात इकट्ठे होकर खड़े हो जाते हैं । उनकी बर्बर आँखों मे एक कोमलता आ जाती है । सगीत की ऐसी ही शक्ति है, इसीलिये लैटिन भाषा के कवि ओविड ने कल्पना की थी कि ऑरफियस अपने संगीत से न केवल हिंस्र पशुओ को काबू मे कर लेता था वरन् उसका प्रभाव वृक्षो और चट्टानों पर भी पड़ता था । झरने मानो उसके वाद्ययन्त्र की ध्वनि का अनुसरण करते हुए बहते थे । कैसा भी क्रूर और कर्कश व्यक्ति क्यो न हो, सगीत सदैव हृदय

---

१. डायना—चद्रमा । यूरोप में चद्रमा को देवता नही, देवी मानते है । डायना उस रूपवती देवी का नाम है ।

को कोमल बना देता है। जो न स्वयं गा पाता है, न संगीत से प्रभावित होता है, वह बड़ा ही खतरनाक होता है। वह विश्वासघात, धोखा, षड्यत्र और लूट जैसे वीभत्स और घातक कर्म भी कर सकता है। उसके विचार और भावनाएँ अन्धकारमय और जघन्य होती हैं। ऐसे व्यक्ति का कभी विश्वास नही करना चाहिये। सुनो। संगीत सुनो।

[पोर्शिया और नैरिसा का प्रवेश]

पोर्शिया : वह प्रकाश मेरे भवन के मुख्य प्रकोष्ठ से आ रहा है। देखती हो, छोटी मोमबत्ती भी कितनी दूर तक अपनी किरण फेंकती है ! इस कुटिल ससार मे अच्छा काम इसी प्रकार प्रकाशित होता है।

नैरिसा : हम चाँदनी में उस मोमबत्ती के प्रकाश को नही देख सके थे।

पोर्शिया : महान गौरव इसी प्रकार लघुता को ढँक लेता है। सम्राट के अभाव मे उसके स्थान में काम करने वाला ही चमकता है। किंतु सम्राट के आते ही वह दिखना बंद हो जाता है, जैसे कोई क्षीण जलधारा समुद्र में गिरने पर अपना व्यक्तित्व खो बैठती है। सुनो न ? सगीत की मधुर तान को सुनो।

नैरिसा : श्रीमती ! यह सगीत तो अपने ही घर मे हो रहा है।

पोर्शिया : अपने संदर्भ के बिना कुछ भी अच्छा नही लगता। दिन की तुलना मे संगीत रात की निस्तब्धता मे कितना मोहक लगता है !

नैरिसा : श्रीमती ! यह तो नीरवता ही है जो सगीत का सम्मोहन इतना बढा रही है।

पोर्शिया : यदि हमने दोनो को नही सुना होता तो क्या श्यामा का संगीत हमे कौए की कर्कश आवाज की तुलना मे विशेष अच्छा

लगता ? यदि कोई मधुर स्वर का कोकिल दिन मे उस समय गाता जब कि बत्तख करकती आवाजें करती हैं, तब कौन उसे विशेष महत्त्व देता ? उपयुक्त समय और स्थान से ही बहुत-सी वस्तु प्रशंसा को प्राप्त होती है। कितना निस्तब्ध ! चंद्रदेवी अपने प्रेमी एन्डिमियन[1] के साथ सो रही है। कही जाग न जाये।

[संगीत रुकता है।]

लौरेन्ज़ो : यदि मै भूल नही कर रहा हूं तो वह स्वर अवश्य ही पोर्शिया का है।

पोर्शिया : वह मुझे ऐसे जानता है जैसे बुरे स्वर के कारण अंधा आदमी कुक्कू पक्षी को पहँचान लेता है।

लौरेन्ज़ो : श्रीमती, स्वागत है ! आइये घर पधारिये !

पोर्शिया : हम अपने पतियो के कुशल-मंगल की प्रार्थनाएँ करती घूम रही थी। उनके फलस्वरूप वे तो सकुशल आ पहुंचे होंगे न ?

लौरेन्ज़ो : श्रीमती ! अभी तो नही। किंतु कुछ पहले एक संवाद-वाहक आया था जिसने कहा था कि वे आने वाले है।

पोर्शिया : भीतर जाओ नैरिसा ! मेरे सेवको से कहो कि वे ऐसी कोई बात प्रगट न होने दें कि हम अभी तक यहां नही थीं। लौरेन्ज़ो ! जैसिका ! सुनते हो न ? कहना नहीं।

[तूर्य्य-नाद]

लौरेन्ज़ो : आपके पति निकट हैं। मैं तूर्य्य-नाद सुन रहा हूं। हम इधर-उधर की लगाने वाले नही है श्रीमती ! आप चिंता न करें।

पोर्शिया : रात कितनी उजेली है, ऐसा लगता है जैसे कोई धुंधला-सा दिन हो जब सूर्य्य मेघो मे छिप जाता है।

---

१ चन्द्रमा देवी है, अत. उसका एक प्रेमी भी है।

[बैसैनियो, ऐन्टोनियो, ग्रेशियानो और सेवकों का प्रवेश]

बैसैनियो : हमारे यहाँ तो दिन ही रात में भी रहे, जैसे संसार की दूसरी तरफ होगा, यदि तुम (पोर्शिया) सूर्य्य के स्थान पर चलती रहो।

पोर्शिया : मुझे प्रकाश देने दो, लेकिन हल्का [1] मत बनने दो, क्योंकि जो स्त्री तुच्छ होती है उसका पति सदैव व्यथित रहता है, उसका जीवन भारी हो जाता है। मै तुम्हें ऐसा नहीं होने दूँगी बैसैनियो ! परमात्मा सब घटनाओं से मुक्ति दे। मेरे स्वामी ! आपका अपने घर मे स्वागत है।

बैसैनियो : मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ श्रीमती। मेरे मित्र का स्वागत करो। यही ऐन्टोनियो है। इन्ही से मेरा इतना गहरा स्नेह है।

पोर्शिया : इनसे तो आपको सदैव ही स्नेह रखना चाहिये, क्योंकि, मैने सुना है इनका आप पर अगाध स्नेह है। आपके कारण ही तो इतने ऋणी ये रहे !

ऐन्टोनियो : कैसे भी रहे हो अब मै सबसे मुक्त हूँ।

पोर्शिया : स्वागत है श्रीमान् ! यह स्वागत केवल शाब्दिक नही होना चाहिये इसलिये इतना ही कहकर चुप रह जाती हूँ।

ग्रेशियानो : (नैरिसा से) इस प्रकाशमान चद्र की सौगंध है, तुम मुझे व्यर्थ ही दोष दे रही हो। मै तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैने वकील के क्लर्क को अंगूठी दी है, और किसी को नहीं। मै तो यही चाहता हूँ कि जिसे मैने अगूठी दी है वह मर ही जाये, क्यो कि तुम्हारे गुस्से का तो छोर ही नहीं !

पोर्शिया : क्यों शादी के बाद इतनी जल्दी झगड़ना शुरू कर दिया ? बात क्या है ?

---

१. शेक्सपियर ने Light का प्रयोग किया है, जिसके दोनों अर्थ हैं— प्रकाश, हल्का या तुच्छ।

ग्रेशियानो : झगड़ा तो उस मामूली सोने की अगूठी के पीछे है जो इसने मुझे दी थी। उसके भीतर की तरफ खुदा हुआ था, जैसे चाकू-वाकू पर खुदा होता है· 'मुझसे प्रेम करो और मुझसे वियोग मत करो।'

नैरिसा : तुम उस आलेख की वात क्यों करते हो ? तुम उस अगूठी की कीमत पर क्यों बोलते हो ? तुमने, जब मैंने अगूठी दी थी, वादा किया था कि तुम मृत्यु तक उसे पहने रहोगे। और वह तुम्हारे साथ कब्र मे रहेगी। मेरे लिये न सही, तुम्हारी प्रतिज्ञाओ के लिये ही सही, तुमने उसे निबाहा तो होता, इसी लिये रखे होते। एक वकील के क्लर्क को दे दी ! नही ! भगवान मेरा न्याय करे। तुमने जिस क्लर्क को वह अंगूठी दी है, उसके गालों पर कभी बाल नही उगेंगे न ?

ग्रेशियानो : वह पुरुष है, स्त्री नहीं। जब उम्र होगी तब दाढी भी उग आयेगी उसके।

नैरिसा : हाँ-हाँ, अगर औरत मर्द बन जायेगी तो उसके भी दाढ़ी उगेगी।

ग्रेशियानो : मै अपने इस हाथ की कसम खाकर कहता हूँ कि मैने अगूठी एक नौजवान को दी है। वह वैसे मरा-सा नाटा-सा लड़का था, बक-बक करता था, पीछे पड़ गया कि हमारी सेवा के बदले मे दे दीजिये और मै उससे इंकार नही कर सका।

पोशिया : (ग्रेशियानो से) मै स्पष्ट कह दूं कि आपने अपनी पत्नी की वस्तु इतनी शीघ्रता से दे कर अपराध ही किया है। उसने अंगूठी दी थी और आपने प्रतिज्ञा की थी कि सदैव अपने पास रखेंगे विश्वासपूर्वक। मैने भी अपने पति को एक अगूठी दी थी। उन्होने भी उसे सदैव अपने पास रखने की प्रतिज्ञा की थी। वे

यहीं हैं। मैं विश्वासपूर्वक कह सकती हूँ कि उसे कभी नही छोड़ सकते चाहे सारे संसार की संपत्ति भी उन्हें क्यों न दे दी जाये। सच ग्रेशियानो ! तुम्हारी पत्नी बिल्कुल उचित ही तुम्हारे इस कार्य्य का विरोध कर रही है। अगर ऐसा मेरे साथ होता तो मै तो पागल हो गई होती !

बैसैनियो : (स्वगत) जी करता है अपना बाँया हाथ काट डालूँ और इसे विश्वास दिलाऊँ कि एक चोर से अपनी अँगूठी की रक्षा करते समय यह कट गया।

ग्रेशियानो : श्रीमंत बैसैनियो ने भी अपनी अंगूठी वकील को दे दी। उसने इनसे माँगी थी और सचमुच उसकी सेवाएँ ऐसी थी कि वह उसके योग्य था। और वकील के क्लर्क, जिसने दस्तावेज़ की नकल की थी, ने मेरी अंगूठी माँग ली। वकील और उसका क्लर्क अंगूठियों के सिवाय कुछ और लेने को ही तैयार नहीं होते थे।

पोर्शिया : मेरे स्वामी ! आपने वकील को कौन-सी अंगूठी दे दी ? वह तो नही दी होगी जो मैंने आपको दी थी !

बैसैनियो : यदि झूँठ बोलने से अपराध छिप जाता तो मै बोल भी देता, लेकिन क्या करूँ उँगली तो खाली है। अंगूठी चली गई।

पोर्शिया : जैसे तुम्हारी उँगली बिना अंगूठी की है, वैसे ही तुम्हारा झूँठा हृदय भी सत्य से शून्य है। मैं तो तब तक तुम्हारी पत्नी नही होऊँगी जब तक अंगूठी नही देख लेती।

नैरिसा : सुनो ग्रेशियानो ! जब तक अंगूठी नही दिखाओगे तब तक मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूंगी।

बैसैनियो : प्रिये पोर्शिया ! यदि तुम जानतीं कि मैंने अंगूठी किसे दी है, यदि तुम यह जानतीं कि मैंने उसे किसके लिये दी है,

यदि यह भी सोच पाती कि मैंने वह अंगूठी क्यों दे दी है, कितनी अनिच्छा से उससे वियोग किया है; तब दी है जब वह और कुछ लेता ही न था, तब शायद तुम मुझ पर इतनी क्रुद्ध नहीं होती।

पोर्शिया : यदि तुम अंगूठी की शक्ति जानते होते, यदि तुम अपने कर्त्तव्यों से अवगत होते कि केवल उस अंगूठी से ही तुम अपना सम्मान जीवित रख सकते हो, तुमने वह इस तरह कभी नहीं दे दी होती। संसार में ऐसा कोई भी अनर्गल आदमी नहीं हो सकता कि वह उसे ही लेने पर अड़ जाये जिसे तुम इतना पवित्र कहते हो। यदि तुमने उससे अपने हृदय के आवेगों को प्रगट करके तर्क किया होता, अपनी अंगूठी अपने पास बनाये रखने की तीव्र इच्छा प्रगट की होती तो ऐसा न होता। मैं भी नैरिसा की भाँति यही सोचती हूँ कि तुमने वह अंगूठी किसी स्त्री को ही दी होगी। मैं तो इस बात पर अपनी जिंदगी की शर्त्त लगा सकती हूँ।

बैसैनियो : श्रीमती, सुनो ! मैं अपने आत्मसम्मान की शपथ खाता हूँ। किसी स्त्री ने नहीं, वकील ने ली है। उसने मुझसे ३००० ड्यूकैट लेने से इंकार कर दिया और अंगूठी माँगी। मैंने उससे इंकार कर दिया, और वह असंतुष्ट चला गया; वह चला गया जिसने मेरे इतने प्रिय मित्र के जीवन की रक्षा की थी। क्या कहूँ सुंदरी ! मुझे मजबूर किया गया कि मैं अंगूठी उसके पास भेज दूँ। मुझे दाक्षिण्य और लज्जा ने घेर लिये। मेरा आत्मसम्मान मुझे धिक्कार देने लगा कि मैं इतना अकृतज्ञ कैसे हो गया। क्षमा करो देवी ! रात्रि के इन टिमटिमाते अनंत के दीपकों[1] की शपथ ! यदि तुम वहाँ होती, तो स्वयं तुमने ही

---

१. तारे

उस योग्य वकील को उपहारस्वरूप देने को वह अंगूठी मुझसे माँग ली होती ।

पोर्शिया : उस वकील को मेरे घर से दूर रखिये । जिस रत्न को मैं इतना चाहती थी, वह उसे ही ले गया है । तुमने तो मेरे लिये उसे सदैव अपने पास रखने की प्रतिज्ञा की थी । मै भी तुम्हारी भांति उदार हो जाऊँगी । वह जो भी माँगे उसे वही दे दूँगी ।

नैरिसा : (ग्रेशियानो से) मै उसके क्लर्क से कुछ भी इकार नहीं करूँगी । इसलिये तुम्हें यही राय देती हूँ कि मेरी अच्छी निगरानी रखना ।

ऐन्टोनियो : यह सब झगड़े मुझ अभागे के कारण ही हैं ।

पोर्शिया : नही श्रीमान् ! आप खेद न करे । कुछ भी हो, आपका तो स्वागत है ।

बैसैनियो : पोर्शिया, विवशता के इस अपराध के लिये मुझे क्षमा करो । अपने इतने मित्रों के सामने मैं तुम्हारी सुदर आँखों की शपथ खाकर कहता हूँ, जहाँ मै अपनी ही छाया देखता हूँ, कि मैंने मजबूरी मे ऐसा किया ।

पोर्शिया : देखी आपने यह कसम ! अपनी छाया मेरी आँखों में देखते हैं । दो आँखे हैं, दो छाया हुईं । यों दो-दो जीभ[1] की कसम हो गई । उसका मूल्य ही क्या है ?

बैसैनियो : लेकिन सुनो तो ! इस अपराध को भूल जाओ, और सुनो मै प्रतिज्ञा करता हूँ, अपनी आत्मा की शपथ ग्रहण करता हूँ कि अब कभी कोई बात कह कर नहीं तोड़ूँगा ।

ऐन्टोनियो : एक बार मैंने अपना जीवन इसके सुख के लिये दाँव पर

---

१. दो जीभ—मूल्य-रहित बात । हिन्दी में कहते है—क्या साँप-सी दो जीभ की बात कहते हो ।

रखा था। जिसे बैसैनियो ने अंगूठी दी है, उस वकील ने ही सफलता से मेरी रक्षा की है। मै बैसैनियो के लिये अपनी आत्मा की जमानत देता हूँ कि यदि अब बैसैनियो अपनी वात नही रखेगा तो मै अपनी जान दे दूँगा।

पोर्शिया : तो आप जामिन हुए। तो इन्हें अगूठी दे दीजिये। यह लीजिये। और कह दीजिये कि इसकी ठीक से हिफाज़त करे।

ऐन्टोनियो : यह लो बैसैनियो ! इस अंगूठी की रक्षा करने की शपथ ग्रहण करो।

बैसैनियो : अरे ! यह तो वही है जो मैने उस वकील को दी थी !

पोर्शिया : क्षमा करो बैसैनियो ! मैने यह उसी से ली है।

नैरिसा : श्रीमान् ग्रेशियानो ! क्षमा करे ! मैने भी डॉक्टर के क्लर्क उसी नाटे लड़के से यह अगूठी पाई है।

पोर्शिया : तुम सब आश्चर्य्य में पड़ गये ? यह पत्र है, फ़ुर्सत मे पढ़ना। पदुआ से बैलारियो के पास से आया है। इसमे लिखा है कि वकील तो पोर्शिया थी और नैरिसा उसका क्लर्क बनी थी। लौरेन्ज़ो यही है और वह गवाह है कि तुम लोगो के जाते ही मै भी चली गई थी और अभी लौटी हूँ। अभी तो मै अपने घर मे भी नही घुसी हूँ। स्वागत है ऐन्टोनियो ! और जिसकी तुम आशा भी नहीं करते, मै तो तुम्हे ऐसी अच्छी ख़बर सुनाऊँगी ! यह पत्र शीघ्र मुहर तोड़कर खोलो। तब तुम्हे पता चलेगा कि अकस्मात् ही तुम्हारे बहुत माल से लदे तीन जहाज बंदरगाह पर आ गये हैं। पर यह नही बताऊँगी कि मुझे यह पत्र कैसे मिला।

ऐन्टोनियो : मै तो वैसे ही अवाक् हूँ।

बैसैनियो . तुम वकील बनी थी, मै तो तुम्हे पहचान भी नही पाया।

ग्रेशियानो : तुम क्लर्क थी।

ऐन्टोनियो : श्रीमती ! आपने मुझे जीवन ही नहीं दिया, वरन् जीविका भी दी है। क्योंकि इसमें स्पष्ट लिखा है कि मेरे जहाज बंदरगाह पर सुरक्षित पहुँच गये हैं।

पोर्शिया : लौरेन्जो ! कहो ! मेरे क्लर्क के पास तुम्हारे लिये भी कुछ बहुत अच्छी खबर है !

नैरिसा : और मैं तो इनसे फीस भी न लूँगी, यों ही बता देती हूं ! यह है, तुम और जैसिका, दोनों लो, शाइलॉक की विरासत का दस्तावेज़ कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी सारी सम्पत्ति लौरेन्जो की हो जायेगी।

लौरेन्ज़ो : सुंदर देवियो ! तुम तो बुभुक्षित जनों के लिये स्वर्ग का भोजन भेजती हो।[1]

पोर्शिया : अरे सुबह हो गई। लेकिन इतनी घटनाएँ हुई हैं कि इनसे क्या निबटना इतना सहज है ? चलो भीतर चलें और वहाँ मुझसे चाहे जितने सवाल पूछ लेना, सबका ठीक-ठीक जवाब दूँगी।

ग्रेशियानो : चलिये ! यही ठीक है। मैं तो जब तक ज़िंदा रहूँगा, मुझे तो किसी भी चीज का इतना डर नही लगेगा जितना नैरिसा की अंगूठी खो जाने का।

[प्रस्थान]

---

१. इज़राइली लोगो को स्वर्ग से देवदूतो ने लाकर भोजन खिलाया था, जब वे लोग अरब के निर्जनमरु में फँस गये थे। यह एक 'पुरानी इंजील' की कहानी है।